विक्षनरी:संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश/वी-शस्य

< विक्षनरी:संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश

मूलशब्द—व्याकरण—संधिरहित मूलशब्द—व्युत्पत्ति—हिन्दी अर्थ

- **वी**—अदा° पर°< वेति>—-—-—जाना, हिलना-जुलना
- **वी**—अदा° पर°< वेति>—-—-—पहुँचना
- **वी**—अदा° पर°< वेति>—-—-—व्याप्त होना
- **वी**—अदा° पर°< वेति>—-—-—लाना, पहुँचाना
- **वी**—अदा° पर°< वेति>—-—-—फेंक देना, डालना
- **वी**—अदा° पर°< वेति>—-—-—खाना, उपभोग करना
- **वी**—अदा° पर°< वेति>—-—-—प्राप्त करना
- **वी**—अदा° पर°< वेति>—-—-—गर्भधारण करना, उत्पन्न करना
- **वी**—अदा° पर°< वेति>—-—-—पैदा होना, जन्म लेना
- **वी**—अदा° पर°< वेति>—-—-—चमकना, सुन्दर होना
- **वीकः**—पुं°—-—अज् + कन्, वी आदेशः—वायु
- **वीकः**—पुं°—-—-—पक्षी
- **वीकः**—पुं°—-—-—मन
- **वीकाशः**—पुं°—-—-—प्रकटीकरण, प्रदर्शन, दिखलावा
- **वीकाशः**—पुं°—-—-—खिलना, फूलना
- **वीकाशः**—पुं°—-—-—खुला सीधा मार्ग
- **वीकाशः**—पुं°—-—-—टेढ़ा मार्ग
- **वीकाशः**—पुं°—-—-—हर्ष, आनन्द
- **वीकाशः**—पुं°—-—-—उत्सुकता, प्रबल उत्कंठा
- **वीकाशः**—पुं°—-—-—एकान्तवास, एकाकीपन, सूनापन
- **वीक्षम्**—नपुं°—-—वि + ईक्ष् + अच्—दृश्य पदार्थ
- **वीक्षम्**—नपुं°—-—-—अचम्भा, आश्चर्य

- **वीक्षः**—पुं°—————देखना, ताकना
- **वीक्षा**—स्त्री°—————देखना, ताकना
- **वीक्षणम्**—नपुं°—-—वि + ईक्ष् + ल्युट्—देखना, निहारना, दृष्टि डालना
- **वीक्षणा**—स्त्री°—————देखना, निहारना, दृष्टि डालना
- **वीक्षितम्**—नपुं°—-—वि + ईक्ष् + क्त—दृष्टि, झलक
- **वीक्ष्य**—वि°—-—वि + ईक्ष् + ण्यत्—देखे जाने के योग्य
- **वीक्ष्य**—वि°—————दृश्य, दृष्टिगोचर
- **वीक्ष्यः**—पुं°—————नर्तक, नट, अभिनेता, पात्र
- **वीक्ष्यः**—पुं°—————घोड़ा
- **वीक्ष्यम्**—नपुं°—————देखे जाने के योग्य कोई भी वस्तु, दृश्यमान पदार्थ
- **वीक्ष्यम्**—नपुं°—————आश्चर्य, अचंभा
- **वीङ्खा**—स्त्री°—-—वि + इङ्ख् + अ + टाप्—जाना, हिलना-जुलना, प्रगति
- **वीङ्खा**—स्त्री°—————घोड़े का कदम
- **वीङ्खा**—स्त्री°—————नाच
- **वीङ्खा**—स्त्री°—————संगम, मिलन
- **वीचिः**—पुं°,स्त्री°—-—वे + इचि, डिच्च—लहर
- **वीचिः**—पुं°,स्त्री°—————असंगति, विचारशून्यता
- **वीचिः**—पुं°,स्त्री°—————आनन्द, प्रसन्नता
- **वीचिः**—पुं°,स्त्री°—————विश्राम, अवकाश
- **वीचिः**—पुं°,स्त्री°—————प्रकाश की किरण
- **वीचिः**—पुं°,स्त्री°—————स्वल्पता
- **वीची**—स्त्री°—————लहर
- **वीची**—स्त्री°—————असंगति, विचारशून्यता
- **वीची**—स्त्री°—————आनन्द, प्रसन्नता
- **वीची**—स्त्री°—————विश्राम, अवकाश
- **वीची**—स्त्री°—————प्रकाश की किरण
- **वीची**—स्त्री°—————स्वल्पता

- **वीचिमालिन्**—पुं°—वीचिः-मालिन्—-—समुद्र
- **वीज्**—भ्वा° आ° <वीजते>—-—-—-—जाना
- **वीज्**—चुरा° उभ° <वीजयति>,<वीजयते>—-—-—-—पंखा करना, पंखा करके ठंडा करना
- **अभिवीज्**—चुरा° उभ°—अभि-वीज्—-—पंखा करना
- **उपवीज्**—चुरा° उभ°—उप-वीज्—-—पंखा करना
- **परिवीज्**—चुरा° उभ°—परि-वीज्—-—पंखा करना
- **वीजम्**—नपुं°—-—वि + जन् + ड उपसर्गस्य दीर्घः बवयोरभेदः—बीज, बीज का दाना, अनाज
- **वीजम्**—नपुं°—-—वि + जन् + ड उपसर्गस्य दीर्घः बवयोरभेदः—जीवाणु, तत्त्व
- **वीजम्**—नपुं°—-—वि + जन् + ड उपसर्गस्य दीर्घः बवयोरभेदः—मूल, स्रोत, कारण
- **वीजम्**—नपुं°—-—वि + जन् + ड उपसर्गस्य दीर्घः बवयोरभेदः—वीर्य, शुक्र
- **वीजम्**—नपुं°—-—वि + जन् + ड उपसर्गस्य दीर्घः बवयोरभेदः—किसी नाटक की कथावस्तु का बीज, कहानी आदि
- **वीजम्**—नपुं°—-—वि + जन् + ड उपसर्गस्य दीर्घः बवयोरभेदः—गूदा
- **वीजम्**—नपुं°—-—वि + जन् + ड उपसर्गस्य दीर्घः बवयोरभेदः—बीजगणित
- **वीजम्**—नपुं°—-—वि + जन् + ड उपसर्गस्य दीर्घः बवयोरभेदः—बीजमंत्र
- **वीजः**—पुं°—-—-—-—नींबू का पेड़
- **वीजकः**—पुं°—-—वीज + कन्—सामान्य नींबू
- **वीजकः**—पुं°—-—वीज + कन्—नींबू या चकोतरा
- **वीजकः**—पुं°—-—वीज + कन्—जन्म के समय बच्चे को भुजाओं की स्थिति
- **वीजकम्**—नपुं°—-—-—-—बीज
- **वीजल**—वि°—-—वीज + लच्—बीजों से युक्त, बीजों वाला
- **वीजिक**—वि°—-—बीज + ठन्—बीजों से भरा हुआ, जिसमें बहुत बीज हों
- **वीजिन्**—वि°—-—बीज + इनि—बीजों से युक्त, बीज रखने वाला
- **वीजिन्**—पुं°—-—-—-—वास्तविक पिता या प्रजनक (बीज का बोने वाला)
- **वीजिन्**—पुं°—-—-—-—पिता
- **वीजिन्**—पुं°—-—-—-—सूर्य
- **वीज्य**—वि°—-—वीज + यत्—बीज से उत्पन्न
- **वीज्य**—वि°—-—वीज + यत्—सम्मानित कुल का , सत्कुलोद्भव

- **वीजनः**—पुं°—-—वीज् + ल्युट्—चक्रवाक
- **वीजनः**—पुं°—-—-—एक प्रकार का चकोर
- **वीजनम्**—नपुं°—-—-—पंखा करना
- **वीजनम्**—नपुं°—-—-—पंखा
- **वीटा**—स्त्री°—-—वि + इट् + क + टाप्—लकड़ी का एक छोटा टुकड़ा, गुल्ली (लगभग एक बालिश्त) जिसको लड़के डंडा मार कर खेलते हैं, गुल्ली डंडा
- **वीटिः**—स्त्री°—-—वि + इट् + इन्, स च कित्—पान की बेल
- **वीटिः**—स्त्री°—-—-—पान लगाना
- **वीटिः**—स्त्री°—-—-—बंधन, गाँठ, ग्रंथि (पहने जाने बाले वस्त्र की)
- **वीटिः**—स्त्री°—-—-—चोली की तनी
- **वीटिका**—स्त्री°—-—वीटि + कन् + टाप्—पान की बेल
- **वीटिका**—स्त्री°—-—-—पान लगाना
- **वीटिका**—स्त्री°—-—-—बंधन, गाँठ, ग्रंथि (पहने जाने बाले वस्त्र की)
- **वीटिका**—स्त्री°—-—-—चोली की तनी
- **वीटी**—स्त्री°—-—वीटि + ङीष् —पान की बेल
- **वीटी**—स्त्री°—-—-—पान लगाना
- **वीटी**—स्त्री°—-—-—बंधन, गाँठ, ग्रंथि (पहने जाने बाले वस्त्र की)
- **वीटी**—स्त्री°—-—-—चोली की तनी
- **वीणा**—स्त्री°—-—वेति वृद्धिमात्रमपगच्छति-वी + न, नि° णत्वम्—सारंगी, बीणा
- **वीणा**—स्त्री°—-—-—बिजली
- **वीणास्यः**—पुं°—वीणा-आस्यः—-—नारद का विशेषण
- **वीणादण्डः**—पुं°—वीणा-दण्डः—-—वीणा की गर्दन
- **वीणावादः**—पुं°—वीणा-वादः—-—वीणा बजाने वाला
- **वीणावादकः**—पुं°—वीणा-वादकः—-—वीणा बजाने वाला
- **वीत**—भू° क° कृ°—-—वि + इ + क्त—गया हुआ, अंतर्हित
- **वीत**—भू° क° कृ°—-—-—जो चला गया, बिदा हो गया
- **वीत**—भू° क° कृ°—-—-—जिसको जाने दिया गया, ढीला उन्मुक्त
- **वीत**—भू° क° कृ°—-—-—अलगाया हुआ, विमुक्त किया हुआ

- **वीत**—भू॰ क॰ कृ॰—-—-—अनुमोदित, पसंद किया गया
- **वीत**—भू॰ क॰ कृ॰—-—-—युद्ध के अयोग्य
- **वीत**—भू॰ क॰ कृ॰—-—-—पालतू, शान्त
- **वीत**—भू॰ क॰ कृ॰—-—-—मुक्त, शून्य
- **वीतः**—पुं॰—-—-—हाथी या घोड़ा जो युद्ध के अयोग्य हो या सधाया न गया हो
- **वीतम्**—नपुं॰—-—-—(हाथी को) अंकुश से गोदना तथा पैरों से प्रहार करना
- **वीतदम्भ**—वि॰—वीत-दम्भ—-—विनम्र, विनीत
- **वीतभय**—वि॰—वीत-भय—-—निर्भय, निडर
- **वीतयः**—पुं॰—वीत-यः—-—विष्णु का विशेषण
- **वीतमल**—वि॰—वीत-मल—-—पवित्र, निर्मल
- **वीतराग**—वि॰—वीत-राग—-—इच्छारहित
- **वीतराग**—वि॰—वीत-राग—-—निरावेश, सौम्य, शान्त
- **वीतराग**—वि॰—वीत-राग—-—विवर्ण, बिना रंग का
- **वीतगः**—पुं॰—वीत-गः—-—एक ऋषि जिसनें अपने रागों का दमन कर लिया था
- **वीतशोकः**—पुं॰—वीत-शोकः—-—अशोक वृक्ष
- **वीतंसः**—पुं॰—-—विशेषण बहिरेव तस्यते भूष्यते-वि + तंस् + घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः—पींजरा या जाल जिसमें पक्षी या अन्य वन्य पशु फंसाये जाते हैं
- **वीतंसः**—पुं॰—-—-—चिड़ियाघर, शिकार के पशुओं को पालने का स्थान
- **वीतनौ**—पुं॰—-—विशिष्टं तनोति-वि + तन् + अच्, पृषो॰ दीर्घः—गले के अगल बगल के पार्श्व
- **वीतिः**—पुं॰—-—वी + क्तिन्—घोड़ा
- **वीतिः**—स्त्री॰—-—-—गति, चाल
- **वीतिः**—स्त्री॰—-—-—पैदावार, उपज
- **वीतिः**—स्त्री॰—-—-—सुखोपभोग
- **वीतिः**—स्त्री॰—-—-—भोजन करना
- **वीतिः**—स्त्री॰—-—-—प्रकाश, कान्ति
- **वीतिहोत्रः**—पुं॰—वीतिः-होत्रः—-—अग्नि
- **वीतिहोत्रः**—पुं॰—वीतिः-होत्रः—-—सूर्य
- **वीथिः**—स्त्री॰—-—विथ + इन्—सड़क, मार्ग

- **वीथिः**—स्त्री°————पंक्ति, कतार
- **वीथिः**—स्त्री°————हाट, आपणिका, मंडी में दुकान
- **वीथिः**—स्त्री°————नाटक का एक भेद
- **वीथी**—स्त्री°———विथ + ङीप्, पृषो°—सड़क, मार्ग
- **वीथी**—स्त्री°————पंक्ति, कतार
- **वीथी**—स्त्री°————हाट, आपणिका, मंडी में दुकान
- **वीथी**—स्त्री°————नाटक का एक भेद
- **वीथिका**—स्त्री°———वीथि + कन् + टाप्—सड़क आदि
- **वीथिका**—स्त्री°————चित्रशाला, चित्रसारी (जिस पर चित्र चित्रित किये जाते हैं) चित्रागार, चित्रावली
- **वीध्र**—वि°———विशेषण इन्धते- वि + इन्ध् + क्रन्, उपसर्गस्य दीर्घः—निर्मल, स्वच्छ
- **वीध्रम्**—नपुं°————आकाश
- **वीध्रम्**—नपुं°————वायु, हवा
- **वीध्रम्**—नपुं°————अग्नि
- **वीनाहः**—पुं°———वि + नह् + घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः—कुएँ का ढक्कन या मणि
- **वीपा**—स्त्री° ————विद्युत्, बिजली
- **वीप्सा**—स्त्री°———वि + आप् + सन् + अ + टाप्, ईत्वम्—परिव्याप्ति
- **वीप्सा**—स्त्री°————(नैरंतर्य प्रकट करने के लिए) शब्द द्विरुक्ति
- **वीप्सा**—स्त्री°————सामान्य पुनरुक्ति
- **वीभ्**—भ्वा° आ° <वीभते>————शेखी मारना, डींग मारना
- **वीर**—वि°———अजेः रक् वीभावश्च—शूर, वीर
- **वीर**—वि°————ताकतवर, शक्तिशाली
- **वीरः**—पुं°————शूरवीर, योद्धा, प्रजेता
- **वीरः**—पुं°————वीरभावना, वीररस, इसके चार भेद (दानवीर, धर्मवीर, दयावीर और युद्धवीर) किये गये हैं
- **वीरः**—पुं°————अभिनेता
- **वीरः**—पुं°————आग
- **वीरः**—पुं°————यज्ञ की अग्नि
- **वीरः**—पुं°————पुत्र

- **वीरः**—पुं॰—————पति
- **वीरः**—पुं॰—————अर्जुन वृक्ष
- **वीरः**—पुं॰—————विष्णु का नाम
- **वीरम्**—नपुं॰—————नरकुल
- **वीरम्**—नपुं॰—————मिर्च
- **वीरम्**—नपुं॰—————चावल का माड़
- **वीरम्**—नपुं॰—————उशीर का जड़, खस
- **वीराशंसनम्**—नपुं॰—वीर-आशंसनम्———निगरानी रखना
- **वीराशंसनम्**—नपुं॰—वीर-आशंसनम्———युद्ध में जोखिम से भरा पद
- **वीराशंसनम्**—नपुं॰—वीर-आशंसनम्———छोड़ी हुई आशा
- **वीरासनम्**—नपुं॰—वीर-आसनम्———योगाभ्यास करते समय एक विशेष मुद्रा
- **वीरासनम्**—नपुं॰—वीर-आसनम्———एक घुटना मोड़ कर बैठना
- **वीरासनम्**—नपुं॰—वीर-आसनम्———संतरी की चौकी
- **वीरीशः**—पुं॰—वीर-ईशः———शिव के विशेषण
- **वीरीशः**—पुं॰—वीर-ईशः———महान् वीर
- **वीरेश्वरः**—पुं॰—वीर-ईश्वरः———शिव के विशेषण
- **वीरेश्वरः**—पुं॰—वीर-ईश्वरः———महान् वीर
- **वीरुज्झः**—पुं॰—वीर-उज्झः———वह ब्राह्मण जो यज्ञाग्नि में आहुति नहीं डालता, अग्निहोत्र न करने वाला ब्राह्मण
- **वीरकीटः**—पुं॰—वीर-कीटः———तुच्छ सैनिक
- **वीरजयन्तिका**—स्त्री॰—वीर-जयन्तिका———रणनृत्य
- **वीरजयन्तिका**—स्त्री॰—वीर-जयन्तिका———संग्राम, युद्ध
- **वीरतरुः**—पुं॰—वीर-तरुः———अर्जुन वृक्ष
- **वीरधन्वन्**—पुं॰—वीर-धन्वन्———कामदेव
- **वीरपानम्**—नपुं॰—वीर-पानम्———एक उत्तेजक या श्रमापहारक तेज जो सैनिक लोग युद्ध के आरम्भ या अवसान पर पीते हैं
- **वीरपाणम्**—नपुं॰—वीर-पाणम्———एक उत्तेजक या श्रमापहारक तेज जो सैनिक लोग युद्ध के आरम्भ या अवसान पर पीते हैं
- **वीरभद्रः**—पुं॰—वीर-भद्रः———एक शक्तिशाली शूरवीर जिसे शिव ने अपनी जटाओं से निकाला था
- **वीरभद्रः**—पुं॰—वीर-भद्रः———माना हुआ योद्धा

- **वीरभद्रः**—पुं॰—वीर-भद्रः—-—अश्वमेध यज्ञ के उपयुक्त घोड़ा
- **वीरभद्रः**—पुं॰—वीर-भद्रः—-—एक प्रकार का सुगन्धित घास
- **वीरमुद्रिका**—स्त्री॰—वीर-मुद्रिका—-—पैर की मध्यमा अंगुली में पहना जाने वाला छल्ला
- **वीररजस्**—नपुं॰—वीर-रजस्—-—सिन्दूर
- **वीररस**—वि॰—वीर-रस—-—वीरता का भाव
- **वीररस**—वि॰—वीर-रस—-—सामरिक भावना
- **वीररेणुः**—पुं॰—वीर-रेणुः—-—भीमसेन का नाम
- **वीरविप्लावकः**—पुं॰—वीर-विप्लावकः—-—शूद्र से धन लेकर हवन करने वाला
- **वीरवृक्षः**—पुं॰—वीर-वृक्षः—-—अर्जुन वृक्ष
- **वीरवृक्षः**—पुं॰—वीर-वृक्षः—-—भिलावें का वृक्ष
- **वीरसूः**—स्त्री॰ —वीर-सूः—-—शूरवीर पुरुष की माता
- **वीरप्रसवा**—स्त्री॰ —वीर-प्रसवा—-—शूरवीर पुरुष की माता
- **वीरप्रसूः**—स्त्री॰ —वीर-प्रसूः—-—शूरवीर पुरुष की माता
- **वीर-प्रसविनी**—स्त्री॰ —वीर-प्रसविनी—-—शूरवीर पुरुष की माता
- **वीरसैन्यम्**—नपुं॰—वीर-सैन्यम्—-—लहसुन
- **वीरस्कन्धः**—पुं॰—वीर-स्कन्धः—-—भैंसा
- **वीरहन्**—पुं॰—वीर-हन्—-—वह ब्राह्मण जिसने दैनिक अग्निहोत्र करना छोड़ दिया है
- **वीरहन्**—पुं॰—वीर-हन्—-—विष्णु
- **वीरणम्**—नपुं॰—-—वि + ईर् + ल्युट्—एक सुगन्धित घास, उशीर
- **वीरणी**—स्त्री॰ —-—वीरण + ङीष्—तिरछी चितवन, कटाक्ष
- **वीरणी**—स्त्री॰ —-—-—गहरा स्थान
- **वीरतरः**—पुं॰—-—वीर + तरप्—महान् वीर
- **वीरतरः**—पुं॰—-—-—बाण
- **वीरतरम्**—नपुं॰—-—-—एक प्रकार का सुगन्धित घास, उशीर
- **वीरन्धरः**—पुं॰—-—वीर + धृ + खच्, मुम्—मोर
- **वीरन्धरः**—पुं॰—-—-—वन्य पशुओं के साथ लड़ाई
- **वीरन्धरः**—पुं॰—-—-—चमड़े की जाकेट

- **वीरवत्**—वि०—-—वीर + मतुप्—शूरवीरों से भरा हुआ
- **वीरवती**—स्त्री० —-—-—वह स्त्री जिसका पति और पुत्र जीवित हों
- **वीरा**—स्त्री० —-—वीर + टाप्—शूरवीर पुरुष की स्त्री
- **वीरा**—स्त्री० —-—-—पत्नी
- **वीरा**—स्त्री० —-—-—माता, गृहिणी
- **वीरा**—स्त्री० —-—-—मुरा नामक एक गन्धद्रव्य
- **वीरा**—स्त्री० —-—-—शराब
- **वीरा**—स्त्री० —-—-—अगर की लकड़ी
- **वीरा**—स्त्री० —-—-—केले का पेड़
- **वीरिणम्**—नपुं०—-—-—मरुस्थल, बंजर
- **वीरिणम्**—नपुं०—-—-—ऊसर, बंजर भूमि
- **वीरुध्**—पुं०—-—विशेषेण रुणद्धि अन्यान् वृक्षान्-वि + रुध् + क्विप् पक्षे टाप्, उपसर्गस्य दीर्घः—लहलहाने वाली लता
- **वीरुध्**—पुं०—-—-—शाखा, अङ्कुर
- **वीरुध्**—पुं०—-—-—काटने पर ही बढ़ने वाला पौधा
- **वीरुध्**—पुं०—-—-—बेल, लता, झाड़ी
- **वीर्यम्**—नपुं०—-—वीर् + यत्—शूरवीरता, पराक्रम, बहादुरी
- **वीर्यम्**—नपुं०—-—-—बल, सामर्थ्य
- **वीर्यम्**—नपुं०—-—-—पुंस्त्व
- **वीर्यम्**—नपुं०—-—-—ऊर्जा, दृढ़ता, साहस
- **वीर्यम्**—नपुं०—-—-—शक्ति, क्षमता
- **वीर्यम्**—नपुं०—-—-—(औषधियों की) अचूकता, अतिवीर्यवतीव भेषजे बहुरल्पीयसि दृश्यते गुणः @ कि० २/२४, @ कु० २/४८
- **वीर्यम्**—नपुं०—-—-—शुक्र, वीर्य
- **वीर्यम्**—नपुं०—-—-—आभा, कान्ति
- **वीर्यम्**—नपुं०—-—-—गौरव, महिमा
- **वीर्यजः**—पुं०—वीर्यम्-जः—-—पुत्र
- **वीर्यप्रपातः**—पुं०—वीर्यम्-प्रपातः—-—वीर्य का क्षरण या स्खलन
- **वीर्यवत्**—वि०—-—वीर्य + मतुप्—मजबूत, हृष्टपुष्ट, बलवान्

- **वीर्यवत्**—वि०————अचूक, अमोघ
- **वीवधः**—पुं०——वि + वध् + घञ्, वृद्ध्यभावो दीर्घश्च—बोझा ढोने के लिए जूआ, बहंगी
- **वीवधः**—पुं०————बोझा
- **वीवधः**—पुं०————अनाज का भंडार भरना
- **वीवधः**—पुं०————मार्ग, सड़क
- **वीवधिकः**—पुं०——वीवध + ठन्—बहंगी ढोने वाला
- **वीहारः**—पुं०——वि + हृ + घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः—जैन विहार या बौद्धमठ
- **वीहारः**—पुं०————देवालय
- **वुङ्ग्**—भ्वा० पर० <वुङ्गति>————छोड़ना, परित्याग करना
- **वुण्ट्**—चुरा० उभ० <वुण्टयति>, <वुण्टयते>————चोट पहुँचाना वध करना
- **वुण्ट्**—चुरा० उभ० <वुण्टयति>, <वुण्टयते>————नष्ट करना
- **वुवूर्षु**—वि०——वृ + सन् + उ—पसन्द करने का इच्छुक
- **वुस्**—दिवा०पर०————छोड़ना, उगलना, उडलना
- **वूर्ण**—वि०——वृ + क्त—छांटा हुआ, चुना हुआ
- **वृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० <वरति>, <वरते>, <वृणोति>, <वृणुते>, <वृणाति>, <वृणीते>, <वृत>, कर्मवा० <व्रियते>————छांटना, चुनना, पसन्द करना
- **वृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० <वरति>, <वरते>, <वृणोति>, <वृणुते>, <वृणाति>, <वृणीते>, <वृत>, कर्मवा० <व्रियते>————अपने लिए चुनना
- **वृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० <वरति>, <वरते>, <वृणोति>, <वृणुते>, <वृणाति>, <वृणीते>, <वृत>, कर्मवा० <व्रियते>————विवाह के लिए वरण करना, प्रणय-प्रार्थना करना, प्रणययाचना करना
- **वृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० <वरति>, <वरते>, <वृणोति>, <वृणुते>, <वृणाति>, <वृणीते>, <वृत>, कर्मवा० <व्रियते>————प्रार्थना करना, निवेदन करना, याचना करना
- **वृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० <वरति>, <वरते>, <वृणोति>, <वृणुते>, <वृणाति>, <वृणीते>, <वृत>, कर्मवा० <व्रियते>————ढकना, छिपाना गुप्त रखना, परदा डालना, लपेटना
- **वृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० <वरति>, <वरते>, <वृणोति>, <वृणुते>, <वृणाति>, <वृणीते>, <वृत>, कर्मवा० <व्रियते>————घेरना, लपेटना
- **वृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० <वरति>, <वरते>, <वृणोति>, <वृणुते>, <वृणाति>, <वृणीते>, <वृत>, कर्मवा० <व्रियते>————परे हटना, दूर करना, नियंत्रण करना, रोकना
- **वृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० <वरति>, <वरते>, <वृणोति>, <वृणुते>, <वृणाति>, <वृणीते>, <वृत>, कर्मवा० <व्रियते>————विघ्न डालनाम् विरोध करना, अड़चन डालना
- **वृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ०, प्रेर० <वारयति>, <वारयते>————ढकना, छिपाना

- **वृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ०, प्रेर० <वारयति>, <वारयते>————(किसी वस्तु से) आँख फेर लेना
- **वृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ०, प्रेर० <वारयति>, <वारयते>————रोकना, हटाना, नियंत्रण करना, दबाना, जांच पड़ताल करना, विघ्न डालना
- **वृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ०, इच्छा० <वुवूर्षति>, <वुवूर्षते>, <विविरिषति>, <विविरिषते>, <विवरिषति>, <विवरिषते>————चुनने की इच्छा करना
- **अपवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —अप-वृ———खोलना
- **अपवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ०, प्रेर० —अप-वृ———ढकना, छिपाना
- **अपावृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —अपा-वृ———खोलना
- **आवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —आ-वृ———ढकना, छिपाना, गुप्त रखना
- **आवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —आ-वृ———चुनना, इच्छा करना
- **आवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —आ-वृ———निवेदन करना, प्रार्थना करना
- **आवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —आ-वृ———घेरना, नाके बंदी करना, रोकना
- **आवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —आ-वृ———दूर रखना
- **निवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —नि-वृ———घेरा डालना, घेरना
- **निवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ०, प्रेर० —नि-वृ———परे हटना, दूर करना, आँखें फेरना
- **निर्वृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —निस्-वृ———(बहुधा क्तांत रूप) प्रसन्न होना, संतुष्ट या संतृप्त होना
- **परिवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —परि-वृ———घेरना
- **प्रवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —प्र-वृ———ढाकना, लपेटना
- **प्रवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —प्र-वृ———पहनना, धारण करना
- **प्रवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —प्र-वृ———चुनना, छाटना
- **प्रावृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —प्रा-वृ———पहनना, धारण करना
- **विवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —वि-वृ———ढक देना, ठहरना
- **विवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —वि-वृ———खोलना
- **विवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —वि-वृ———तह खोलना, भंडाफोड़ करना, भेद खोलना, प्रकट करना, प्रदर्शन
- **विवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —वि-वृ———सिखाना, व्याख्या करना, स्पष्ट करना
- **विवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —वि-वृ———फैलाना
- **विवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ० —वि-वृ———चुनना
- **विनिवृ**—भ्वा०, स्वा० , क्र्या० उभ०, प्रेर० —विनि-वृ———रोकना, दूर हटाना, दबाना

- **संवृ**—भ्वा°, स्वा° , क्र्या° उभ° —सम्-वृ—-—छिपाना, ढकना, प्रच्छन्न करना
- **संवृ**—भ्वा°, स्वा° , क्र्या° उभ° —सम्-वृ—-—दबाना, नियंत्रित करना, विरोध करना
- **संवृ**—भ्वा°, स्वा° , क्र्या° उभ° —सम्-वृ—-—बन्द करना
- **वृ**—चुरा° उभ° <वरयति>, <वरयते>—-—-—वरण करना, चुनना
- **वृ**—चुरा° उभ° <वरयति>, <वरयते>—-—-—विवाह के लिए पसंद करना
- **वृ**—चुरा° उभ° <वरयति>, <वरयते>—-—-—याचन करना, प्रार्थना करना, निवेदन करना
- **वृंह्**—भ्वा°तुदा°पर°—-—-—बढ़ना, उगना
- **वृंह्**—भ्वा°तुदा°पर°—-—-—दहाड़ना
- **वृंह्**—भ्वा°तुदा°पर°—-—-—पालन-पोषण करना
- **वृंहित**—भू° क° कृ°—-—बृंह् + क्त—उगा हुआ, बढ़ा हुआ
- **वृंहित**—भू° क° कृ°—-—बृंह् + क्त—चिंघाड़ा हुआ
- **वृंहितम्**—नपुं°—-—-—हाथी की चिंघाड़
- **वृक्**—भ्वा° आ° <वर्कते>—-—-—पकड़ना, लेना, ग्रहण करना
- **वृकः**—पुं°—-—वृ + कक् —भेड़िया
- **वृकः**—पुं°—-—-—लकड़बग्धा
- **वृकः**—पुं°—-—-—गीदड़
- **वृकः**—पुं°—-—-—कौवा
- **वृकः**—पुं°—-—-—उल्लू
- **वृकः**—पुं°—-—-—लुटेरा
- **वृकः**—पुं°—-—-—क्षत्रिय
- **वृकः**—पुं°—-—-—तारपीन
- **वृकः**—पुं°—-—-—गन्धद्रव्यों का मिश्रण
- **वृकः**—पुं°—-—-—एक राक्षस का नाम
- **वृकः**—पुं°—-—-—एक वृक्ष का नाम, बकवृक्ष
- **वृकः**—पुं°—-—-—जठराग्नि
- **वृकारातिः**—पुं°—वृकः-अरातिः—-—कुत्ता
- **वृकारिः**—पुं°—वृकः-अरिः—-—कुत्ता

- **वृकोदरः**—पुं०—वृकः-उदरः—-—ब्रह्मा का विशेषण
- **वृकोदरः**—पुं०—वृकः-उदरः—-—द्वितीय पांडव राजकुमार भीम का विशेषण
- **वृकदंशः**—पुं०—वृकः-दंशः—-—कुत्ता
- **वृकधूपः**—पुं०—वृकः-धूपः—-—तारपीन
- **वृकधूपः**—पुं०—वृकः-धूपः—-—मिश्रगंध
- **वृकधूर्तः**—पुं०—वृकः-धूर्तः—-—गीदड़
- **वृक्कः** —पुं०—-—-—हृदय
- **वृक्कः** —द्वि० व० —-—-—गुर्दा
- **वृक्का**—स्त्री०—-—-—हृदय
- **वृक्का**—द्वि० व० —-—-—गुर्दा
- **वृक्ण**—भू० क० कृ०—-—व्रश्च् + क्त—कटा हुआ, बांटा हुआ
- **वृक्ण**—भू० क० कृ०—-—-—फाड़ा हुआ
- **वृक्ण**—भू० क० कृ०—-—-—तोड़ा हुआ
- **वृक्त**—भू० क० कृ०—-—वृज् + क्त—स्वच्छ किया गया, साफ़ किया गया, निर्मल किया गया
- **वृक्ष्**—भ्वा० आ० <वृक्षते>—-—-—स्वीकार करना, चुनना
- **वृक्ष्**—भ्वा० आ० <वृक्षते>—-—-—ढकना
- **वृक्षः**—पुं०—-—व्रश्च् + क्स्—पेड़
- **वृक्षादनः**—पुं०—वृक्षः-अदनः—-—बढ़ई की चौरसी
- **वृक्षादनः**—पुं०—वृक्षः-अदनः—-—कुल्हाड़ी
- **वृक्षादनः**—पुं०—वृक्षः-अदनः—-—बड़ का पेड़
- **वृक्षादनः**—पुं०—वृक्षः-अदनः—-—पियाल वृक्ष
- **वृक्षाम्लः**—पुं०—वृक्षः-अम्लः—-—आमड़ा
- **वृक्षालयः**—पुं०—वृक्षः-आलयः—-—एक पक्षी
- **वृक्षावासः**—पुं०—वृक्षः-आवासः—-—एक पक्षी
- **वृक्षावासः**—पुं०—वृक्षः-आवासः—-—संन्यासी
- **वृक्षाश्रयिन्**—पुं०—वृक्षः-आश्रयिन्—-—एक प्रकार का छोटा उल्लू
- **वृक्षकुक्कटः**—पुं०—वृक्षः-कुक्कुटः—-—जंगली मुर्गा

- **वृक्षखंड**—पुं°—वृक्षः-खंड—-—निकुंज, वृक्षों का समूह
- **वृक्षचरः**—पुं°—वृक्षः-चरः—-—बन्दर
- **वृक्षछाया**—स्त्री°—वृक्षः-छाया—-—वृक्ष की छाया
- **वृक्षछायम्**—नपुं°—वृक्षः-छायम्—-—सघन छाया, बहुत से वृक्षों की (गाढ़ी) छाया
- **वृक्षधूपः**—पुं°—वृक्षः-धूपः—-—तारपीन
- **वृक्षनाथः**—पुं°—वृक्षः-नाथः—-—बड़ का पेड़
- **वृक्षनिर्यासः**—पुं°—वृक्षः-निर्यासः—-—गोंद, राल
- **वृक्षपाकः**—पुं°—वृक्षः-पाकः—-—बड़ का पेड़
- **वृक्षभिद्**—स्त्री°—वृक्षः-भिद्—-—कुल्हाड़ी
- **वृक्षमर्कटिका**—स्त्री°—वृक्षः-मर्कटिका—-—गिलहरी
- **वृक्षवाटिका**—स्त्री°—वृक्षः-वाटिका—-—उद्यान, उपवन
- **वृक्षवाटी**—स्त्री°—वृक्षः-वाटी—-—उद्यान, उपवन
- **वृक्षशः**—पुं°—वृक्षः-शः—-—छिपकली
- **वृक्षशायिका**—स्त्री°—वृक्षः-शायिका—-—गिलहरी
- **वृक्षकः**—पुं°—-—वृक्ष + कन्—छोटा पेड़
- **वृक्षकः**—पुं°—-—-—पेड़
- **वृच्**—रुधा° पर° <वृणक्ति>—-—-—छांटना, चुनना
- **वृज्**—अदा° पर° <वृक्ते>—-—-—टाल जाना, कतराना, परित्याग करना
- **वृज्**—रुधा° पर° <वृणक्ति>—-—-—टाल जाना, कतराना, छोड़ देना, परित्याग करना
- **वृज्**—रुधा° पर° <वृणक्ति>—-—-—चुनना
- **वृज्**—रुधा° पर° <वृणक्ति>—-—-—प्रायश्चित करना, पोंछ डालना, निर्मल करना
- **वृज्**—रुधा° पर° <वृणक्ति>—-—-—मुड़ना, आँख फेरना
- **वृज्**—भ्वा° पर°, चुरा° उभ° <वर्जति>, <वर्जयति>, <वर्जयते>, <वर्जित>—-—-—कतराना, टाल जाना
- **वृज्**—भ्वा° पर°, चुरा° उभ° <वर्जति>, <वर्जयति>, <वर्जयते>, <वर्जित>—-—-—छोड़ना, परित्याग करना
- **वृज्**—भ्वा° पर°, चुरा° उभ° <वर्जति>, <वर्जयति>, <वर्जयते>, <वर्जित>—-—-—निकाल देना, एक ओर रख देना
- **वृज्**—भ्वा° पर°, चुरा° उभ° <वर्जति>, <वर्जयति>, <वर्जयते>, <वर्जित>—-—-—अलग रहना
- **वृज्**—भ्वा° पर°, चुरा° उभ° <वर्जति>, <वर्जयति>, <वर्जयते>, <वर्जित>—-—-—टुकड़े टुकड़े कर देना

- **अपवृज्**—भ्वा° पर°, चुरा° उभ°—अप-वृज्———नष्ट करना
- **अपवृज्**—भ्वा° पर°, चुरा° उभ°—अप-वृज्———समाप्त करना
- **अपवृज्**—भ्वा° पर°, चुरा° उभ°—अप-वृज्———छोड़ना, त्याग देना
- **अपवृज्**—भ्वा° पर°, चुरा° उभ°—अप-वृज्———उडेलना, फेंकना
- **आवृज्**—भ्वा° पर°, चुरा° उभ°—आ-वृज्———झुकना, मुड़ना
- **आवृज्**—भ्वा° पर°, चुरा° उभ°—आ-वृज्———प्रस्तुत करना, देना
- **आवृज्**—भ्वा° पर°, चुरा° उभ°—आ-वृज्———परास्त करना, जीतना
- **परिवृज्**—भ्वा° पर°, चुरा° उभ°—परि-वृज्———टाल जाना, कतराना
- **विवृज्**—भ्वा° पर°, चुरा° उभ°—वि-वृज्———कतराना, टाल जाना
- **विवृज्**—भ्वा° पर°, चुरा° उभ°—वि-वृज्———विरहित करना, वञ्चित करना
- **वृजनः**—पुं°———वृजेः क्युः—बाल
- **वृजनः**—पुं°—————घुंघराले बाल
- **वृजनम्**—नपुं°—————पाप
- **वृजनम्**—नपुं°—————संकट
- **वृजनम्**—नपुं°—————आकाश
- **वृजनम्**—नपुं°—————घेर, बाड़ा, विशेषतः एक गोचरभूमि
- **वृजिन**—वि°———वृजेः इनज् कित् च—कुटिल, झुका हुआ, वक्र
- **वृजिन**—वि°—————दुष्ट, पापी
- **वृजिनः**—पुं°—————बाल, घुंघराले बाल
- **वृजिनः**—पुं°—————दुष्ट पुरुष
- **वृजिनम्**—नपुं°—————पाप
- **वृजिनम्**—नपुं°—————पीडा, दुःख
- **वृजिनम्**—पुं°—————पीडा, दुःख
- **वृण्**—तना° उभ° <वृणोति>, <वृणुते>—————खाना, उपभोग करना
- **वृत्**—दिवा° आ° <वृत्यते>—————चुनना, पसंद करना
- **वृत्**—दिवा° आ° <वृत्यते>—————वितरण करना, बाँटना
- **वृत्**—चुरा° उभ° <वर्तयति>, <वर्तयते>—————चमकना

- **वृत्**—भ्वा० आ० <वर्तते>—-—-—होना, विद्यमान होनाम् डटे रहना, मौजूद होना, जीते रहना, टिके रहना
- **वृत्**—भ्वा० आ० <वर्तते>—-—-—किसी विशेष दशा या परिस्थिति में होना
- **वृत्**—भ्वा० आ० <वर्तते>—-—-—होना, घटित होना, आ पड़ना, सामने आना
- **वृत्**—भ्वा० आ० <वर्तते>—-—-—चलते रहना, प्रगतिशील रहना
- **वृत्**—भ्वा० आ० <वर्तते>—-—-—संधारित या संपोषित
- **वृत्**—भ्वा० आ० <वर्तते>—-—-—मुड़ना, लुढकते रहना, चक्कर खाना
- **वृत्**—भ्वा० आ० <वर्तते>—-—-—अपने आप को कार्य में लगाना, काम में लगना, आरम्भ करना
- **वृत्**—भ्वा० आ० <वर्तते>—-—-—कर्तव्य निभाना, व्यवहार करना, आचरण करना, अनुष्ठान करना, अभ्यास करना
- **वृत्**—भ्वा० आ० <वर्तते>—-—-—कार्य करना, विशेष प्रकार का आचरण करना
- **वृत्**—भ्वा० आ० <वर्तते>—-—-—अर्थ रखना, अभिप्राय बतलाना, अर्थ में प्रयुक्त होना
- **वृत्**—भ्वा० आ० <वर्तते>—-—-—प्रवृत्त करना, प्रेरित करना
- **वृत्**—भ्वा० आ० <वर्तते>—-—-—सहारा लेना, आश्रित होना
- **वृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर० <वर्तयति>, <वर्तयते>—-—-—प्रवृत्त कराना
- **वृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर० <वर्तयति>, <वर्तयते>—-—-—घुमाना, चक्कर दिलाना
- **वृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर० <वर्तयति>, <वर्तयते>—-—-—(अस्त्र-शस्त्र) घुमाना, पैंतरे बदलना, घुमा कर फेंकना
- **वृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर० <वर्तयति>, <वर्तयते>—-—-—कार्य करना, अभ्यास करना, प्रदर्शित करना @ मा० ९/३३
- **वृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर० <वर्तयति>, <वर्तयते>—-—-—सम्पन्न करना, निबटाना, ध्यान देना, नज़र डालना
- **वृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर० <वर्तयति>, <वर्तयते>—-—-—बिताना, (समय आदि) गुज़ारना
- **वृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर० <वर्तयति>, <वर्तयते>—-—-—जीवन निर्वाह करना जीते रहना @ कि० २/१८, @ रघु० १२/२०
- **वृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर० <वर्तयति>, <वर्तयते>—-—-—वर्णन करना, बयान करना
- **वृत्**—भ्वा०उभ०, इच्छा० <विवृत्सति>, <विवृत्सते>—-—-—वर्णन करना, बयान करना
- **अतिवृत्**—भ्वा०उभ०—अति-वृत्—-—परे जाना, आगे बढ़ जाना
- **अतिवृत्**—भ्वा०उभ०—अति-वृत्—-—आगे निकल जाना, सर्वोत्कृष्ट होना
- **अतिवृत्**—भ्वा०उभ०—अति-वृत्—-—उल्लंघन करना, बाहर कदम रखना, अतिक्रमण करना
- **अतिवृत्**—भ्वा०उभ०—अति-वृत्—-—उपेक्षा करना, अवहेलना करना
- **अतिवृत्**—भ्वा०उभ०—अति-वृत्—-—चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, नाराज करना
- **अतिवृत्**—भ्वा०उभ०—अति-वृत्—-—पराजित करना, वशीभूत करना

- **अतिवृत्**—भ्वा०उभ०—अति-वृत्———(समय का) बिताना
- **अतिवृत्**—भ्वा०उभ०—अति-वृत्———विलंब करना, देरी करना
- **अनुवृत्**—भ्वा०उभ०—अनु-वृत्———अनुसरण करना, अनुरूप होना, अनुकूल कार्य करना
- **अनुवृत्**—भ्वा०उभ०—अनु-वृत्———अनुरंजन करना, दूसरे की इच्छा के अनुसार अपने आपको बनाना, दूसरे के द्वारा पथप्रदर्शन प्राप्त किया जाना
- **अनुवृत्**—भ्वा०उभ०—अनु-वृत्———आज्ञा मानना
- **अनुवृत्**—भ्वा०उभ०—अनु-वृत्———मिलना-जुलना, नकल करना
- **अनुवृत्**—भ्वा०उभ०—अनु-वृत्———प्रसन्न करना, खुश करना
- **अनुवृत्**—भ्वा०उभ०—अनु-वृत्———किसी पूर्ववर्ती सूत्र से आवृत्ति प्राप्त करना
- **अनुवृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर०—अनु-वृत्———मुड़ना
- **अनुवृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर०—अनु-वृत्———अनुगमन करना, आज्ञा मानना
- **अपवृत्**—भ्वा०उभ०—अप-वृत्———मुड़ जाना, पीठ मोड़ना
- **अपवृत्**—भ्वा०उभ०—अप-वृत्———व्यत्यस्त या व्युत्क्रान्त होना, उलटा हो जाना
- **अपवृत्**—भ्वा०उभ०—अप-वृत्———मुँह नीचे कर लेना
- **अपवृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर०—अप-वृत्———एक ओर हो जाना, झुकना
- **अभिवृत्**—भ्वा०उभ०—अभि-वृत्———पहुँचाना, जाना, निकट होना, समीप होना, मुड़ना
- **अभिवृत्**—भ्वा०उभ०—अभि-वृत्———आक्रमण करना, धावा बोलना, टूट पड़ना @ कि० १३/३
- **अभिवृत्**—भ्वा०उभ०—अभि-वृत्———आरम्भ करना, (दिन), निकलना
- **अभिवृत्**—भ्वा०उभ०—अभि-वृत्———सर्वोपरि होना, सबसे ऊपर होना
- **अभिवृत्**—भ्वा०उभ०—अभि-वृत्———होना, मौजूद होना, घटित होना
- **आवृत्**—भ्वा०उभ०—आ-वृत्———चक्कर खाना
- **आवृत्**—भ्वा०उभ०—आ-वृत्———वापिस आना
- **आवृत्**—भ्वा०उभ०—आ-वृत्———पास जाना
- **आवृत्**—भ्वा०उभ०—आ-वृत्———बेचैन होना, चक्कर खाना
- **उद्वृत्**—भ्वा०उभ०—उद्-वृत्———चढ़ना
- **उद्वृत्**—भ्वा०उभ०—उद्-वृत्———उदित होना, बढ़ना
- **उद्वृत्**—भ्वा०उभ०—उद्-वृत्———घमंडी या अभिमानी होना
- **उद्वृत्**—भ्वा०उभ०—उद्-वृत्———उमड़ना, बह निकलना

- **उपवृत्**—भ्वा०उभ०—उप-वृत्—-—पहुँचना
- **उपवृत्**—भ्वा०उभ०—उप-वृत्—-—लौटना
- **निवृत्**—भ्वा०उभ०—नि-वृत्—-—वापिस आना, लौटना
- **निवृत्**—भ्वा०उभ०—नि-वृत्—-—भाग जाना, पलायन करना
- **निवृत्**—भ्वा०उभ०—नि-वृत्—-—मुड़ जाना, आंखें फेर लेना
- **निवृत्**—भ्वा०उभ०—नि-वृत्—-—अलग रहना
- **निवृत्**—भ्वा०उभ०—नि-वृत्—-—मुक्त होना, बच निकलना
- **निवृत्**—भ्वा०उभ०—नि-वृत्—-—बोलना बन्द कर देना, रुक जाना, ठहर जाना
- **निवृत्**—भ्वा०उभ०—नि-वृत्—-—हट जाना, अन्त होना, बन्द हो जाना, अन्तर्धान होना
- **निवृत्**—भ्वा०उभ०—नि-वृत्—-—रुकवाना, निकलवाना
- **निवृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर०—नि-वृत्—-—लौटना, वापिस भेजना
- **निवृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर०—नि-वृत्—-—वापिस लेना, दूर रहना, मुड़ जाना, मन फेर लेना
- **निर्वृत्**—भ्वा०उभ०—निस्-वृत्—-—समाप्त होना, अन्त होना
- **निर्वृत्**—भ्वा०उभ०—निस्-वृत्—-—संपन्न होना
- **निर्वृत्**—भ्वा०उभ०—निस्-वृत्—-—रुक जाना, न होना
- **निर्वृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर०—निस्-वृत्—-—सम्पन्न करना, निष्पन्न करना, समाप्त करना, पूरा करना
- **परावृत्**—भ्वा०उभ०—परा-वृत्—-—लौटना, वापिस आना
- **परिवृत्**—भ्वा०उभ०—परि-वृत्—-—घूमना, चक्कर खाना
- **परिवृत्**—भ्वा०उभ०—परि-वृत्—-—इधर-उधर भ्रमण करना, इधर-उधर आना जाना
- **परिवृत्**—भ्वा०उभ०—परि-वृत्—-—बदलना, विनिमय करना, अदला-बदली करना
- **परिवृत्**—भ्वा०उभ०—परि-वृत्—-—पीठ मोड़ना
- **परिवृत्**—भ्वा०उभ०—परि-वृत्—-—होना, आ पड़ना
- **परिवृत्**—भ्वा०उभ०—परि-वृत्—-—क्षीण होना, नष्ट होना, लुप्त होना
- **प्रवृत्**—भ्वा०उभ०—प्र-वृत्—-—आगे चलना, चलते जाना, प्रगति करना
- **प्रवृत्**—भ्वा०उभ०—प्र-वृत्—-—उदित होना, उत्पन्न होना, फूट निकलना
- **प्रवृत्**—भ्वा०उभ०—प्र-वृत्—-—होना, घटित होना, आ पड़ना
- **प्रवृत्**—भ्वा०उभ०—प्र-वृत्—-—आरंभ करना, शुरू करना

- **प्रवृत्**—भ्वा०उभ०—प्र-वृत्—-—प्रयत्न करना, जोर लगाना
- **प्रवृत्**—भ्वा०उभ०—प्र-वृत्—-—अमल करना, अनुसरण करना
- **प्रवृत्**—भ्वा०उभ०—प्र-वृत्—-—कार्य में लगना, व्यस्त होना
- **प्रवृत्**—भ्वा०उभ०—प्र-वृत्—-—करना, कार्य में लगना
- **प्रवृत्**—भ्वा०उभ०—प्र-वृत्—-—व्यवहार करना
- **प्रवृत्**—भ्वा०उभ०—प्र-वृत्—-—व्याप्त होना, विद्यमान होना
- **प्रवृत्**—भ्वा०उभ०—प्र-वृत्—-—ठीक उतरना
- **प्रवृत्**—भ्वा०उभ०—प्र-वृत्—-—बिना रुकावट के प्रगति करना, फलना-फूलना
- **प्रवृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर०—प्र-वृत्—-—प्रगति करना, जारी करना
- **प्रवृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर०—प्र-वृत्—-—सूत्रपात करना
- **प्रवृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर०—प्र-वृत्—-—जारी करना, स्थापित करना, बुनियाद रखना
- **प्रवृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर०—प्र-वृत्—-—हांकना, प्रेरित करना, उकसाना, उद्दीप्त करना
- **प्रवृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर०—प्र-वृत्—-—उन्नति करना, प्रगति करना
- **प्रतिनिवृत्**—भ्वा०उभ०—प्रतिनि-वृत्—-—पीठ मोड़ना, लौटना
- **प्रतिनिवृत्**—भ्वा०उभ०—प्रतिनि-वृत्—-—चक्कर काटना
- **विवृत्**—भ्वा०उभ०—वि-वृत्—-—मुड़ना, लूढ़कना, चक्कर काटना, घूमना
- **विवृत्**—भ्वा०उभ०—वि-वृत्—-—एक ओर हो जाना, झुकना
- **विवृत्**—भ्वा०उभ०—वि-वृत्—-—होना, घटित होना
- **विनिवृत्**—भ्वा०उभ०—विनि-वृत्—-—लौटना
- **विनिवृत्**—भ्वा०उभ०—विनि-वृत्—-—रुक जाना, अन्त होना
- **विनिवृत्**—भ्वा०उभ०—विनि-वृत्—-—हाथ खींचना, मुड़ जाना, अलग रहना
- **विपरिवृत्**—भ्वा०उभ०—विपरि-वृत्—-—चक्कर काटना
- **व्यपवृत्**—भ्वा०उभ०—व्यप-वृत्—-—लौटना, वापिस मुड़ना
- **व्यपवृत्**—भ्वा०उभ०—व्यप-वृत्—-—हाथ खींचना, छोड़ देना
- **व्यावृत्**—भ्वा०उभ०—व्या-वृत्—-—वापिस होना, मुड़ना
- **व्यावृत्**—भ्वा०उभ०—व्या-वृत्—-—मुड़ना, हटना, उलट होना
- **व्यावृत्**—भ्वा०उभ०, प्रेर०—व्या-वृत्—-—प्रतिबन्ध लगाना, सीमित करना, निकाल देना, गिरफ्तार करना

- **संवृत्**—भ्वा°उभ°—सम्-वृत्—-—होना, घटित होना
- **संवृत्**—भ्वा°उभ°—सम्-वृत्—-—पैदा होना, उदय होना, फूटना, निकलना
- **संवृत्**—भ्वा°उभ°—सम्-वृत्—-—घटित होना, आ पड़ना
- **संवृत्**—भ्वा°उभ°—सम्-वृत्—-—सम्पन्न होना
- **वृत्**—भू° क° कृ°—-—वृ + क्त—छांटा गया, चुना गया
- **वृत्**—भू° क° कृ°—-—-—ढका गया, पर्दा डाला गया
- **वृत्**—भू° क° कृ°—-—-—छिपाया गया
- **वृत्**—भू° क° कृ°—-—-—घेरा गया, लपेटा गया
- **वृत्**—भू° क° कृ°—-—-—सहमत या सम्मत
- **वृत्**—भू° क° कृ°—-—-—किराये पर लिया गया
- **वृत्**—भू° क° कृ°—-—-—बिगाड़ा गया, विषाक्त किया गया
- **वृत्**—भू° क° कृ°—-—-—सेवित, सेवा किया गया
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—वृ + क्तिन्—छांटना, चुनना
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—-—छिपाना, ढकना,गुप्त रखना
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—-—याचना करना, निवेदन करना
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—-—अनुरोध, प्रार्थना
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—-—घेरना, लपेटना
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—-—झाड़बंदी, बाड़, बाड़ा
- **वृतिंकर**—वि°—-—वृति + कृ + ट, मुम्—घेरने वाला, लपेटने वाला
- **वृतिंकर**—वि°—-—-—विकंकत नाम का पेड़
- **वृत्त**—भू° क° कृ°—-—वृत + क्त—जीवित, विद्यमान
- **वृत्त**—भू° क° कृ°—-—-—घटित, संभूत
- **वृत्त**—भू° क° कृ°—-—-—सम्पूरित, समाप्त
- **वृत्त**—भू° क° कृ°—-—-—अनुष्ठित, कृत, किया गया
- **वृत्त**—भू° क° कृ°—-—-—गुजरा हुआ, बीता हुआ
- **वृत्त**—भू° क° कृ°—-—-—गोल, वर्तुलाकार
- **वृत्त**—भू° क° कृ°—-—-—मृत, स्वर्गगत

- **वृत्त**—भू॰ क॰ कृ॰———–—दृढ़, स्थिर
- **वृत्त**—भू॰ क॰ कृ॰———–—पठित, अधीत
- **वृत्त**—भू॰ क॰ कृ॰———–—व्युत्पन्न
- **वृत्त**—भू॰ क॰ कृ॰———–—प्रसिद्ध
- **वृत्तः**—पुं॰—-——-—कछुवा
- **वृत्तम्**—नपुं॰———–—बात, घटना
- **वृत्तम्**—नपुं॰———–—इतिहास, वर्णन
- **वृत्तम्**—नपुं॰———–—समाचार, खबर
- **वृत्तम्**—नपुं॰———–—प्रवर्तन, पेशा, जीवनवृत्ति, व्यवसाय
- **वृत्तम्**—नपुं॰———–—आचरण, व्यवहार, रीति, कर्म, कृत्य
- **वृत्तम्**—नपुं॰———–—साधु या सत्य आचरण
- **वृत्तम्**—नपुं॰———–—माना हुआ नियम या प्रचलन का पालन करना, कर्तव्य
- **वृत्तम्**—नपुं॰———–—गोल घेरा, वृत्त की परिधि
- **वृत्तम्**—नपुं॰———–—छन्द, विशेषकर मात्राओं की गणना के आधार पर विनियमित
- **वृत्तानुपूर्व**—वि॰—वृत्त-अनुपूर्व—-—गोल शुंडाकार
- **वृत्तानुसारः**—पुं॰—वृत्त-अनुसारः—-—विहित नियमों की अनुरूपता
- **वृत्तानुसारः**—पुं॰—वृत्त-अनुसारः—-—छन्द की अनुरूपता
- **वृत्तान्तः**—पुं॰—वृत्त-अन्तः—-—अवसर, घटना, बात
- **वृत्तान्तः**—पुं॰—वृत्त-अन्तः—-—समाचार, ख़बर, गुप्तवार्ता
- **वृत्तान्तः**—पुं॰—वृत्त-अन्तः—-—वर्णन, इतिहास, कथा, आख्यान, कहानी
- **वृत्तान्तः**—पुं॰—वृत्त-अन्तः—-—बिषय, प्रकरण
- **वृत्तान्तः**—पुं॰—वृत्त-अन्तः—-—प्रकार, क़िस्म
- **वृत्तान्तः**—पुं॰—वृत्त-अन्तः—-—ढंग, रीति
- **वृत्तान्तः**—पुं॰—वृत्त-अन्तः—-—अवस्था, दशा
- **वृत्तान्तः**—पुं॰—वृत्त-अन्तः—-—कुलयोग, समष्टि
- **वृत्तान्तः**—पुं॰—वृत्त-अन्तः—-—विश्राम, अवकाश
- **वृत्तान्तः**—पुं॰—वृत्त-अन्तः—-—गुण, प्रकृति

- **वृत्तिर्वारुः**—पुं°—वृत्त-इर्वारुः—-—तरबूज़, सरदा
- **वृत्तकर्कटी**—स्त्री°—वृत्त-कर्कटी—-—तरबूज़, सरदा
- **वृत्तगन्धि**—नपुं°—वृत्त-गन्धि—-—एक प्रकार का गद्य जो पढ़ने में पद्य जैसा आनन्द दे
- **वृत्तचूड**—वि°—वृत्त-चूड—-—मुंडित, जिसका मुंडन संस्कार हो चुका हो
- **वृत्तचौल**—वि°—वृत्त-चौल—-—मुंडित, जिसका मुंडन संस्कार हो चुका हो
- **वृत्तपुष्पः**—पुं°—वृत्त-पुष्पः—-—बेत, बानीर
- **वृत्तपुष्पः**—पुं°—वृत्त-पुष्पः—-—सिरस का पेड़
- **वृत्तपुष्पः**—पुं°—वृत्त-पुष्पः—-—कदम्ब का पेड़
- **वृत्तफलः**—पुं°—वृत्त-फलः—-—बेर, उन्नाव का पेड़
- **वृत्तफलः**—पुं°—वृत्त-फलः—-—अनार का पेड़
- **वृत्तशस्त्र**—वि°—वृत्त-शस्त्र—-—जिसने शस्त्र विज्ञान में पांडित्य प्राप्त कर लिया है
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—वृत् + क्तिन्—अस्तित्व, सत्ता
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—-—टिकना, रहना, रुख, किसी विशेष स्थिति में होना
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—-—अवस्था, दशा
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—-—कार्य, गति, कृत्य, कार्यवाही
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—-—क्रम, प्रणाली
- **वृत्तिः**—स्त्री°—`—-—आचरण, व्यवहार, रीति, चालचलन, कार्यपद्धति
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—-—पेशा, व्यवसाय, काम-धंधा, रोज़गार, जीवनचर्या
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—-—जीविका, संपोषण, जीविका के उपाय
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—-—मज़दूरी, भाड़ा
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—-—क्रियाशीलता का कारण
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—-—सम्मानपूर्ण बर्ताव
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—-—भाष्य, टीका, विवृति
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—-—चक्कर काटना, मुड़ना
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—-—किसी वृत्त या पहिये की परिधि
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—-—जटिल रचना जिसकी व्याख्या करने की आवश्यकता पड़े
- **वृत्तिः**—स्त्री°—-—-—शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा किसी अर्थ का अभिधान, संकेत अथवा व्यंजना की जाय

- **वृत्तिः**—स्त्री॰—————रचना की शैली
- **वृत्तानुप्रासः**—पुं॰—वृत्तिः-अनुप्रासः———एक प्रकार का अनुप्रास
- **वृत्तोपायः**—पुं॰—वृत्तिः-उपायः———जीविका का उपाय
- **वृत्तिकर्षित**—वि॰—वृत्तिः-कर्षित———जीविका के अभाव में अत्यन्त दुःखी
- **वृत्तिचक्रम्**—नपुं॰—वृत्तिः-चक्रम्———राज चक्र
- **वृत्तिछेदः**—पुं॰—वृत्तिः-छेदः———जीविका के साधनों से वञ्चित
- **वृत्तिभगः**—पुं॰—वृत्तिः-भगः———जीविका का अभाव
- **वृत्तिवैकल्यम्**—नपुं॰—वृत्तिः-वैकल्यम्———जीविका का अभाव
- **वृत्तिस्थ**—वि॰—वृत्तिः-स्थ———किसी भी स्थिति या नियुक्ति में रहने वाला
- **वृत्तिस्थ**—वि॰—वृत्तिः-स्थ———सदाचारी, अच्छा बर्ताव करने वाला
- **वृत्तिस्थः**—पुं॰—वृत्तिः-स्थः———छिपकली, गिरगिट
- **वृत्रः**—पुं॰———वृत् + रक्—एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मार गिराया था
- **वृत्रः**—पुं॰—————बादल
- **वृत्रः**—पुं॰—————अन्धकार
- **वृत्रः**—पुं॰—————शत्रु
- **वृत्रः**—पुं॰—————ध्वनि
- **वृत्रः**—पुं॰—————पर्वत
- **वृत्रारिः**—पुं॰—वृत्रः-अरिः———इन्द्र के विशेषण
- **वृत्रद्विष्**—पुं॰—वृत्रः-द्विष्———इन्द्र के विशेषण
- **वृत्रशत्रुः**—पुं॰—वृत्रः-शत्रुः———इन्द्र के विशेषण
- **वृत्रहन्**—पुं॰—वृत्रः-हन्———इन्द्र के विशेषण
- **वृथा**—अव्य॰———वृ + थाल् किच्च—बिना किसी अभिप्राय के, व्यर्थ, निरर्थक, बिना किसी लाभ के
- **वृथा**—अव्य॰—————अनावश्यक रूप से
- **वृथा**—अव्य॰—————मूर्खता से, आलस्य पूर्वक, बलगाम
- **वृथा**—अव्य॰—————गलत तरीके से, अनुचित रूप से
- **वृथाट्या**—स्त्री॰—वृथा-अट्या———अलसत के साथ टहलना, सामोद भ्रमण करना
- **वृथाकारः**—पुं॰—वृथा-आकारः———मिथ्या रूप, खाली तमाशा

- **वृथाकथा**—स्त्री°—वृथा-कथा—-—बेहूदी बात
- **वृथाजन्मन्**—नपुं°—वृथा-जन्मन्—-—अलाभकर या व्यर्थ जन्म
- **वृथादानम्**—नपुं°—वृथा-दानम्—-—वह उपहार जो प्रतिज्ञात होने पर भी न दिया गया हो
- **वृथामति**—वि°—वृथा-मति—-—दुर्बुद्धि, मूर्ख
- **वृथामांसम्**—नपुं°—वृथा-मांसम्—-—वह मांस जो देवताओं या पितरों के लिए अभिप्रेत न हो
- **वृथावादिन्**—वि°—वृथा-वादिन्—-—मिथ्या भाषी
- **वृथाश्रमः**—पुं°—वृथा-श्रमः—-—व्यर्थ चेष्टा या कष्ट उठाना
- **वृद्ध**—वि°—-—वृध् + क्त—बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त
- **वृद्ध**—वि°—-—-—पूर्णविकसित, बड़ी उम्र का
- **वृद्ध**—वि°—-—-—बूढ़ा, वयोवृद्ध, बहुत वर्षों का
- **वृद्ध**—वि°—-—-—प्रगत या विकसित
- **वृद्ध**—वि°—-—-—बड़ा, विशाल
- **वृद्ध**—वि°—-—-—एकत्रित, संचित
- **वृद्ध**—वि°—-—-—बुद्धिमान्, विद्वान्
- **वृद्धः**—पुं°—-—-—बूढ़ा व्यक्ति
- **वृद्धः**—पुं°—-—-—योग्य या आदरणीय पुरुष
- **वृद्धः**—पुं°—-—-—मुनि, सन्त
- **वृद्धः**—पुं°—-—-—वंशज
- **वृद्धम्**—नपुं°—-—-—गुग्गुल
- **वृद्धाङ्गुलिः**—स्त्री°—वृद्ध-अङ्गुलिः—-—पैर का अंगूठा
- **वृद्धावस्था**—स्त्री°—वृद्ध-अवस्था—-—बुढ़ापा
- **वृद्धाचारः**—पुं°—वृद्ध-आचारः—-—प्राचीन प्रथा
- **वृद्धुक्षः**—पुं°—वृद्ध-उक्षः—-—बूढ़ा बैल
- **वृद्धकाकः**—पुं°—वृद्ध-काकः—-—पहाड़ी कौवा
- **वृद्धनाभि**—वि°—वृद्ध-नाभि—-—स्थूलकाय, मोटे पेट वाला
- **वृद्धभावः**—पुं°—वृद्ध-भावः—-—बुढ़ापा
- **वृद्धमतः**—पुं°—वृद्ध-मतः—-—प्राचीन ऋषियों का उपदेश

- **वृद्धवाहनः**—पुं°—वृद्ध-वाहनः—-—आम का पेड़
- **वृद्धश्रवस्**—पुं°—वृद्ध-श्रवस्—-—इन्द्र का विशेषण
- **वृद्धसंघः**—पुं°—वृद्ध-संघः—-—वृद्धजनों की सभा
- **वृद्धसूत्रकम्**—नपुं°—वृद्ध-सूत्रकम्—-—रूई का गल्हा, कपास का गाला, इन्द्रतूल
- **वृद्धा**—स्त्री°—-—वृद्ध + टाप्—बूढ़ी स्त्री
- **वृद्धा**—स्त्री°—-—-—वंशजा (स्त्री)
- **वृद्धिः**—स्त्री°—-—वृध् + क्तिन्—विकास, वढ़ोत्तरी, वर्धन, सम्बर्धन
- **वृद्धिः**—स्त्री°—-—-—(चन्द्रमा का) वर्धित होना, चन्द्रमा की कलाओं का बढ़ना
- **वृद्धिः**—स्त्री°—-—-—धन की वृद्धि, समृद्धि, धनाढ्यता
- **वृद्धिः**—स्त्री°—-—-—सफलता, बढ़ावत, उन्नति, प्रगति
- **वृद्धिः**—स्त्री°—-—-—दौलत, जायदाद
- **वृद्धिः**—स्त्री°—-—-—ढेर, परिमाण, समुच्चय
- **वृद्धिः**—स्त्री°—-—-—सूद, व्याज,
- **वृद्धिः**—स्त्री°—-—-—सूदखोरी
- **वृद्धिः**—स्त्री°—-—-—लाभ फायदा
- **वृद्धिः**—स्त्री°—-—-—अंडकोष की वृद्धि
- **वृद्धिः**—स्त्री°—-—-—शक्ति या राजस्व का विस्तार
- **वृद्धिः**—स्त्री°—-—-—स्वरों का लंबा करना या वृद्धि
- **वृद्धिः**—स्त्री°—-—-—परिवार में, (प्रसव के कारण) उत्पन्न अशौच, जननाशौच
- **वृद्ध्याजीवः**—पुं°—वृद्धिः-आजीवः—-—सूदखोर, साहुकार, व्याज पर रुपया उधार देनेवाला
- **वृद्ध्याजीविन्**—पुं°—वृद्धिः-आजीविन्—-—सूदखोर, साहुकार, व्याज पर रुपया उधार देनेवाला
- **वृद्धिजीवनम्**—नपुं°—वृद्धिः-जीवनम्—-—सूदखोरी, साहूकारी
- **वृद्धिजीविका**—स्त्री°—वृद्धिः-जीविका—-—सूदखोरी, साहूकारी
- **वृद्धिद**—वि°—वृद्धिः-द—-—समृद्धि को उन्नत करने वाला
- **वृद्धिपत्रम्**—नपुं°—वृद्धिः-पत्रम्—-—एक प्रकार का उस्तरा
- **वृद्धिश्राद्धम्**—नपुं°—वृद्धिः-श्राद्धम्—-—पुत्रजन्मादि के उत्सवों पर पितरों का श्राद्ध, नान्दीमुख श्राद्ध
- **वृध्**—भ्वा° आ° —-—-—विकसित होना, बढ़ना, विस्तृत होना, मजबूत या बलवान् होना, फलना, समृद्ध होना

- **वृध्**—भ्वा० आ० ———–—जारी रखना, टिकाऊ रहना
- **वृध्**—भ्वा० आ० ———–—उठना, चढ़ना
- **वृध्**—भ्वा० आ० ———–—बधाई का कारण होना
- **वृध्**—भ्वा०उभ०प्रेर० <वर्धयति>, <वर्धयते>———–—विकसित कराना, बढ़ाना, वृद्धियुक्त करना, ऊँचा उठाना, ऊँचा करना, उन्नत करना
- **वृध्**—भ्वा०उभ०प्रेर० <वर्धयति>, <वर्धयते>———–—समृद्ध कराना, यशस्वी बनाना, विस्तीर्ण करना, बड़ाई करना
- **वृध्**—भ्वा०उभ०प्रेर० <वर्धयति>, <वर्धयते>———–—बधाई देना, अभिनन्दन करना
- **वृध्**—भ्वा०उभ०प्रेर० <वर्धयति>, <वर्धयते>———–—विकसित होना, बढ़ना
- **परिवृध्**—भ्वा०उभ०—परि-वृध्——विकसित होना, बढ़ना, समृद्ध होना
- **प्रवृध्**—भ्वा०उभ०—प्र-वृध्——विकसित होना, बढ़ना, समृद्ध होना
- **विवृध्**—भ्वा०उभ०—वि-वृध्——विकसित होना, बढ़ना, समृद्ध होना
- **संवृध्**—भ्वा०उभ०—सम्-वृध्——बढ़ना
- **वृध्**—चुरा० उभ० <वर्धयति>,<वर्धयते>———–—बोलना, चमकना
- **वृधसानः**—पुं०——वृधेः छन्दसि असानच्, कित्—मनुष्य
- **वृधसानुः**—पुं०——वृध् + असानुच्—मनुष्य
- **वृधसानुः**—पुं०———–—पत्ता
- **वृधसानुः**—पुं०———–—कर्म, कार्य
- **वृन्तम्**—नपुं०——वृ + क्त, नि० मुम्—किसी फल या पत्ते का डंठल, डंडी
- **वृन्तम्**—नपुं०———–—घड़ौंची
- **वृन्तम्**—नपुं०———–—स्तन का बौंडा या अग्रभाग
- **वृन्ताकः**—पुं०——वृन्त + अक् + अण्—बैंगन का पौधा
- **वृन्ताकी**—स्त्री०——वृन्त + अक् + अण्—बैंगन का पौधा
- **वृन्तिका**—स्त्री०——वृन्त + कन् + टाप्, इत्वम्—छोटा डंठल
- **वृन्दम्**—नपुं०——वृ + दन्, नुम्, गुणाभावः—समुच्चय, समूह बड़ी संख्या, दल
- **वृन्दम्**—नपुं०———–—ढेर, परिमाण
- **वृन्दा**—स्त्री०——वृन्द + टाप्—पवित्र तुलसी
- **वृन्दा**—स्त्री०———–—गोकुल के निकट एक वन
- **वृन्दारण्यम्**—नपुं०—वृन्दा-अरण्यम्——गोकुल के निकट एक जंगल

- **वृन्दावनी**—स्त्री°—वृन्दा-वनी—-—तुलसी का पौधा
- **वृन्दार**—वि°—-—वृन्द + ऋ + अण्—अधिक, बड़ा, विशाल
- **वृन्दार**—वि°—-—-—प्रमुख, उत्तम, श्रेष्ठ
- **वृन्दार**—वि°—-—-—सुहावना, आकर्षक, सुन्दर
- **वृन्दारक**—वि°—-—वृन्द + आरकन्, पक्षे टाप्, इत्वम् च—अधिक, बड़ा, बहुत
- **वृन्दारक**—वि°—-—-—प्रमुख, उत्तम, श्रेष्ठ
- **वृन्दारक**—वि°—-—-—सुहावना, आकर्षक, सुन्दर, मनोहर
- **वृन्दारक**—वि°—-—-—आदरणीय, सम्माननीय
- **वृन्दारकः**—पुं°—-—-—देव, सुर
- **वृन्दारकः**—पुं°—-—-—किसी भी चीज़ का मुख्य
- **वृन्दिष्ठ**—वि° —-—अयमेषामतिशयेन वृन्दारकः-इष्ठन्, वृन्दादेशः—अत्यंत बड़ा या विशालतम
- **वृन्दिष्ठ**—वि° —-—-—अत्यंत मनोहर, सुन्दरतम
- **वृन्दीयस्**—वि° —-—`वृन्दारक' की म° अ° अयमनयोरतिशयेन वृन्दारकः + ईयसुन्, वृन्दादेशः—अपेक्षाकृत बड़ा, विशालतर
- **वृन्दीयस्**—वि° —-—-—अपेक्षाकृत मनोहर, सुन्दरतर
- **वृश्**—दिवा° पर° <वृश्यति>—-—-—छाँटना, चुनना
- **वृशः**—पुं°—-—वृश् + क—चूहा
- **वृशा**—स्त्री°—-—-—एक औषधि, अडूसा
- **वृशम्**—नपुं°—-—-—अदरक
- **वृश्चिकः**—पुं°—-—व्रश्च् + किकन्—बिच्छू
- **वृश्चिकः**—पुं°—-—-—वृश्चिक राशि
- **वृश्चिकः**—पुं°—-—-—केंकड़ा
- **वृश्चिकः**—पुं°—-—-—कानखजूरा
- **वृश्चिकः**—पुं°—-—-—बसूंडवा, गोबर का कीड़ा
- **वृश्चिकः**—पुं°—-—-—एक रोएंदार कीड़ा
- **वृष्**—भ्वा° पर° <वर्षति>, <वृष्ट>—-—-—बरसना
- **वृष्**—भ्वा° पर° <वर्षति>, <वृष्ट>—-—-—वारिश करना, उडेलना, बौछार करना
- **वृष्**—भ्वा° पर° <वर्षति>, <वृष्ट>—-—-—बरसाना ढलकाना

- **वृष्**—भ्वा० पर० <वर्षति>, <वृष्ट>—————अनुदान देना, अर्पण करना
- **वृष्**—भ्वा० पर० <वर्षति>, <वृष्ट>—————तर करना
- **वृष्**—भ्वा० पर० <वर्षति>, <वृष्ट>—————पैदा करना, उत्पन्न करना
- **वृष्**—भ्वा० पर० <वर्षति>, <वृष्ट>—————सर्वोपरि शवित रखना
- **वृष्**—भ्वा० पर० <वर्षति>, <वृष्ट>—————प्रहार करना, चोट मारना
- **अभिवृष्**—भ्वा० पर०—अभि-वृष्———बौछार करना, बरसाना, उडेलना, छिड़कना
- **अभिवृष्**—भ्वा० पर०—अभि-वृष्———प्रदान करना, अर्पण करना
- **प्रवृष्**—भ्वा० पर०—प्र-वृष्———बरसाना, बौछार करना
- **वृष्**—चुरा० आ० <वर्षयते>—————शक्तिशाली या प्रमुख होना
- **वृष्**—चुरा० आ० <वर्षयते>—————उत्पन्न करने की शक्ति रखना
- **वृषः**—पुं०———वृष् + क—साँड
- **वृषः**—पुं०—————वृष राशि
- **वृषः**—पुं०—————किसी वर्ग का मुख्य या उत्तम, अपने दल का सर्वश्रेष्ठ
- **वृषः**—पुं०—————कामदेव
- **वृषः**—पुं०—————मज़बूत या व्यायाम शील व्यक्ति
- **वृषः**—पुं०—————कामातुर, रतिग्रंथों में वर्णित चार प्रकार के पुरुषों में से एक
- **वृषः**—पुं०—————शत्रु, विपक्षी
- **वृषः**—पुं०—————चूहा
- **वृषः**—पुं०—————शिव का नंदी बैल
- **वृषः**—पुं०—————नैतिकता, न्याय
- **वृषः**—पुं०—————गुण, सत्कर्म या पुण्यकार्य
- **वृषः**—पुं०—————कर्ण का नामान्तर
- **वृषः**—पुं०—————विष्णु का नाम
- **वृषः**—पुं०—————एक विशेष औषधि का नाम
- **वृषम्**—नपुं०—————मोर का पंख
- **वृषाङ्कः**—पुं०—वृषः-अङ्कः———शिव का विशेषण
- **वृषाङ्कः**—पुं०—वृषः-अङ्कः———पुण्यात्मा, सद्गुणी

- **वृषाङ्कः**—पुं°—वृषः-अङ्कः—-—भिलावाँ
- **वृषाङ्कः**—पुं°—वृषः-अङ्कः—-—षंढ
- **वृषजः**—पुं°—वृषः-जः—-—छोटा ढोल
- **वृषाञ्चनः**—पुं°—वृषः-अञ्चनः—-—शिव का विशेषण
- **वृषान्तकः**—पुं°—वृषः-अन्तकः—-—विष्णु का विशेषण
- **वृषाहारः**—पुं°—वृषः-आहारः—-—बिलाव
- **वृषोत्सर्गः**—पुं°—वृषः-उत्सर्गः—-—मृत पुरुष के नाम पर दाग कर साँड़ छोड़ना
- **वृषदंशः**—पुं°—वृषः-दंशः—-—बिलाव
- **वृषदंशकः**—पुं°—वृषः-दंशकः—-—बिलाव
- **वृषध्वजः**—पुं°—वृषः-ध्वजः—-—शिव का विशेषण
- **वृषध्वजः**—पुं°—वृषः-ध्वजः—-—गणेश का विशेषण
- **वृषध्वजः**—पुं°—वृषः-ध्वजः—-—सद्‌गुणी, पुण्यात्मा
- **वृषपतिः**—पुं°—वृषः-पतिः—-—शिव का विशेषण
- **वृषपर्वन्**—पुं°—वृषः-पर्वन्—-—शिव का विशेषण
- **वृषपर्वन्**—पुं°—वृषः-पर्वन्—-—एक राक्षस का नाम
- **वृषपर्वन्**—पुं°—वृषः-पर्वन्—-—वर्र, भिरड़
- **वृषभासा**—स्त्री°—वृषः-भासा—-—इन्द्र और देवताओं का आवास
- **वृषलोचनः**—पुं°—वृषः-लोचनः—-—बिलाव
- **वृषवाहनः**—पुं°—वृषः-वाहनः—-—शिव का विशेषण
- **वृषणः**—पुं°—-—वृष् + क्यु—अंडकोष, अंड या फोते
- **वृषन्**—पुं°—-—वृष् + कनिन्—साँड
- **वृषन्**—पुं°—-—-—वृषराशि
- **वृषन्**—पुं°—-—-—किसी वर्ग का मुखिया
- **वृषन्**—पुं°—-—-—बीजाश्व, साँड, घोड़ा
- **वृषन्**—पुं°—-—-—पीड़ा, शोक
- **वृषन्**—पुं°—-—-—पीड़ा के प्रति असंवेद्यता
- **वृषन्**—पुं°—-—-—इन्द्र का नाम

- **वृषन्**—पुं॰—-—-—कर्ण का नाम
- **वृषन्**—पुं॰—-—-—अग्नि का नाम
- **वृषभः**—पुं॰—-—वृष् + अभच् किच्च—साँड
- **वृषभः**—पुं॰—-—-—कोई भी नर जानवर
- **वृषभः**—पुं॰—-—-—अपने वर्ग का मुखिया
- **वृषभः**—पुं॰—-—-—वृषराशि
- **वृषभः**—पुं॰—-—-—एक प्रकार की औषधि
- **वृषभः**—पुं॰—-—-—हाथी का कान
- **वृषभः**—पुं॰—-—-—कान का विवर
- **वृषभगतिः**—पुं॰—वृषभः-गतिः—-—शिव के विशेषण
- **वृषभध्वजः**—पुं॰—वृषभः-ध्वजः—-—शिव के विशेषण
- **वृषभी**—स्त्री॰—-— वृषभ + ङीष्—विधवा
- **वृषभी**—स्त्री॰—-—-—कवच
- **वृषलः**—पुं॰—-—वृष् + कलच्—शूद्र
- **वृषलः**—पुं॰—-—-—घोड़ा
- **वृषलः**—पुं॰—-—-—लहसुन
- **वृषलः**—पुं॰—-—-—पापी, दुष्ट, अधर्मी
- **वृषलः**—पुं॰—-—-—जाति से बहिष्कृत
- **वृषलः**—पुं॰—-—-—चन्द्रगुप्त का नाम
- **वृषलकः**—पुं॰—-—वृषल + कन्—तिरस्करणीय शूद्र
- **वृषली**—स्त्री॰—-—वृषल + ङीष्—बारह वर्ष की अविवाहित कन्या, रजस्वला होने पर भी विवाह न होने के कारण पिता के घर रहने वाली कन्या
- **वृषली**—स्त्री॰—-—-—रजस्वला
- **वृषली**—स्त्री॰—-—-—बांझ स्त्री
- **वृषली**—स्त्री॰—-—-—सद्योजात बच्चे की माता
- **वृषली**—स्त्री॰—-—-—शूद्र की पत्नी या शूद्रा स्त्री
- **वृषलीपतिः**—पुं॰—वृषली-पतिः—-—शूद्र स्त्री का पति
- **वृषलीसेवनम्**—नपुं॰—वृषली-सेवनम्—-—शूद्रा स्त्री के साथ संभोग

- **वृषसृक्की**—स्त्री° —————बर्र, भिरड़
- **वृषस्यन्ती**—स्त्री°———वृष + क्यच्, सुक्, शतृ + ङीप्, नुम्—संभोग करने की इच्छा वाली स्त्री
- **वृषस्यन्ती**—स्त्री°—————कामासक्ता या कामातुरा स्त्री
- **वृषस्यन्ती**—स्त्री°—————गर्भायी हुई गाय
- **वृषाकपायी**—स्त्री°———वृषाकपेः पत्नी-वृषाकपि + ङीष्, ऐ आदेशः—लक्ष्मी का विशेषण
- **वृषाकपायी**—स्त्री°—————गौरी का विशेषण
- **वृषाकपायी**—स्त्री°—————शची का विशेषण
- **वृषाकपायी**—स्त्री°—————अग्नि की पत्नी स्वाहा का विशेषण
- **वृषाकपायी**—स्त्री°—————सूर्य की पत्नी ऊषा का विशेषण
- **वृषाकपिः**—पुं°———वृषः कपिः अस्य- ब° स°, पूर्वपददीर्घः—सूर्य का विशेषण
- **वृषाकपिः**—पुं°—————विष्णु का विशेषण
- **वृषाकपिः**—पुं°—————शिव का विशेषण
- **वृषाकपिः**—पुं°—————इन्द्र का विशेषण
- **वृषाकपिः**—पुं°—————अग्नि का विशेषण
- **वृषायणः**—पुं°—————शिव का विशेषण
- **वृषायणः**—पुं°—————गोरैया चिड़िया
- **वृषिन्**—पुं°———वृष् + इनि—मोर
- **वृषी**—स्त्री°—————संन्यासी या ब्रह्मचारी का आसन
- **वृष्ट**—भू° क° कृ°———वृष् + क्त—बरसा हुआ
- **वृष्ट**—भू° क° कृ°—————बरसता हुआ
- **वृष्ट**—भू° क° कृ°—————बौछार करता हुआ, उडेलता हुआ
- **वृष्टिः**—स्त्री°———वृष् + क्तिन्—बारिश, बारिश की बौछार
- **वृष्टिः**—स्त्री°—————(किसी भी वस्तु की) बौछार
- **वृष्टिकालः**—पुं°—वृष्टिः-कालः———बरसात का समय
- **वृष्टिजीवन**—वि°—वृष्टिः-जीवन———बारिश द्वारा सिंचित (प्रदेश)
- **वृष्टिभूः**—पुं°—वृष्टिः-भूः———मेंढक
- **वृष्टिमत्**—वि°———वृष्टि + मतुप्—बरसने वाला, बरसाती

- **वृष्टिमत्**—पुं०—-—-—बादल
- **वृष्णि**—वि०—-—वृषेः निः किच्च—धर्मभ्रष्ट, पाखंडी
- **वृष्णि**—वि०—-—-—क्रुद्ध, कोपाविष्ट
- **वृष्णि**—पुं०—-—-—बादल
- **वृष्णि**—पुं०—-—-—मेंढा
- **वृष्णि**—पुं०—-—-—प्रकाश की किरण
- **वृष्णि**—पुं०—-—-—कृष्ण के किसी पूर्वज का नाम
- **वृष्णि**—पुं०—-—-—कृष्ण का नाम
- **वृष्णि**—पुं०—-—-—इन्द्र
- **वृष्णि**—पुं०—-—-—अग्नि
- **वृष्णिगर्भः**—पुं०—वृष्णि-गर्भः—-—कृष्ण का विशेषण
- **वृष्य**—वि०—-—वृष् + क्यप्—जिसके ऊपर बरस सके, बौछार की जा सके
- **वृष्य**—वि०—-—-—कामोद्दीपक, वाजीकर, पुंस्त्व बढ़ाने वाला
- **वृष्यः**—पुं०—-—-—माष, उड़द
- **वृह्**—भ्वा०तुदा०पर०—-—-—उगना, बढ़ना, फैलाना
- **वृह्**—भ्वा०तुदा०पर०—-—-—दहाड़ना
- **उद्वृह्**—भ्वा० पर०—उद्-वृह्—-—उठाना, ऊपर को करना
- **निवृह्**—भ्वा० पर०—नि-वृह्—-—नष्ट करना, हटाना
- **वृहत्**—वि०—-—वृह् + अति—विस्तृत, विशाल, बड़ा, स्थूल
- **वृहत्**—वि०—-—वृह् + अति—चौड़ा, प्रशस्त, विस्तृत, दूर तक फैला हुआ
- **वृहत्**—वि०—-—वृह् + अति—विस्तृत, यथेष्ट, प्रचुर
- **वृहत्**—वि०—-—वृह् + अति—मजबूत, शक्तिशाली
- **वृहत्**—वि०—-—वृह् + अति—लम्बा, ऊँचा
- **वृहत्**—वि०—-—वृह् + अति—पूर्णविकसित
- **वृहत्**—वि०—-—वृह् + अति—सटा हुआ, सघन
- **वृहत्**—स्त्री०—-—-—वाणी
- **वृहत्**—नपुं०—-—-—वेद

- **वृहत्**—नपुं॰—-—-—सामवेद का मंत्र (साम)
- **वृहत्**—नपुं॰—-—-—ब्रह्म
- **वृहतिका**—स्त्री॰—-—वृहत् + ङीष् + कन् + टाप्, ह्रस्वः—उत्तरीय वस्त्र, दुपट्टा, चोगा, चादर
- **वृहती**—स्त्री॰—-—वृह् + अति + ङीष्—नारद की वीणा
- **वृहती**—स्त्री॰—-—-—छत्तीस की संख्या
- **वृहती**—स्त्री॰—-—-—दुपट्टा, चोगा, आवरण
- **वृहती**—स्त्री॰—-—-—भाषण आशय
- **वृहतीपतिः**—पुं॰—वृहती-पतिः—-—बृहस्पति का विशेषण
- **वृहस्पतिः**—पुं॰—-—वृहतः वाचः पतिः-पारस्करादि॰—देवों के गुरु
- **वृहस्पतिः**—पुं॰—-—-—बृहस्पति ग्रह
- **वृहस्पतिः**—पुं॰—-—-—एक स्मृतिकार का नाम
- **वृ**—क्र्या॰ उभ॰ <वृणति>, <वृणोते>, <वूर्ण>, कर्मवा॰ <वूर्यते>, इच्छा॰ <वुवूर्षति>, <वुवूर्षते>, <विवरिषति>, <विवरिषते>—-—-—छांटना, चुनना
- **वे**—भ्वा॰ उभ॰ <वयति>, <वयते>, <उत>, प्रेर॰ <वाययति>, <वाययते>—-—-—बुनना
- **वे**—भ्वा॰ उभ॰ <वयति>, <वयते>, <उत>, प्रेर॰ <वाययति>, <वाययते>—-—-—बाल गूंथना, पौधे लगाना
- **वे**—भ्वा॰ उभ॰ <वयति>, <वयते>, <उत>, प्रेर॰ <वाययति>, <वाययते>—-—-—सीना
- **वे**—भ्वा॰ उभ॰ <वयति>, <वयते>, <उत>, प्रेर॰ <वाययति>, <वाययते>—-—-—बनाना, रचना, नत्थी करना
- **प्रवे**—भ्वा॰ उभ॰—प्र-वे—-—बुनना
- **प्रवे**—भ्वा॰ उभ॰—प्र-वे—-—बांधना, कसना
- **प्रवे**—भ्वा॰ उभ॰—प्र-वे—-—जमाना, स्थिर करना
- **प्रवे**—भ्वा॰ उभ॰—प्र-वे—-—परस्पर बुनना, संग्रथित करना
- **वेकटः**—पुं॰—-—-—हंसोकड़ा
- **वेकटः**—पुं॰—-—-—जौहरी
- **वेकटः**—पुं॰—-—-—युवा पुरुष
- **वेगः**—पुं॰—-—विज् + घञ्—आवेग, संवेग
- **वेगः**—पुं॰—-—-—गति, प्रवेग, शीघ्रता
- **वेगः**—पुं॰—-—-—विक्षोभ
- **वेगः**—पुं॰—-—-—अतिवेगशीलता, प्रचण्डता, बल

- **वेगः**—पुं॰———–—प्रवाह, धारा
- **वेगः**—पुं॰———–—तेज, क्रियाशीलता, संकल्प
- **वेगः**—पुं॰———–—शक्ति, सामर्थ्य
- **वेगः**—पुं॰———–—संचार, क्रिया (विष-आदि का) प्रभाव
- **वेगः**—पुं॰———–—शीघ्रता, जल्दबाजी, आकस्मिक आवेग
- **वेगः**—पुं॰———–—बाण की गति
- **वेगः**—पुं॰———–—प्रेम, प्रणयोन्माद
- **वेगः**—पुं॰———–—आन्तरिक भाव का बाहर प्रकट होना
- **वेगः**—पुं॰———–—आनन्द, प्रसन्नता
- **वेगः**—पुं॰———–—मलत्याग
- **वेगः**—पुं॰———–—शुक्र, वीर्य
- **वेगानिलः**—पुं॰—वेगः-अनिलः—–—आंधी का झोंका
- **वेगानिलः**—पुं॰—वेगः-अनिलः—–—प्रचण्ड वायु
- **वेगाघातः**—पुं॰—वेगः-आघातः—–—अकस्मात् वेग का अवरोध, गति को रोकना
- **वेगाघातः**—पुं॰—वेगः-आघातः—–—मलावरोध, कोष्ठबद्धता
- **वेगनाशनः**—पुं॰—वेगः-नाशनः—–—श्लेष्मा, कफ
- **वेगवाहिन्**—वि॰—वेगः-वाहिन्—–—स्फूर्त, तेज
- **वेगविधारणम्**—नपुं॰—वेगः-विधारणम्—–—गति का रोकना
- **वेगसरः**—पुं॰—वेगः-सरः—–—खच्चर
- **वेगिन्**—वि॰—–—वेग + इनि—तेज, चुस्त, द्रुतगामी, प्रचण्ड, फुर्तीला
- **वेगिन्**—पुं॰———–—हरकारा
- **वेगिन्**—पुं॰———–—बाज
- **वेगिनी**—स्त्री॰———–—नदी
- **वेङ्कटः**—पुं॰———–—एक पहाड़ का नाम, वेंकटाचल
- **वेचा**—स्त्री॰—–—विच् + अच् + टाप्—भाड़ा, मजदूरी
- **वेडम्**—नपुं॰—–—विड् + अच्—एक प्रकार का चन्दन
- **वेडा**—स्त्री॰—–—वेड + टाप्—किश्ती, नाव

- **वेण्**—भ्वा० उभ० <वेणति>, <वेणते>—-———जाना, हिलना-जुलना
- **वेण्**—भ्वा० उभ० <वेणति>, <वेणते>—-———जानना, पहचानना, प्रत्यक्ष करना
- **वेण्**—भ्वा० उभ० <वेणति>, <वेणते>—-———विचारविमर्श करना, सोचना
- **वेण्**—भ्वा० उभ० <वेणति>, <वेणते>—-———लेना
- **वेण्**—भ्वा० उभ० <वेणति>, <वेणते>—-—-—बाजा वजाना
- **वेन्**—भ्वा० उभ० <वेनति>, <वेनते>—-—-—जाना, हिलना-जुलना
- **वेन्**—भ्वा० उभ० <वेनति>, <वेनते>—-———जानना, पहचानना, प्रत्यक्ष करना
- **वेन्**—भ्वा० उभ० <वेनति>, <वेनते>—-———विचारविमर्श करना, सोचना
- **वेन्**—भ्वा० उभ० <वेनति>, <वेनते>—-———लेना
- **वेन्**—भ्वा० उभ० <वेनति>, <वेनते>—-———बाजा वजाना
- **वेणः**—पुं०—-—वेण् + अच्—गायक जाति का पुरुष
- **वेणः**—पुं०—-———एक राजा का नाम, अङ्ग का पुत्र और स्वायंभुव मनु का वंशज
- **वेणा**—स्त्री०—-—वेण + टाप्—एक नदी का नाम (जो कृष्णा नदी में जाकर मिलती है)
- **वेणिः**—स्त्री०—-—वेण् + इन्—गुंथे हुए बाल, बालो की मींढी
- **वेणिः**—स्त्री०—-—वेण् + इन्—बालों की एक अनलंकृत चोटी जो पीठ पर लटकती रहती हैं
- **वेणिः**—स्त्री०—-—वेण् + इन्—अनवच्छिन्न प्रवाह, धारा, सरिता
- **वेणिः**—स्त्री०—-—वेण् + इन्—दो या अधिक नदियों का संगम
- **वेणिः**—स्त्री०—-—वेण् + इन्—गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम
- **वेणिः**—स्त्री०—-—वेण् + इन्—एक नदी का नाम
- **वेणी**—स्त्री०—-—वेण् + इन्+ ङीष्—गुंथे हुए बाल, बालो की मींढी
- **वेणी**—स्त्री०—-—वेण् + इन्+ ङीष्—बालों की एक अनलंकृत चोटी जो पीठ पर लटकती रहती हैं
- **वेणी**—स्त्री०—-—वेण् + इन्+ ङीष्—अनवच्छिन्न प्रवाह, धारा, सरिता
- **वेणी**—स्त्री०—-—वेण् + इन्+ ङीष्—दो या अधिक नदियों का संगम
- **वेणी**—स्त्री०—-—वेण् + इन्+ ङीष्—गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम
- **वेणी**—स्त्री०—-—वेण् + इन्+ ङीष्—एक नदी का नाम
- **वेणीबन्धः**—पुं०—वेणी-बन्धः—-—गुथे हुए बाल, मींढी
- **वेणीवेधनी**—स्त्री०—वेणी-वेधनी—-—जोक

- **वेणीवेधिनी**—स्त्री°—वेणी-वेधिनी—-—कंघी
- **वेणीसंहारः**—पुं°—वेणी-संहारः—-—बालों को गूंथ कर मींढी बनाना
- **वेणीसंहारः**—पुं°—वेणी-संहारः—-—भट्टनारायणकृत एक नाटक का नाम
- **वेणुः**—पुं°—-—वेण् + उण्—बाँस
- **वेणुः**—पुं°—-—-—नरकुल
- **वेणुः**—पुं°—-—-—बंसरी, मुरली
- **वेणुजः**—पुं°—वेणुः-जः—-—बाँस का बीज
- **वेणुध्मः**—पुं°—वेणुः-ध्मः—-—बाँसुरी बजाने वाला, मुरलीवाला
- **वेणुनिस्रुतिः**—पुं°—वेणुः-निस्रुतिः—-—ईख
- **वेणुयष्टिः**—पुं°—वेणुः-यष्टिः—-—बाँस की लकड़ी
- **वेणुवादः**—पुं°—वेणुः-वादः—-—मुरली वाला, बाँसुरी बजाने वाला
- **वेणुवादकः**—पुं°—वेणुः-वादकः—-—मुरली वाला, बाँसुरी बजाने वाला
- **वेणुबीजम्**—नपुं°—वेणुः-बीजम्—-—बाँस का बीज
- **वेणुकम्**—नपुं°—-—वेणु + कन्—बाँस की मूठ वाला अंकुश
- **वेणुनम्**—नपुं°—-—वेण् + उनन्—काली मिर्च
- **वेतंडः**—पुं°—-—-—हाथी
- **वेदंडः**—पुं°—-—-—हाथी
- **वेतनम्**—नपुं°—-—अज् + तनन् वीभावः—किराया, मज़दूरी, भृति, तनख्वाह, वृत्ति @ रघु° १७/६६
- **वेतनम्**—नपुं°—-—-—आजीविका, जीवननिर्वाह का साधन
- **वेतनादनम्**—नपुं°—वेतनम्-अदानम्—-—पारिश्रमिक या मजदूरी न देना
- **वेतनादनम्**—नपुं°—वेतनम्-अदानम्—-—मजदूरी न मिलने के कारण किया गया प्रयत्न
- **वेतनानपाकर्मन्**—नपुं°—वेतनम्-अनपकर्मन्—-—पारिश्रमिक या मजदूरी न देना
- **वेतनानपाकर्मन्**—नपुं°—वेतनम्-अनपकर्मन्—-—मजदूरी न मिलने के कारण किया गया प्रयत्न
- **वेतनानपक्रिया**—स्त्री°—वेतनम्-अनपक्रिया—-—पारिश्रमिक या मजदूरी न देना
- **वेतनानपक्रिया**—स्त्री°—वेतनम्-अनपक्रिया—-—मजदूरी न मिलने के कारण किया गया प्रयत्न
- **वेतनजीविन्**—पुं°—वेतनम्-जीविन्—-—वृत्ति पाने वाला, वैतनिक
- **वेतसः**—पुं°—-—अज् + असुन् तुक् च, वीभावः—नरसल, नरकुल, बेत

- **वेतसः**—पुं°—————नींबू, बिजौरा
- **वेतसी**—स्त्री°———वेतस् + ङीष्—नरसल
- **वेतस्वत्**—वि°———वेतस् + ड मतुप्, मस्य वः—जहाँ नरकुल बहुतायत से पाये जायँ
- **वेतालः**—पुं°———अज् + विच्, वी आदेशः, तल् + घञ् कर्म° स°—एक प्रकार की भूतयोनि, विशाच, प्रेत, विशेषकर शव पर अधिकार रखने वाला भूत @ मा° ५/२३, @ शि° २०/६०
- **वेतालः**—पुं°—————द्वारपाल
- **वेत्तृ**—पुं°———विद् + तृच्—ज्ञाता
- **वेत्तृ**—पुं°—————ऋषि, मुनि
- **वेत्तृ**—पुं°—————पति, पाणिग्रहीता
- **वेत्रः**—पुं°———अज् + त्रल्, वी भावः—वेत, नरसल
- **वेत्रः**—पुं°—————लाठी, छड़ी, विशेष कर द्वारपाल की छड़ी
- **वेत्रासनम्**—नपुं°—वेत्रः-आसनम्———बेंत की बनी गद्दी
- **वेत्रधरः**—पुं°—वेत्रः-धरः———द्वारपाल
- **वेत्रधरः**—पुं°—वेत्रः-धरः———आसाधारी, छड़ीबरदार
- **वेत्रधारकः**—पुं°—वेत्रः-धारकः———द्वारपाल
- **वेत्रधारकः**—पुं°—वेत्रः-धारकः———आसाधारी, छड़ीबरदार
- **वेत्रकीय**—वि°———वेत्र + छ, कुक्—वेत्रबहुल, जहाँ नरकुल बहुत पाये जायँ
- **वेत्रवती**—स्त्री°———वेत्र + मतुप् + ङीष्—स्त्री द्वारपाल
- **वेत्रवती**—स्त्री°—————एक नदी का नाम
- **वेथ्**—भ्वा° आ° <वेथन्ते>—————प्रार्थना, निवेदन करना, कहना
- **वेदः**—पुं°———विद् + घञ्, अच् वा—ज्ञान
- **वेदः**—पुं°—————आध्यात्मिक या धार्मिक ज्ञान, हिन्दुओं के धर्मग्रन्थ
- **वेदः**—पुं°—————कुशा घास का गुच्छा
- **वेदः**—पुं°—————विष्णु का नाम
- **वेदाङ्गम्**—नपुं°—वेदः-अङ्गम्———`वेद का अंग' एक प्रकार के ग्रन्थ जो वेदाध्ययन में सहायक हैं
- **वेदाधिगमः**—पुं°—वेदः-अधिगमः———धार्मिक अध्ययन, वेदाध्ययन
- **वेदाध्ययनम्**—नपुं°—वेदः-अध्ययनम्———धार्मिक अध्ययन, वेदाध्ययन

- **वेदाध्यापकः**—पुं°—वेदः-अध्यापकः—-—वेद का पढ़ाने वाला, धर्मगुरु
- **वेदान्तः**—पुं°—वेदः-अन्तः—-—`वेद का अन्त' (वेद के अन्त में आने वालीं) उपनिषद्
- **वेदान्तः**—पुं°—वेदः-अन्तः—-—हिन्दुओं के छः मुख्य दर्शनों में अन्तिम दर्शन
- **वेदगः**—पुं°—वेदः-गः—-—वेदान्त दर्शन का अनुयायी
- **वेदज्ञः**—पुं°—वेदः-ज्ञः—-—वेदान्त दर्शन का अनुयायी
- **वेदान्तिन्**—पुं°—वेदः-अन्तिन्—-—वेदान्त दर्शन का अनुयायी
- **वेदार्थः**—पुं°—वेदः-अर्थः—-—वेदों का अर्थ
- **वेदावतारः**—पुं°—वेदः-अवतारः—-—वेदों का प्रकटीकरण, अर्थात् ईश्वरीय संदेश
- **वेदादि**—नपुं°—वेदः-आदि—-—`ओम् की पुनीत ध्वनि
- **वेदादिवर्णः**—पुं°—वेदः-आदिवर्णः—-—`ओम् की पुनीत ध्वनि
- **वेदादिबीजम्**—नपुं°—वेदः-आदिबीजम्—-—`ओम् की पुनीत ध्वनि
- **वेदोक्त**—वि°—वेदः-उक्त—-—शास्त्रसम्मत, वेदविहित
- **वेदकौलेयकः**—पुं°—वेदः-कौलेयकः—-—शिव का विशेषण
- **वेदगर्भः**—पुं°—वेदः-गर्भः—-—ब्रह्म का विशेषण
- **वेदगर्भः**—पुं°—वेदः-गर्भः—-—वेदों का ज्ञाता ब्राह्मण
- **वेदज्ञः**—पुं°—वेदः-ज्ञः—-—वेदों को जानने वाला ब्राह्मण
- **वेदत्रयम्**—नपुं°—वेदः-त्रयम्—-—सामूहिक रूप से तीनों वेद
- **वेदत्रयी**—स्त्री°—वेदः-त्रयी—-—सामूहिक रूप से तीनों वेद
- **वेदनिन्दकः**—पुं°—वेदः-निन्दकः—-—नास्तिक, पाखण्डी, श्रद्धाहीन
- **वेदनिन्दा**—स्त्री°—वेदः-निन्दा—-—अविश्वास, पाखण्ड
- **वेदपारगः**—पुं°—वेदः-पारगः—-—वेदों में पारंगत ब्राह्मण
- **वेदमातृ**—स्त्री°—वेदः-मातृ—-—वैदिक पुनीत मंत्र, गायत्रीमंत्र
- **वेदवचनम्**—नपुं°—वेदः-वचनम्—-—वेद का मूलपाठ
- **वेदवाक्यम्**—नपुं°—वेदः-वाक्यम्—-—वेद का मूलपाठ
- **वेदवदनम्**—नपुं°—वेदः-वदनम्—-—व्याकरण
- **वेदवासः**—पुं°—वेदः-वासः—-—ब्राह्मण
- **वेदबाह्य**—वि°—वेदः-बाह्य—-—वेद के विरुद्ध, जो वेद में उपलब्ध न हो

- **वेदविद्**—पुं°—वेदः-विद्———वेदविशारद ब्राह्मण
- **वेदव्यासः**—पुं°—वेदः-व्यासः———व्यास का विशेषण जिसने वेदों वर्तमान रूप दिया है
- **वेदसंन्यासः**—पुं°—वेदः-संन्यासः———वेदों के कर्मकाण्ड का त्याग
- **वेदनम्**—नपुं°———विद् + ल्युट्—ज्ञान, प्रत्यक्षज्ञान
- **वेदनम्**—नपुं°—————भावना, संवेदन
- **वेदनम्**—नपुं°—————पीडा, संताप, क्लेश, आधि
- **वेदनम्**—नपुं°—————अधिग्रहण, दौलत, जायदाद
- **वेदनम्**—नपुं°—————विवाह
- **वेदना**—स्त्री°———विद् + ल्युट्—ज्ञान, प्रत्यक्षज्ञान
- **वेदना**—स्त्री°—————भावना, संवेदन
- **वेदना**—स्त्री°—————पीडा, संताप, क्लेश, आधि
- **वेदना**—स्त्री°—————अधिग्रहण, दौलत, जायदाद
- **वेदना**—स्त्री°—————विवाह
- **वेदारः**—पुं°———वेद + ऋ + अण्—गिरगिट
- **वेदिः**—पुं°———विद् + इन्—विद्वान् पुरुष, ऋषि, पंडित
- **वेदिः**—स्त्री°—————यज्ञकार्य के लिए तैयार की हुई भूमि, वेदी
- **वेदिः**—स्त्री°—————वेदी विशेष जिसके मध्यवर्ती किनारे परस्पर मिले हुए हों
- **वेदिः**—स्त्री°—————किसी मन्दिर या महल का चौकोर सहन
- **वेदिः**—स्त्री°—————मुद्रा-अंगूठी
- **वेदिः**—स्त्री°—————सरस्वती
- **वेदिः**—स्त्री°—————भूखण्ड, प्रदेश
- **वेदी**—स्त्री°—————यज्ञकार्य के लिए तैयार की हुई भूमि, वेदी
- **वेदी**—स्त्री°—————वेदी विशेष जिसके मध्यवर्ती किनारे परस्पर मिले हुए हों
- **वेदी**—स्त्री°—————किसी मन्दिर या महल का चौकोर सहन
- **वेदी**—स्त्री°—————मुद्रा-अंगूठी
- **वेदी**—स्त्री°—————सरस्वती
- **वेदी**—स्त्री°—————भूखण्ड, प्रदेश

- **वेदीजा**—स्त्री°—वेदी-जा——-—द्रौपदी का विशेषण, क्योंकि वह राजा द्रुपद की यज्ञवेदी के मध्य से उत्पन्न हुई थी
- **वेदिका**—स्त्री°——-—वेदी + कन् + टाप्, ह्रस्व—यज्ञभूमि या वेदी
- **वेदिका**—स्त्री°————-—चबूतरा, उच्चसमतलभूमि
- **वेदिका**—स्त्री°————-—आसन
- **वेदिका**—स्त्री°——-—-—वेदी, ढेप, टीला
- **वेदिका**—स्त्री°——-—-—आंगन में बीच में बना चौकर चबूतरा
- **वेदिका**—स्त्री°————-—लतामंडप, निंकुज
- **वेदिन्**—वि°——-—विद् + णिनि—ज्ञाता
- **वेदिन्**—वि°————-—विवाह करने वाला
- **वेदिन**—पुं°————-—जानकर
- **वेदिन**—पुं°————-—अध्यापक
- **वेदिन**—पुं°————-—विद्वान् पुरुष
- **वेदिन**—पुं°————-—ब्राह्मण का विशेषण
- **वेद्य**—वि°——-—विद् + ण्यत्—ज्ञात होने के योग्य
- **वेद्य**—वि°————-—व्याख्येय या शिक्षणीय
- **वेद्य**—वि°————-—विवाहित होने के योग्य
- **वेधः**—पुं°——-—विध् + घञ्—छेद करना, बींधना, छिद्र युक्त करना
- **वेधः**—पुं°——-——घायल करना, घाव
- **वेधः**—पुं°————-—छिद्र, खुदाई या गर्त
- **वेधः**—पुं°————-—(खुदाई की) गहराई
- **वेधकः**—पुं°——-—विध् + ण्वुल्—नरक के एक प्रभाग का नाम
- **वेधकः**—पुं°————-—कर्पूर
- **वेधकम्**—नपुं°————-—बाल में विद्यमान चावल
- **वेधनम्**—नपुं°——-—विध् + ल्युट्—छेदने या बींधने की क्रिया
- **वेधनम्**—नपुं°————-—प्रवेशन, छेदन
- **वेधनम्**—नपुं°————-—शून्यीकरण, वेधन
- **वेधनम्**—नपुं°————-—चुभोना, घायल करना

- **वेधनम्**—नपुं°———–—(खुदाई की) गहराई
- **वेधनिका**—स्त्री°——–—वेधनी + कन् + टाप्, ह्रस्व—हाथी का कान बींधने वाला उपकरण
- **वेधनिका**—स्त्री°———–—एक तेज नोक वाला उपकरण जिससे मणि या सीप व मणि आदि को बींधने वाला उपकरण, बर्मा
- **वेधस्**—पुं°———विधा + असुन्, गुणः—स्रष्टा
- **वेधस्**—पुं°——–—–—ब्रह्मा, विधाता
- **वेधस्**—पुं°——–—–—गौण सृष्टिकर्ता
- **वेधस्**—पुं°———–—शिव
- **वेधस्**—पुं°———–—विष्णु
- **वेधस्**—पुं°———–—सूर्य
- **वेधस्**—पुं°———–—मदार का पौधा
- **वेधस्**—पुं°———–—विद्वान् पुरुष्
- **वेधसम्**—नपुं°——–—वेधस् + अच्—अंगूठे की जड़ के नीचे का हथेली का भाग
- **वेधित**—भू° क° कृ°——–—वेध + इतच्—बींधा हुआ, छिद्रित
- **वेन्ना**—स्त्री°——–——एक नदी का नाम (जो कृष्णा नदी में जाकर मिलती है)
- **वेप्**—भ्वा° आ° <वेपते>, <वेपित>—–——–—कांपना, हिलना, थरथराना, लरजना
- **प्रवेप्**—भ्वा° आ°—प्र-वेप्———थरथराना, धड़कना, कांपना
- **वेपथुः**—पुं°—-—वेप् + अथुच्—थरथरी, कंपकपी, (स्तनों का) हिलना
- **वेपनम्**—नपुं°—-—वेप् + ल्युट्—थरथरी, कंपकपी
- **वेमः**—पुं°———वे + मन्—करघा, खंड्डी
- **वेमन्**—नपुं°———वे + मनिन्—करघा, खंड्डी
- **वेरः**—पुं°———अज् + रन्, वीभावः—शरीर
- **वेरः**—पुं°———अज् + रन्, वीभावः—केसर ज़ाफरान
- **वेरः**—पुं°———अज् + रन्, वीभावः—बैगन
- **वेरम्**—नपुं°—–——शरीर
- **वेरम्**—नपुं°—–——केसर ज़ाफरान
- **वेरम्**—नपुं°—–——बैगन
- **वेरटः**—पुं°———–—नीच पुरुष, छोटी जाति का पुरुष

- **वेरटम्**—नपुं°———–—बेर का फल
- **वेल्**—भ्वा° पर° <वेलति>——–——जाना, हिलना-जुलना
- **वेल्**—भ्वा° पर° <वेलति>——–——हिलना, इधर उधर घूमना, काँपना
- **वेल्**—चुरा° उभ° <वेलयति>, <वेलयते>———–—समय की गणना करना
- **वेलम्**—नपुं°—-—वेल् + अच्—उद्यान, वाटिका
- **वेला**—स्त्री°—-—वेल + टाप्—समय
- **वेला**—स्त्री°———–—ऋतु, अवसर
- **वेला**—स्त्री°———–—विश्राम का अन्तराल, अवकाश
- **वेला**—स्त्री°———–—लहर, प्रवाह, धारा
- **वेला**—स्त्री°———–—समुद्र तट, समुद्री किनारा
- **वेला**—स्त्री°———–—सीमा, हदबन्दी
- **वेला**—स्त्री°———–—भाषण
- **वेला**—स्त्री°———–—बीमारी
- **वेला**—स्त्री°———–—सहज मृत्यु
- **वेला**—स्त्री°———–—मसूड़े
- **वेलाकुलम्**—नपुं°—वेला-कुलम्—-—ताम्रलिप्त नामक जिला
- **वेलामूलम्**—नपुं°—वेला-मूलम्—-—समुद्र-तट
- **वेलावनम्**—नपुं°—वेला-वनम्—-—समुद्रीकिनारे का जंगल
- **वेल्ल्**—भ्वा° पर° <वेल्लति>——–——जाना, हिलना-जुलना
- **वेल्ल्**—भ्वा° पर° <वेल्लति>——–——हिलाना, कांपना, इधर-उधर फिरना
- **वेल्लः**—पुं°—-—वेल्ल् + घञ्—हिलना, गतिशील होना
- **वेल्लः**—पुं°———–—(भूमि पर) लोटना
- **वेल्लनम्**—नपुं°———–—हिलना, गतिशील होना
- **वेल्लनम्**—नपुं°———–—(भूमि पर) लोटना
- **वेल्लहलः**—पुं°—-—वेल्ल + हवल् + अच्, पृषो°—लम्पट, दुराचारी
- **वेल्लिः**—स्त्री°—-—वेल्ल् + इन्—लता, वेल
- **वेल्लित**—भू° क° कृ°—-—वेल्ल् + क्त—कंपायमान, थरथराने वाला, हिलाया हुआ

- **वेल्लित**—भू० क० कृ०—————टेढ़ा-मेढ़ा
- **वेल्लितम्**—नपुं०—————जाना, चलना-फिरना
- **वेल्लितम्**—नपुं०—————हिलना
- **वेवी**—अदा० आ० <वेवीते>—————जाना
- **वेवी**—अदा० आ० <वेवीते>—————प्राप्त करना
- **वेवी**—अदा० आ० <वेवीते>—————गर्भधारण करना, गर्भवति होना
- **वेवी**—अदा० आ० <वेवीते>—————व्याप्त करना
- **वेवी**—अदा० आ० <वेवीते>—————डाल देना, फेंकना
- **वेवी**—अदा० आ० <वेवीते>—————खाना
- **वेवी**—अदा० आ० <वेवीते>—————कामना करना, चाहना
- **वेशः**—पुं०———विश् + घञ्—प्रवेशद्वार
- **वेशः**—पुं०—————अन्तः प्रवेश, पैठना
- **वेशः**—पुं०—————घर, आवासस्थल
- **वेशः**—पुं०—————वेश्याओं का घर, चकला
- **वेशः**—पुं०—————पोशाक, वस्त्र, कपड़े
- **वेशदानम्**—नपुं०—वेशः-दानम्———सूरजमुखी फूल
- **वेशधारिन्**—वि०—वेशः-धारिन्———छद्मवेशी, कपटरूपधारी
- **वेशनारी**—स्त्री०—वेशः-नारी———वेश्या
- **वेशवनिता**—स्त्री०—वेशः-वनिता———वेश्या
- **वेशवासः**—स्त्री०—वेशः-वासः———वेश्याओं का घर, चकला
- **वेशकः**—पुं०———वेश + कन्—घर
- **वेशनम्**—नपुं०———विश् + ल्युट्—प्रवेश करना, प्रवेशद्वार
- **वेशनम्**—नपुं०—————घर
- **वेशन्तः**—पुं०———विश् + झच्—छोटा तालाब, पोखर
- **वेशन्तः**—पुं०—————आग
- **वेशरः**—पुं०———वेश + रा + क—खच्चर
- **वेश्मन्**—नपुं०———विश् + मनिन्—घर, निवासस्थान, आवास, भवन, महल

- **वेश्मकर्मन्**—नपुं°—वेश्मन्-कर्मन्—-—घर बनाना
- **वेश्मकलिङ्गः**—पुं°—वेश्मन्-कलिङ्गः—-—एक प्रकार की चिड़िया
- **वेश्मनकुलः**—पुं°—वेश्मन्-नकुलः—-—छछून्दर
- **वेश्मभूः**—स्त्री°—वेश्मन्-भूः—-—वह स्थान जहाँ घर बनाना है, भवननिर्माण के लिए भूखण्ड
- **वेश्यम्**—नपुं°—-—विश् + ण्यत्, वेशाय हितं वा यत्—वेश्याओं का घर, चकला
- **वेश्या**—स्त्री°—-—वेशेन पण्ययोगेन जीवति-वेश् + यत् + टाप्—बाजारू स्त्री, रंडी, गणिका, रखैल
- **वेश्याचार्यः**—पुं°—वेश्या-आचार्यः—-—वह पुरुष जो वेश्याओं का स्वामी हो, उन्हें रखता हो
- **वेश्याचार्यः**—पुं°—वेश्या-आचार्यः—-—भड़वा
- **वेश्याचार्यः**—पुं°—वेश्या-आचार्यः—-—लौंडा, गाँडू
- **वेश्याश्रयः**—पुं°—वेश्या-आश्रयः—-—वेश्याओं का वासस्थल, चकला
- **वेश्यागमनम्**—नपुं°—वेश्या-गमनम्—-—व्यभिचार, रंडीबाजी
- **वेश्यागृहम्**—नपुं°—वेश्या-गृहम्—-—चकला
- **वेश्याजनः**—पुं°—वेश्या-जनः—-—रंडी
- **वेश्यापणः**—पुं°—वेश्या-पणः—-—भोग के लिए रंडी को दी जाने वाली मजदूरी
- **वेश्वरः**—पुं°—-—-—खच्चर
- **वेष**—पुं°—-—-—प्रवेशद्वार
- **वेष**—पुं°—-—-—अन्तः प्रवेश, पैठना
- **वेष**—पुं°—-—-—घर, आवासस्थल
- **वेष**—पुं°—-—-—वेश्याओं का घर, चकला
- **वेष**—पुं°—-—-—पोशाक, वस्त्र, कपड़े
- **वेषणम्**—नपुं°—-—विष् + ल्युट्—अधिकृत वस्तु, स्वामित्व, कब्जा
- **वेष्ट्**—भ्वा° आ° <वेष्टते>—-—-—घेरना, अहाता बनाना, घेरा डालना, लपेटना
- **वेष्ट्**—भ्वा° आ° <वेष्टते>—-—-—चाबी देना, मरोड़ना
- **वेष्ट्**—भ्वा° आ° <वेष्टते>—-—-—वस्त्र पहनना
- **वेष्ट्**—भ्वा° उभ°, प्रेर° <वेष्टयति>, <वेष्टयते>—-—-—घेरना
- **वेष्ट्**—भ्वा° उभ°, प्रेर° <वेष्टयति>, <वेष्टयते>—-—-—घेराबन्दी डालना
- **आवेष्ट्**—भ्वा° आ°—आ-वेष्ट्—-—तह करना

- **परिवेष्ट्**—भ्वा॰ आ॰—परि-वेष्ट्—-—परस्पर तह करना, लपेटना, मरोड़ना, उमेठना
- **संवेष्ट**—भ्वा॰ आ॰—सम्-वेष्ट्—-—परस्पर तह करना, लपेटना, मरोड़ना, उमेठना
- **वेष्टः**—पुं॰—-—वेष्ठ् + घञ्—घेरा, घिराव
- **वेष्टः**—पुं॰—-—-—बाड़ा, बाड़
- **वेष्टः**—पुं॰—-—-—पगड़ी
- **वेष्टः**—पुं॰—-—-—गोंद, राल, रस
- **वेष्टः**—पुं॰—-—-—तारपीन
- **वेष्टवंशः**—पुं॰—वेष्टः-वंशः—-—एक प्रकार का बाँस
- **वेष्टसारः**—पुं॰—वेष्टः-सारः—-—तारपीन
- **वेष्टकः**—पुं॰—-—वेष्ट् + ण्वुल्—बाड़ा, बाढ़
- **वेष्टकः**—पुं॰—-—-—लौकी
- **वेष्टकम्**—नपुं॰—-—-—पगड़ी
- **वेष्टकम्**—नपुं॰—-—-—चादर, लबादा
- **वेष्टकम्**—नपुं॰—-—-—गोंद, रस
- **वेष्टकम्**—नपुं॰—-—-—तारपीन
- **वेष्टनम्**—नपुं॰—-—वेष्ट् + ल्युट्—लपेटना, चारों ओर से घेरना, घेराबन्दी करना
- **अङ्गुलिवेष्टनम्**—नपुं॰—अङ्गुलि-वेष्टनम्—-—अंगूठी
- **वेष्टनम्**—नपुं॰—-—-—कुंडलित होना, गोल मरोड़ी लेना
- **वेष्टनम्**—नपुं॰—-—-—लिफ़ाफ़ा, लेपटन
- **वेष्टनम्**—नपुं॰—-—-—ओढ़नी, ढकना, संदूक
- **वेष्टनम्**—नपुं॰—-—-—पगड़ी, त्रिमुकुट
- **वेष्टनम्**—नपुं॰—-—-—बाड़ा, घेर
- **वेष्टनम्**—नपुं॰—-—-—तगड़ी, कमरबन्द
- **वेष्टनम्**—नपुं॰—-—-—पट्टी
- **वेष्टनम्**—नपुं॰—-—-—बाहरी कान
- **वेष्टनम्**—नपुं॰—-—-—गुग्गुल
- **वेष्टनम्**—नपुं॰—-—-—नृत्य की विशेष मुद्रा

- **वेष्टनकः**—पुं°—-—वेष्टन + कन्—संभोग के अवसर की विशेष अंगस्थिति
- **वेष्टित**—भू° क° कृ°—-—वेष्ट् + क्त—घिरा हुआ, घेरा हुआ, चारों ओर से लपेटा हुआ, बन्द किया हुआ
- **वेष्टित**—भू° क° कृ°—-—-—लिपटा हुआ, वस्त्रों से सुसज्जित किया हुआ
- **वेष्टित**—भू° क° कृ°—-—-—ठहराया हुआ, रोका हुआ, विघ्न डाला हुआ
- **वेष्टित**—भू° क° कृ°—-—-—घेराबन्दी किया हुआ
- **वेष्पः**—पुं°—-—विषेः पः—जल, पानी
- **वेष्यः**—पुं°—-—विषेः पः—जल, पानी
- **वेष्या**—स्त्री°—-—-—बाजारू स्त्री, रंडी, गणिका, रखैल
- **वेसरः**—पुं°—-—वेस् + अरन्—खच्चर
- **वेसवारः**—पुं°—-—वेस् + वृ + अण्—गर्म मसाला
- **वेशवारः**—पुं°—-—-—गर्म मसाला
- **वेह्**—भ्वा° आ° <वेहते>—-—-—उद्योग करना, चेष्टा करना, प्रयत्न करना
- **वेहत्**—स्त्री°—-—विशेषेण हन्ति गर्भम्-वि + हन् + अति—बांझ गौ
- **वेहारः**—पुं°—-—विहारः, पृषो°—एक देश का नाम, बिहार
- **वेल्ल्**—भ्वा° पर° <वेल्लते>—-—-—जाना, हिलना-जुलना
- **वै**—भ्वा° पर° <वायति>—-—-—सूखना, शुष्क होना
- **वै**—भ्वा° पर° <वायति>—-—-—म्लान, निढाल, अवसन्न
- **वै**—अव्य°—-—वा + डै—स्वीकृति या निश्चयवाचक अव्यय (निःसन्देह, सचमुच, वस्तुतः)
- **वैशतिक**—वि°—-—विंशतिक + अण्—बीस मे मोल लिया हुआ
- **वैकक्षम्**—नपुं°—-—विशेषेण कक्षति व्याप्नोति-अण्—एक माला जो यज्ञोपवीत की भांति एक कंधे के ऊपर से तथा दूसरे कंधे के नीचे से धारण की जाती है
- **वैकक्षम्**—नपुं°—-—-—उत्तरीय वस्त्र, चोगा, ओढ़नी
- **वैकक्षकम्**—नपुं°—-—वैकक्ष + कन्—यज्ञोपवीत की भांति बायें कन्धे के ऊपर तथा दायें कन्धे के नीचे से पहनी जाने वाली माला
- **वैकक्षिकम्**—नपुं°—-—वैकक्ष + ठन्—यज्ञोपवीत की भांति बायें कन्धे के ऊपर तथा दायें कन्धे के नीचे से पहनी जाने वाली माला
- **वैकटिकः**—पुं°—-—-—जौहरी
- **वैकर्तनः**—पुं°—-—विकर्तनस्यापत्यम्-अण्—कर्ण का नाम
- **वैकल्पम्**—नपुं°—-—विकल्प + अण्—ऐच्छिकता

- **वैकल्पम्**—नपुं°—-—विकल्प + अण्—संशय, संदिग्धता
- **वैकल्पम्**—नपुं°—-—विकल्प + अण्—अनिश्चय, असमंजस
- **वैकल्पिक**—वि°—-—विकल्प + ठक्—ऐच्छिक
- **वैकल्पिक**—वि°—-—विकल्प + ठक्—संदिग्ध, ससंशय, अनिश्चित, अनिर्णीत
- **वैकल्यम्**—नपुं°—-—विकल + ष्यञ्—त्रुटि, कमी, अधूरापन्
- **वैकल्यम्**—नपुं°—-—विकल + ष्यञ्—अङ्गभङ्ग, विकलाङ्ग या पंगु होना
- **वैकल्यम्**—नपुं°—-—विकल + ष्यञ्—अक्षमता
- **वैकल्यम्**—नपुं°—-—विकल + ष्यञ्—विक्षोभ, हड़बड़ी, उत्तेजना
- **वैकल्यम्**—नपुं°—-—विकल + ष्यञ्—अनस्तित्व
- **वैकारिक**—वि°—-—विकार + ठक्—विकारविषयक
- **वैकारिक**—वि°—-—विकार + ठक्—विकारशील
- **वैकारिक**—वि°—-—विकार + ठक्—विकृत
- **वैकालः**—पुं°—-—विकाल + अण्— तीसरा पहर, मध्याह्नोत्तर काल, सांयकाल
- **वैकालिक**—वि°—-—विकाल + ठक्—सायंकालसम्बन्धी या सायंकाल के समय घटित होने वाला
- **वैकालीन**—वि°—-—विकाल + ख—सायंकालसम्बन्धी या सायंकाल के समय घटित होने वाला
- **वैकुण्ठः**—पुं°—-—विकुण्ठायां मायायां भवः-अण्—विष्णु का विशेषण
- **वैकुण्ठः**—पुं°—-—विकुण्ठायां मायायां भवः-अण्—इन्द्र का विशेषण
- **वैकुण्ठः**—पुं°—-—विकुण्ठायां मायायां भवः-अण्—तुलसी का पौधा
- **वैकुण्ठम्**—नपुं°—-—-—विष्णु का स्वर्ग
- **वैकुण्ठम्**—नपुं°—-—-—अभ्रक
- **वैकुण्ठचतुर्दशी**—स्त्री°—वैकुण्ठः-चतुर्दशी—-—कार्तिकशुक्ला चौदस
- **वैकुण्ठलोकः**—पुं°—वैकुण्ठः-लोकः—-—विष्णु की दुनिया
- **वैकृत**—वि°—-—विकृत + अण्—परिवर्तित
- **वैकृत**—वि°—-—विकृत + अण्—बदला हुआ
- **वैकृतम्**—नपुं°—-—-—परिवर्तन, अदल-बदल, हेर-फेर
- **वैकृतम्**—नपुं°—-—-—अरुचि, जुगुप्सा, घिनौनापन
- **वैकृतम्**—नपुं°—-—-—अवस्था या सूरत शक्ल में परिवर्तन, विरूपता आदि

- **वैकृतम्**—नपुं॰—-—-—अपशकुन, कोई भी अनिष्टसूचक घटना
- **वैकृतविवर्तः**—पुं॰—वैकृत-विवर्तः—-—दुर्दशा, दयनीय दशा, कष्टग्रस्त
- **वैकृतिक**—वि॰—-—विकृति + ठक्—परिवर्तित, संशोधित
- **वैकृतिक**—वि॰—-—विकृति + ठक्—विकृति सम्बन्धी
- **वैकृत्यम्**—नपुं॰—-—विकृत + ष्यञ्—परिवर्तन, अदल-बदल
- **वैकृत्यम्**—नपुं॰—-—विकृत + ष्यञ्—दुःखद स्थिति, दयनीय दशा
- **वैकृत्यम्**—नपुं॰—-—विकृत + ष्यञ्—जुगुप्सा
- **वैक्रान्तम्**—नपुं॰—-—विक्रान्त्या दीव्यति- विक्रान्ति + अण्—एक प्रकार का रत्न
- **वैक्लवम्**—नपुं॰—-—विक्लव + अण्—गड़बड़ी, विक्षोभ, घबराहट
- **वैक्लवम्**—नपुं॰—-—विक्लव + अण्—हुल्लड़, हलचल
- **वैक्लवम्**—नपुं॰—-—विक्लव + अण्—कष्ट, दुःख, शोक, रंज
- **वैक्लव्यम्**—नपुं॰—-—विक्लव + ष्यञ्—गड़बड़ी, विक्षोभ, घबराहट
- **वैक्लव्यम्**—नपुं॰—-—विक्लव + ष्यञ्—हुल्लड़, हलचल
- **वैक्लव्यम्**—नपुं॰—-—विक्लव + ष्यञ्—कष्ट, दुःख, शोक, रंज
- **वैखरी**—स्त्री॰—-—विशेषेण खं राति- रा + क + अण् + ङीप्—स्पष्ट-उच्चारण, ध्वनि-उत्पादन
- **वैखरी**—स्त्री॰—-—विशेषेण खं राति- रा + क + अण् + ङीप्—वाक्शक्ति
- **वैखरी**—स्त्री॰—-—विशेषेण खं राति- रा + क + अण् + ङीप्—वाणी, भाषण
- **वैखानस**—वि॰—-—वैखानसस्य इदम्-अण्—किसी वानप्रस्थ, सन्यासी, या भिक्षु आदि से सम्बद्ध
- **वैखानसः**—पुं॰—-—-—वैरागी, वानप्रस्थ, तीसरे आश्रम में वास करने वाला ब्राह्मण
- **वैगुण्यम्**—नपुं॰—-—विगुण + ष्यञ्—गुण या विशेषण का अभाव
- **वैगुण्यम्**—नपुं॰—-—विगुण + ष्यञ्—सद्गुणों का अभाव, त्रुटि, दोष, कमी
- **वैगुण्यम्**—नपुं॰—-—विगुण + ष्यञ्—गुणों की भिन्नता, विविधता, विरोधिता
- **वैगुण्यम्**—नपुं॰—-—विगुण + ष्यञ्—घटियापन, तुच्छता
- **वैगुण्यम्**—नपुं॰—-—विगुण + ष्यञ्—अकुशलता
- **वैचक्षण्यम्**—नपुं॰—-—विचक्षण + ष्यञ्—कौशल, निपुणता, प्रवीणता
- **वैचित्यम्**—नपुं॰—-—विचित + ष्यञ्—शोक, मानसिक विकलता, अफसोस
- **वैचित्र्यम्**—नपुं॰—-—विचित्र + ष्यञ्—विविधता, विभिन्नता

- **वैचित्र्यम्**—नपुं°—-—विचित्र + ष्यञ्—बहुविधता
- **वैचित्र्यम्**—नपुं°—-—विचित्र + ष्यञ्—अचरज
- **वैचित्र्यम्**—नपुं°—-—विचित्र + ष्यञ्—विस्मयोत्पादकता
- **वैचित्र्यम्**—नपुं°—-—विचित्र + ष्यञ्—आश्चर्य
- **वैजननम्**—नपुं°—-—विजनन + अण्—गर्भ का अन्तिम मास
- **वैजयन्तः**—पुं°—-—वैजयन्ती + अण्—इन्द्र का महल
- **वैजयन्तः**—पुं°—-—वैजयन्ती + अण्—इन्द्र का झण्डा
- **वैजयन्तः**—पुं°—-—वैजयन्ती + अण्—ध्वज, पताका
- **वैजयन्तः**—पुं°—-—वैजयन्ती + अण्—घर
- **वैजयन्तिकः**—पुं°—-—वैजयन्ती + ठक्—झण्डा उठाने वाला
- **वैजयन्तिका**—स्त्री°—-—वैजयन्ती + कन् + टाप्, ह्रस्व—झण्डा, पताका
- **वैजयन्तिका**—स्त्री°—-—वैजयन्ती + कन् + टाप्, ह्रस्व—एक प्रकार का मोतियों की माला
- **वैजयन्ती**—स्त्री°—-—वि + जि + झच् = विजयन्त + अण् + ङीप्—झंडा, पताका
- **वैजयन्ती**—स्त्री°—-—वि + जि + झच् = विजयन्त + अण् + ङीप्—चिह्न
- **वैजयन्ती**—स्त्री°—-—वि + जि + झच् = विजयन्त + अण् + ङीप्—माला, हार
- **वैजयन्ती**—स्त्री°—-—वि + जि + झच् = विजयन्त + अण् + ङीप्—विष्णु का हार
- **वैजयन्ती**—स्त्री°—-—वि + जि + झच् = विजयन्त + अण् + ङीप्—एक शब्दकोश का नाम
- **वैजात्यम्**—नपुं°—-—विजात + ष्यञ्—जाति या प्रकार की भिन्नता
- **वैजात्यम्**—नपुं°—-—विजात + ष्यञ्—जाति या वर्ण की भिन्नता
- **वैजात्यम्**—नपुं°—-—विजात + ष्यञ्—अचरज
- **वैजात्यम्**—नपुं°—-—विजात + ष्यञ्—जातिबहिष्कार
- **वैजात्यम्**—नपुं°—-—विजात + ष्यञ्—बदचलनी, स्वेच्छाचारिता
- **वैजिक**—वि°—-—वीज + ठक्—वीर्यसंबंधी
- **वैजिक**—वि°—-—वीज + ठक्—मौलिक
- **वैजिक**—वि°—-—वीज + ठक्—गर्भविषयक
- **वैजिक**—वि°—-—वीज + ठक्—मैथुनसंबंधी
- **वैजिकः**—पुं°—-—वीज + ठक्—अंखुवा, नया अंकुर

- **वैजिकम्**—नपुं°——वीज + ठक्—कारण, स्रोत, मूल
- **वैज्ञानिक**—वि°——विज्ञान + ठक्—चतुर, कुशल, प्रवीण
- **वैडाल**—वि°——विडाल + अण्—बिलाव से संबंध रखने वाला
- **वैडाल**—वि°——विडाल + अण्—बिलाव की विशिष्टता को रखने वाला
- **वैणः**—पुं°——वेणु + अण्, उकारस्य लोपः—बाँस का कार्य करने वाला
- **वैणव**—वि°——वेणु + अण्—बाँस से उत्पन्न या बाँस का बना हुआ
- **वैणवः**—पुं°————बाँस की छड़ी
- **वैणवः**—पुं°————बाँस का कार्य करने वाला, बँसोड़
- **वैणवी**—स्त्री°————वंसलोचन
- **वैणवम्**—नपुं°————बाँस का फल या बीज
- **वैणविकः**—पुं°——वैणव + ठक्—मुरली बजाने वाला, बाँसुरी बजाने वाला
- **वैणविन्**—पुं°——वैणव + इनि—शिव की उपाधि
- **वैणिकः**—पुं°——वीणा + ठक्—वीणा बजाने वाला
- **वैणुकः**—पुं°——वैणुक + अण्—मुरली बजाने वाला, बाँसुरी बजाने वाला
- **वैणुकम्**—नपुं°————अंकुश
- **वैतंसिकः**—पुं°——वितंस + ठक्—मांस विक्रेता
- **वैतण्डिकः**—पुं°——वितण्डा + ठक्—वितंडावादी, व्यर्थ विवाद करने वाला, छिद्रान्वेषी
- **वैतनिक**—वि°——वेतन + ठक्—वेतन से निर्वाह करने वाला
- **वैतनिकः**—पुं°————वेतन लेकर काम करने वाला, श्रमिक
- **वैतनिकः**—पुं°————वेतन भोगी (कर्मचारी)
- **वैतरणिः**—स्त्री°——वितरेणन दानेन लंघ्यते, पक्षे पृषो° ह्रस्वः—नरक की नदी का नाम
- **वैतरणिः**—स्त्री°——वितरेणन दानेन लंघ्यते, पक्षे पृषो° ह्रस्वः—कलिङ्ग देश की नदी का नाम
- **वैतरणी**—स्त्री°——वितरेणन दानेन लंघ्यते-वितरण + अण् + ङीप्—नरक की नदी का नाम
- **वैतरणी**—स्त्री°——वितरेणन दानेन लंघ्यते-वितरण + अण् + ङीप्—कलिङ्ग देश की नदी का नाम
- **वैतस**—वि°——वेतस + अण्—बेंत से संबन्ध रखने वाला
- **वैतस**—वि°————नरकुल जैसा अर्थात् अपने से अधिकशक्तिशाली शत्रु के सामने घुटने टेक देने वाला
- **वैतान**—वि°——वितान + अण्—यज्ञीय, पवित्र

- **वैतानम्**—नपुं°—————यज्ञीय कृत्य
- **वैतानम्**—नपुं°—————यज्ञीय आहुति
- **वैतानिक**—वि°———वितान + ठक्—यज्ञीय, पवित्र
- **वैतालिकः**—पुं°———विविधस्तालस्तेन व्यवहरति-ठक्—भाट, चारण
- **वैतालिकः**—पुं°———विविधस्तालस्तेन व्यवहरति-ठक्—जादूगर, बाजीगर, विशेषकर वह जो वेताल का भक्त हो
- **वैत्रक**—वि°———वेत्र + वुञ्—बेंत से युक्त, नरकुल का
- **वैदः**—पुं°———वेद + अण्—बुद्धिमान् मनुष्य, विद्वान् पुरुष
- **वैदग्धम्**—नपुं°———विदग्ध + अण्—कौशल, दक्षता, प्रवीणता, निपुणता
- **वैदग्धम्**—नपुं°———विदग्ध + अण्—क्रमस्थापन में कौशल, सौन्दर्य
- **वैदग्धम्**—नपुं°———विदग्ध + अण्—बुद्धिमत्ता, स्फूर्ति, चतुराई @ रत्न° २
- **वैदग्धम्**—नपुं°———विदग्ध + अण्—बुद्धि
- **वैदग्धी**—स्त्री°———वैदग्ध + ङीप्—कौशल, दक्षता, प्रवीणता, निपुणता
- **वैदग्धी**—स्त्री°———वैदग्ध + ङीप्—क्रमस्थापन में कौशल, सौन्दर्य
- **वैदग्धी**—स्त्री°———वैदग्ध + ङीप्—बुद्धिमत्ता, स्फूर्ति, चतुराई @ रत्न° २
- **वैदग्धी**—स्त्री°———वैदग्ध + ङीप्—बुद्धि
- **वैदग्ध्यम्**—नपुं°———विदग्ध + ष्यञ्—कौशल, दक्षता, प्रवीणता, निपुणता
- **वैदग्ध्यम्**—नपुं°———विदग्ध + ष्यञ्—क्रमस्थापन में कौशल, सौन्दर्य
- **वैदग्ध्यम्**—नपुं°———विदग्ध + ष्यञ्—बुद्धिमत्ता, स्फूर्ति, चतुराई @ रत्न° २
- **वैदग्ध्यम्**—नपुं°———विदग्ध + ष्यञ्—बुद्धि
- **वैदर्भः**—पुं°———विदर्भ + अण्—विदर्भ देश का राजा
- **वैदर्भी**—स्त्री°—————दमयन्ती
- **वैदर्भी**—स्त्री°—————रुक्मिणी
- **वैदर्भी**—स्त्री°—————रचना की विशेष शैली
- **वैदल**—वि°———विदलस्य विकारः विदल + अण्—बेंत या टहनियों से बनाया हुआ
- **वैदलः**—पुं°—————एक प्रकार की रोटी
- **वैदलः**—पुं°—————कोई भी दाल का अनाज
- **वैदलम्**—नपुं°—————भिक्षुओं का कामगहरा भिक्षापात्र

- **वैदलम्**—नपुं°———-—बाँस या टहनियों की बनी डलिया, या आसन
- **वैदिक**—वि°——वेदं वेत्त्यधीते वा ठञ् वेदेषु विहितः वेद + ठक्—वेदों से व्युत्पन्न या वेदों के समनुरूप, वेदविषयक
- **वैदिक**—वि°——वेदं वेत्त्यधीते वा ठञ् वेदेषु विहितः वेद + ठक्—पवित्र, वेदविहित, धर्मात्मा
- **वैदिकः**—पुं°——-—वेदों में निष्णात ब्राह्मण
- **वैदिकपाशः**—पुं°—वैदिकः-पाशः—-—वेद का अल्पज्ञान रखने वाला, कठज्ञानी, जिसे वेद का अधूरा ज्ञान हो
- **वैदुषी**—स्त्री°—-—विद्वस् + अण् + ङीप्—ज्ञान, अधिगम, बुद्धिमत्ता
- **वैदुष्यम्**—नपुं°—-—विद्वस् + ष्यञ्—ज्ञान, अधिगम, बुद्धिमत्ता
- **वैदूर्य**—वि°——विदूर + ष्यञ्—विदूर से उत्पन्न या लाया गया
- **वैदूर्यम्**—नपुं°——-—वैदूर्य मणि, नीलम
- **वैदशिक**—वि°—-—विदेश + ठञ्—दूसरे देश से संबंध रखने वाला, अन्य देश का, और देशों से लाया हुआ
- **वैदशिकः**—पुं°——-—अन्य देश का व्यक्ति, विदेशी
- **वैदेश्यम्**—नपुं°—-—विदेश + ष्यञ्—विदेशीपन, विदेशी होना
- **वैदेहः**—पुं°——विदेह् + अण्—विदेह देश का राजा
- **वैदेहः**—पुं°——विदेह् + अण्—विदेह का रहने वाला
- **वैदेहः**—पुं°——विदेह् + अण्—व्यापारी वैश्य
- **वैदेहः**—पुं°——विदेह् + अण्—ब्राह्मण स्त्री में वैश्य पुरुष से उत्पन्न सन्तान
- **वैदही**—स्त्री°—-—-—सीता
- **वैदहकः**—पुं°—-—वैदेह + कन्—व्यापारी
- **वैदहकः**—पुं°——वैदेह + कन्—ब्राह्मण स्त्री में वैश्य पुरुष से उत्पन्न सन्तान
- **वैदेहिकः**—पुं°——विदेह + ठक्—सौदागर
- **वैद्य**—वि° ——वेद + यत्—वेद सम्बन्धी, आध्यात्मिक
- **वैद्य**—वि° ——वेद + यत्—आयुर्वेद सम्बन्धी, आयुर्वेद विषयक
- **वैद्यः**—पुं°——विद्या अस्ति अस्य-विद्या + अण्—विद्वान् पुरुष, विद्यावान्, पण्डित
- **वैद्यः**—पुं°—-—विद्या अस्ति अस्य-विद्या + अण्—आयुर्वेदाचार्य, चिकित्सक
- **वैद्यः**—पुं°—-—विद्या अस्ति अस्य-विद्या + अण्—वैद्य जाति का पुरुष, जो वर्णसङ्कर समझा जाता है
- **वैद्यक्रिया**—स्त्री°—वैद्यः-क्रिया—-—वैद्य का व्यवसाय, चिकित्सक के रूप में अभ्यास
- **वैद्यनाथः**—पुं°—वैद्यः - नाथः—-—धन्वन्तरि

- **वैद्यनाथः**—पुं॰—वैद्यः - नाथः—-—शिव
- **वैद्यकः**—पुं॰—-—वैद्य + कन्—वैद्य, चिकित्सक
- **वैद्यकम्**—नपुं॰—-—-—चिकित्साविज्ञान
- **वैद्युत**—वि॰—-—विद्युत + अण्—बिजली से सम्बद्ध या उत्पन्न, बिजली
- **बैद्युताग्निः**—पुं॰—बैद्युत-अग्निः—-—बिजली की आग
- **बैद्युतानलः**—पुं॰—बैद्युत-अनलः—-—बिजली की आग
- **बैद्युतवह्निः**—पुं॰—बैद्युत-वह्निः—-—बिजली की आग
- **वैध**—वि॰—-—विधि + अण्—नियम के अनुरूप, व्यवस्थित, निश्चित, कर्मकाण्डविषयक
- **वैध**—वि॰—-—विधि + अण्—क़ानूनी, विधि या क़ानून सम्मत
- **वैधिक**—वि॰—-—विधि + ठक्—नियम के अनुरूप, व्यवस्थित, निश्चित, कर्मकाण्डविषयक
- **वैधिक**—वि॰—-—विधि + ठक्—क़ानूनी, विधि या क़ानून सम्मत
- **वैधर्म्यम्**—नपुं॰—-—विधर्म + ष्यञ्—असमानता, भिन्नता
- **वैधर्म्यम्**—नपुं॰—-—विधर्म + ष्यञ्—लक्षण गुणों का अन्तर
- **वैधर्म्यम्**—नपुं॰—-—विधर्म + ष्यञ्—कर्तव्य या आभार का अन्तर
- **वैधर्म्यम्**—नपुं॰—-—विधर्म + ष्यञ्—वैपरीत्य
- **वैधर्म्यम्**—नपुं॰—-—विधर्म + ष्यञ्—अवैधता, अनौचित्य, अन्याय
- **वैधर्म्यम्**—नपुं॰—-—विधर्म + ष्यञ्—पाखण्ड
- **वैधवेयः**—पुं॰—-—विधवा + ढक्—विधवा का पुत्र
- **वैधव्यम्**—नपुं॰—-—विधवा + ष्यञ्—विधवापन
- **वैधुर्यम्**—नपुं॰—-—विधुर + ष्यञ्—शोकावस्था
- **वैधुर्यम्**—नपुं॰—-—विधुर + ष्यञ्—विक्षोभ थरथरी, सिहरन
- **वैधेय**—वि॰—-—विधि + ढक्—नियमानुकूल, विहित
- **वैधेय**—वि॰—-—विधि + ढक्—मूर्ख, बुद्धू, जड
- **वैधेयः**—पुं॰—-—-—मूढ, जडमति
- **वैनतेयः**—पुं॰—-—विनता + ढक्—गरुड
- **वैनतेयः**—पुं॰—-—विनता + ढक्—अरुण
- **वैनयिक**—वि॰—-—विनय + ठक्—शिष्टता, सौजन्य, सदाचरण या अनुशासनसम्बन्धी

- **वैनयिक**—वि°——विनय + ठक्—शिष्टाचार का व्यवहार करने वाला
- **वैनयिकः**—पुं°————सामरिक रथ
- **वैनायक**—वि°——विनायक + अण्—गणेशसम्बन्धी
- **वैनायिकः**—पुं°——विनायं खण्डनमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः - विनाय + ठक्—बौद्ध संप्रदाय के दर्शन-सिद्धान्त
- **वैनायिकः**—पुं°——विनायं खण्डनमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः - विनाय + ठक्—उस सम्प्रदाय का अनुयायी
- **वैनाशिकः**—पुं°——विनाश + ठक्—दास
- **वैनाशिकः**—पुं°——विनाश + ठक्—मकड़ी
- **वैनाशिकः**—पुं°——विनाश + ठक्—ज्योतिषी
- **वैनाशिकः**—पुं°——विनाश + ठक्—बौद्धों के सिद्धान्त
- **वैनाशिकः**—पुं°——विनाश + ठक्—उन सिद्धान्तों का अनुयायी
- **वैनीतक**—नपुं°————गाड़ी, सवारी (डोली आदि)
- **वैनीतक**—नपुं°————ले जाने वाला, वाहक
- **वैपरीत्यम्**—नपुं°——विपरीत + ष्यञ्—विरोधिता, विरोध
- **वैपरीत्यम्**—नपुं°——विपरीत + ष्यञ्—असंगति
- **वैपुल्यम्**—नपुं°——विपुल + ष्यञ्—विस्तार, विशालता
- **वैपुल्यम्**—नपुं°——विपुल + ष्यञ्—पुष्कलता, बहुतायत
- **वैफल्यम्**—नपुं°——विफल + ष्यञ्—निरर्थकता, विफलता
- **वैबोधिकः**—पुं°——विबोध + ठक्—चौकीदार
- **वैबोधिकः**—पुं°——विबोध + ठक्—विशेषकर वह जो रात में सोने वालों को, पहरा देते समय, समय की घोषणा करके जगाता रहता है
- **वैभवम्**—नपुं°——विभु + अण्—बड़प्पन, यश, महिमा, चमक-दमक, ठाठ-बाट, दौलत
- **वैभवम्**—नपुं°——विभु + अण्—शक्ति, ताकत
- **वैभाषिक**—वि°——विभाषा + ठक्—ऐच्छिक, वैकल्पिक
- **वैभ्रम्**—नपुं°————विष्णु का वैकुण्ड
- **वैमत्यम्**—नपुं°——विमत + ष्यञ्—मतभेद, अनबन
- **वैमत्यम्**—नपुं°——विमत + ष्यञ्—नापसंदगी, अरुचि
- **वैमनस्यम्**—नपुं°——विमनस् + ष्यञ्—मन का उचटना, मानसिक अवसाद, शोक, उदासी
- **वैमनस्यम्**—नपुं°——विमनस् + ष्यञ्—रोग

- **वैमात्रः**—पुं°—–—विमातृ + अण्—सौतेली माँ का बेटा
- **वैमात्रेयी**—स्त्री°—–—विमातृ + ढक्—सौतेली माँ का बेटा
- **वैमात्रा**—स्त्री°—–—वैमात्र + टाप्—सौतेली माँ का बेटी
- **वैमात्री**—स्त्री°—–—वैमात्र + ङीप्—सौतेली माँ का बेटी
- **वैमात्रेयी**—स्त्री°—–—वैमात्रेय + ङीप्—सौतेली माँ का बेटी
- **वैमानिक**—वि° —–—विमान + ठक्—देवयान में आसीन
- **वैमानिकः**—पुं°—–—–—गगनविहारी
- **वैमुख्यम्**—नपुं°—–—विमुख + ष्यञ्—मुँह मोड़ना, पलायन, प्रत्यावर्तन
- **वैमुख्यम्**—नपुं°—–—विमुख + ष्यञ्—अरुचि, जुगुप्सा
- **वैमेयः**—पुं°—–—विमेय + अण्—बदला, विनिमय
- **वैयग्रम्**—नपुं°—–—व्यग्र + अण्—व्यग्रता, बेचैनी, घबराहट
- **वैयग्रम्**—नपुं°—–—व्यग्र + अण्—अनन्य भक्ति, तल्लीनता
- **वैयग्र्यम्**—नपुं°—–—व्यग्र + ष्यञ्—व्यग्रता, बेचैनी, घबराहट
- **वैयग्र्यम्**—नपुं°—–—व्यग्र + ष्यञ्—अनन्य भक्ति, तल्लीनता
- **वैयर्थ्यम्**—नपुं°—–—व्यर्थ + ष्यञ्—व्यर्थता, अनुत्पादकता
- **वैयधिकरण्यम्**—नपुं°—–—व्यधिकरण + ष्यञ्—भिन्न स्थानों में होने का भाव
- **वैयाकरण**—वि°—–—व्याकरणमधीते वेत्ति वा -अण्—व्याकरणविषयक, व्याकरणसंबन्धी
- **वैयाकरणः**—पुं°—–—–—व्याकरण जानने वाला
- **वैयाकरणपाशः**—पुं°—वैयाकरणः-पाशः—–—जिसे व्याकरण का अच्छा ज्ञान न हो
- **वैयाकरणभार्यः**—पुं°—वैयाकरणः-भार्यः—–—जिसकी पत्नी व्याकरण को जानने वाली हो
- **वैयाघ्र**—वि°—–—व्याघ्र + अञ्—चीते की तरह का
- **वैयाघ्र**—वि°—–—व्याघ्र + अञ्—चीते की खाल से ढका हुआ
- **वैयाघ्रः**—पुं°—–—व्याघ्र + अञ्—चीते की खाल से ढकी हुई गाड़ी
- **वैयात्यम्**—नपुं°—–—वियात + ष्यञ्—साहस, अविनय, निर्लज्जता
- **वैयात्यम्**—नपुं°—–—वियात + ष्यञ्—उजड्डपन, अक्खड़पन
- **वैयासिकः**—पुं°—–—व्यासस्य अपत्यम्, व्यास + इञ्, अकङ् आदेशः, यकारात् पूर्व ऐच्—व्यास का पुत्र
- **वैरम्**—नपुं°—–—वीरस्य भावः-अण्—विरोध, शत्रुता, दुश्मनी वैमनस्य, द्रोह, प्रतिपक्ष, कलह

- **वैरम्**—नपुं०—-—वीरस्य भावः-अण्—घृणा, प्रतिहिंसा
- **वैरम्**—नपुं०—-—वीरस्य भावः-अण्—शूरवीरता, पराक्रम
- **वैरानुबन्धः**—पुं०—वैरम्-अनुबन्धः—-—शत्रुता का आरंभ
- **वैरानुबन्धिन्**—वि०—वैरम्-अनुबन्धिन्—-—शत्रुता की ओर ले जाने वाला
- **वैरातङ्कः**—पुं०—वैरम्-आतङ्कः—-—अर्जुनवृक्ष
- **वैरानृण्यम्**—स्त्री०—वैरम्-आनृण्यम्—-—शत्रुता का बदला, बदला देना, प्रतिहिंसा
- **वैरोद्धारः**—स्त्री०—वैरम्-उद्धारः—-—शत्रुता का बदला, बदला देना, प्रतिहिंसा
- **वैरनिर्यातनम्**—स्त्री०—वैरम्-निर्यातनम्—-—शत्रुता का बदला, बदला देना, प्रतिहिंसा
- **वैरप्रतिक्रिया**—स्त्री०—वैरम्-प्रतिक्रिया—-—शत्रुता का बदला, बदला देना, प्रतिहिंसा
- **वैरप्रतीकारः**—स्त्री०—वैरम्-प्रतीकारः—-—शत्रुता का बदला, बदला देना, प्रतिहिंसा
- **वैरयातना**—स्त्री०—वैरम्-यातना—-—शत्रुता का बदला, बदला देना, प्रतिहिंसा
- **वैरशुद्धिः**—स्त्री०—वैरम्-शुद्धिः—-—शत्रुता का बदला, बदला देना, प्रतिहिंसा
- **वैरसाधनम्**—नपुं०—वैरम्-साधनम्—-—शत्रुता का बदला, बदला देना, प्रतिहिंसा
- **वैरकरः**—पुं०—वैरम्-करः—-—शत्रु
- **वैरकारः**—पुं०—वैरम्-कारः—-—शत्रु
- **वैरकृत्**—पुं०—वैरम्-कृत्—-—शत्रु
- **वैरभावः**—पुं०—वैरम्-भावः—-—शत्रुतापूर्ण रवैया
- **वैररिक्षिन्**—वि०—वैरम्-रक्षिन्—-—शत्रुता का निवारण करने वाला
- **वैरक्तम्**—नपुं०—-—विरक्त + अण्—सांसारिक आसक्तियों के प्रति उदासीनता, इच्छा का अभाव
- **वैरक्तम्**—नपुं०—-—विरक्त + अण्—अप्रसन्नता, नापसन्दगी, अरुचि
- **वैरक्त्यम्**—नपुं०—-—विरक्त + ष्यञ्—सांसारिक आसक्तियों के प्रति उदासीनता, इच्छा का अभाव
- **वैरक्त्यम्**—नपुं०—-—विरक्त + ष्यञ्—अप्रसन्नता, नापसन्दगी, अरुचि
- **वैरङ्गिकः**—पुं०—-—विरङ्गं विरागं नित्यमर्हति ठक्—जिसने अपनी सब इच्छाओं एवं वासनाओं का दमन कर दिया है, संन्यासी, वैरागी
- **वैरल्यम्**—नपुं०—-—विरल + ष्यञ्—न्यूनता, विरलता
- **वैरल्यम्**—नपुं०—-—विरल + ष्यञ्—ढीलापन
- **वैरल्यम्**—नपुं०—-—विरल + ष्यञ्—मृदुता
- **वैरागम्**—नपुं०—-—-—सांसारिक वासनाओं व इच्छाओं का अभाव, सांसारिक बंधनों से उदासीनता, विरक्ति

- **वैरागम्**—नपुं°———–—असंतृप्ति, अप्रसन्नता, असंतोष
- **वैरागम्**—नपुं°———–—अरुचि, नापसन्दगी
- **वैरागम्**—नपुं°———–—रंज, शोक, अफ़सोस
- **वैरागिकः**—पुं°—–—विराग + ठक् —वह संन्यासी जिसने अपनी सब इच्छाओं और वासनाओं का दमन कर लिया है
- **वैरागिन्**—पुं°—-—विराग + अण् + इनि—वह संन्यासी जिसने अपनी सब इच्छाओं और वासनाओं का दमन कर लिया है
- **वैराग्यम्**—नपुं°—-—विरागस्य भावः-ष्यञ्—सांसारिक वासनाओं व इच्छाओं का अभाव, सांसारिक बंधनों से उदासीनता, विरक्ति
- **वैराग्यम्**—नपुं°—-—विरागस्य भावः-ष्यञ्—असंतृप्ति, अप्रसन्नता, असंतोष
- **वैराग्यम्**—नपुं°—-—विरागस्य भावः-ष्यञ्—अरुचि, नापसन्दगी
- **वैराग्यम्**—नपुं°—-—विरागस्य भावः-ष्यञ्—रंज, शोक, अफ़सोस
- **वैराज**—वि°—-—विराज् + अण्—ब्रह्मासंबंधी
- **वैराट**—वि°—-—विराट + अण्—विराट संबंधी
- **वैराटः**—पुं°———–—एक प्रकार का मिट्टी का कीड़ा, इन्द्रगोप
- **वैरिन्**—वि°—–—वैर + इनि—विरोधी, शत्रुतापूर्ण
- **वैरिन्**—पुं°———–—शत्रु
- **वैरूप्यम्**—नपुं°—–—विरूप + ष्यञ्—विरूपता, कुरूपता
- **वैरोचनः**—पुं°—–—विरोचनस्यापत्यम् अण्—विरोचन के पुत्र बलि राक्षस के विशेषण
- **वैरोचनिः**—पुं°—-—विरोचनस्यापत्यम् इञ्—विरोचन के पुत्र बलि राक्षस के विशेषण
- **वैरोचिः**—पुं°—-—विरोच + घञ्—विरोचन के पुत्र बलि राक्षस के विशेषण
- **वैलक्षण्यम्**—नपुं°—–—विलक्षणस्य भावः-ष्यञ्—आश्चर्य
- **वैलक्षण्यम्**—नपुं°—–—विलक्षणस्य भावः-ष्यञ्—वैपरीत्य, विरोध
- **वैलक्षण्यम्**—नपुं°—–—विलक्षणस्य भावः-ष्यञ्—अन्तर, भेद
- **वैलक्ष्यम्**—नपुं°—–—विलक्ष + ष्यञ्—उलझन, गड़बड़ी
- **वैलक्ष्यम्**—नपुं°—–—विलक्ष + ष्यञ्—अस्वाभाविकता, कृत्रिमता
- **वैलक्ष्यम्**—नपुं°—–—विलक्ष + ष्यञ्—लज्जा
- **वैलक्ष्यम्**—नपुं°—–—विलक्ष + ष्यञ्—वैपरीत्य, व्यत्क्रम्
- **वैलोम्यम्**—नपुं°—–—विलोम + ष्यञ्—विरोध, व्युत्क्रम्, वैपरीत्य
- **वैल्व**—वि°—–—विल्व + अण्—बेल के वृक्ष या लकड़ी से संबद्ध या निर्मित

- **वैल्व**—वि°—-—विल्व + अण्—बेल के पेड़ों से ढका हुआ
- **वैल्वम्**—नपुं°—-—विल्व + अण्—बेल के पेड़ का फल
- **वैवधिकः**—पुं°—-—विवध + ठक्—फेरी वाला, आवाज लगा कर बेचने वाला
- **वैवधिकः**—पुं°—-—विवध + ठक्—(बहँगो में रख कर) भार ढोने वाला
- **वैवर्ण्यम्**—नपुं°—-—विवर्णस्यः भावः-ष्यञ्—रंग या चेहरे की आभा का परिवर्तन, फीकापन, निष्प्रभता
- **वैवर्ण्यम्**—नपुं°—-—विवर्णस्यः भावः-ष्यञ्—विभिन्नता, विविधता
- **वैवर्ण्यम्**—नपुं°—-—विवर्णस्यः भावः-ष्यञ्—जाति से विचलना
- **वैवस्वतः**—पुं°—-—विवस्वतोऽपत्यम् अण्—सातवाँ
- **वैवस्वतः**—पुं°—-—विवस्वतोऽपत्यम् अण्—यम
- **वैवस्वतः**—पुं°—-—विवस्वतोऽपत्यम् अण्—शनिग्रह
- **वैवस्वतम्**—नपुं°—-—-—विवस्वान् के पुत्र सातवें मनु, द्वारा अधिष्ठित वर्तमान युग या मन्वन्तर
- **वैवस्वती**—स्त्री°—-—वैवस्वत + ङीप्—दक्षिण दिशा
- **वैवस्वती**—स्त्री°—-—-—यमुना नदी
- **वैवहिक**—वि°—-—विवाह + ठञ्—विवाहसंबंधी, विवाहविषयक, विवाह के कारण होने वाला
- **वैवहिकः**—पुं°—-—-—विवाह, शादी
- **वैवहिकम्**—नपुं°—-—-—विवाह, शादी
- **वैवहिकः**—पुं°—-—-—पुत्र वधू का श्वसुर, या दामाद का श्वसुर
- **वैशद्यम्**—नपुं°—-—विशद + ष्यञ्—स्वच्छता, निर्मलता
- **वैशद्यम्**—नपुं°—-—विशद + ष्यञ्—स्पष्टता
- **वैशद्यम्**—नपुं°—-—विशद + ष्यञ्—सफेदी
- **वैशद्यम्**—नपुं°—-—विशद + ष्यञ्—शान्ति (मन की) स्वस्थता
- **वैशसम्**—नपुं°—-—विशस + अण्—विनाश, हत्या, वध
- **वैशसम्**—नपुं°—-—विशस + अण्—दुःख, सन्ताप, पीड़ा, कष्ट, कठिनाई
- **वैशस्त्रम्**—नपुं°—-—विशस्त्र + अण्—असुरक्षा
- **वैशस्त्रम्**—नपुं°—-—विशस्त्र + अण्—राजकीय शासन
- **वैशाखः**—पुं°—-—विशाख + अण्—चान्द्रवर्ष का दूसरा महीना (अप्रैल-मई)
- **वैशाखः**—पुं°—-—विशाख + अण्—रई का डण्डा

- **वैशाखम्**—नपुं°————बाण चलते समय की एक मुद्रा
- **वैशाखी**—स्त्री°————वैशाख मास की पूर्णिमा
- **वैशिक**—वि° ——वेशेन जीवति-वेश + ठक्—वेश्याओं द्वारा अभ्यस्त
- **वैशिकः**—पुं°————जो वेश्याओं के साहचर्य में रहता है, शृङ्गार-साहित्य में पाया जाने वाला एक नायक
- **वैशिकम्**—नपुं°————वेश्यावृत्ति, वेश्याओं की कलाएँ
- **वैशिष्ट्यम्**—नपुं°——विशिष्ट + ष्यञ्—भेद, अन्तर
- **वैशिष्ट्यम्**—नपुं°——विशिष्ट + ष्यञ्—विशिष्टता, विशेषता, अनूठापन
- **वैशिष्ट्यम्**—नपुं°——विशिष्ट + ष्यञ्—श्रेष्ठता
- **वैशिष्ट्यम्**—नपुं°——विशिष्ट + ष्यञ्—विशिष्टलक्षणसम्पन्नता
- **वैशेषिक**—वि°——विशेषं पदार्थभेदमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः-विशेष + ठक्— विशेषता युक्त
- **वैशेषिक**—वि°——विशेषं पदार्थभेदमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः-विशेष + ठक्—वैशेषिक दर्शन के सिद्धान्तों से संबंध रखने वाला
- **वैशेषिकम्**—नपुं°————छः हिन्दूदर्शनशास्त्रों में से एक दर्शन जिसके प्रणेता कणाद थे
- **वैशेष्यम्**—नपुं°——विशेष + ष्यञ्—श्रेष्ठता, प्रमुखता, सर्वोत्तमता
- **वैश्यः**—पुं°——विश + ष्यञ्—तृतीय वर्ण का पुरुष, इसका व्यवसाय व्यापार और कृषि है
- **वैश्यकर्मन्**—नपुं°—वैश्यः-कर्मन्——वैश्य का व्यवसाय या पेशा, व्यापार, खेती आदि
- **वैश्यवृत्तिः**—स्त्री°—वैश्यः-वृत्तिः——वैश्य का व्यवसाय या पेशा, व्यापार, खेती आदि
- **वैश्रवणः**—पुं°——विश्रवणस्यापत्यम्-अण्—धन का स्वामी कुबेर
- **वैश्रवणः**—पुं°——विश्रवणस्यापत्यम्-अण्—रावण का नाम
- **वैश्रवणालयः**—पुं°—वैश्रवणः-आलयः——कुबेर का आवासस्थल
- **वैश्रवणालयः**—पुं°—वैश्रवणः-आलयः——बड़ का वृक्ष
- **वैश्रवणावासः**—पुं°—वैश्रवणः-आवासः——कुबेर का आवासस्थल
- **वैश्रवणावासः**—पुं°—वैश्रवणः-आवासः——बड़ का वृक्ष
- **वैश्रवणोदयः**—पुं°—वैश्रवणः-उदयः——बड़ का पेड़
- **वैश्वदेव**—वि°——विश्वदेव + अण्—विश्वेदेवों से सम्बन्ध रखने वाला
- **वैश्वदेवम्**—नपुं°————विश्वेदेवों को प्रस्तुत किया गया उपहार
- **वैश्वदेवम्**—नपुं°————सभी देवताओं को भेंट (भोजन करने से पूर्व विश्वदेव यज्ञ में आहुति देकर)
- **वैश्वानरः**—पुं°——विश्वानर + अण्—अग्नि का विशेषण

- **वैश्वानरः**—पुं°—-—विश्वानर + अण्—जठराग्नि
- **वैश्वानरः**—पुं°—-—विश्वानर + अण्—परमात्मा
- **वैश्वासिक**—वि°—-—विश्वास + ठक्—विश्वसनीय, गोपनीय
- **वैषम्यम्**—नपुं°—-—विषम + ष्यञ्—असमता
- **वैषम्यम्**—नपुं°—-—विषम + ष्यञ्—खुददरापना, कठोरता
- **वैषम्यम्**—नपुं°—-—विषम + ष्यञ्—असमानता
- **वैषम्यम्**—नपुं°—-—विषम + ष्यञ्—अन्याय
- **वैषम्यम्**—नपुं°—-—विषम + ष्यञ्—कठिनाई, विपत्ति, संकट
- **वैषम्यम्**—नपुं°—-—विषम + ष्यञ्—एकाकीपन
- **वैषयिक**—वि°—-—विषय + ठक्—किसी पदार्थ - सम्बन्धी
- **वैषयिक**—वि°—-—विषय + ठक्—विषयों से सम्बन्ध रखने वाला, वासनात्मक, शारीरिक
- **वैषयिकः**—पुं°—-—-—कामी, लम्पट
- **वैष्टुतम्**—नपुं°—-—विष्टुत्या निर्वृत्तम्-विष्टुति + अण्—भस्मीकृत आहुतियों की राख
- **वैष्ट्रः**—पुं°—-—विश + ष्ट्रन्, वृद्धि—अन्तरिक्ष, आकाश
- **वैष्ट्रः**—पुं°—-—विश + ष्ट्रन्, वृद्धि—हवा, वायु
- **वैष्ट्रः**—पुं°—-—विश + ष्ट्रन्, वृद्धि—लोक, विश्व का एक प्रभाग
- **वैष्णव**—वि°—-—विष्णु + अण्—विष्णु सम्बन्धी
- **वैष्णव**—वि°—-—विष्णु + अण्—विष्णु की पूजा करने वाला
- **वैष्णवः**—पुं°—-—-—तीन महत्त्वपूर्ण आधुनिक हिन्दू-संप्रदायों में से एक, दूसरे दो हैं शैव और शाक्त
- **वैष्णवम्**—नपुं°—-—-—भस्मीकृत आहुतियों की राख
- **वैष्णावपुराणम्**—नपुं°—वैष्णवम्-पुराणम्—-—अठारह पुराणों में से एक पुराण
- **वैसारिणः**—पुं°—-—विशेषेण सरति विसारी मत्स्यः स एवं -विसा + रिन् + अण्—मछली
- **वैहायस**—वि°—-—विहायस् + अण्—हवा में विद्यमान, हवाई
- **वैहार्य**—वि°—-—विशेषेण ह्रियते-वि + हृ + ण्यत् + अण्—जिससे हंसी दिल्लगी की जाय, जिसे उपहास का विषय बनाया जाय
- **वैहासिकः**—पुं°—-—विहासं करोति-विहास + ठक्—हंसोकड़ा, विदूषक
- **वोड्रः**—पुं°—-—वा + उड्र—एक प्रकार का साँप
- **वोड्रः**—पुं°—-—वा + उड्र—एक तरह की मछली

- **वोड्री**—स्त्री°——वोड + ङीष्—पण का चौथा भाग
- **वोढृ**—पुं°——वह् + तृच्—ढोने वाला, कुली
- **वोढृ**—पुं°——वह् + तृच्—नेता
- **वोढृ**—पुं°——वह् + तृच्—पति
- **वोढृ**—पुं°——वह् + तृच्—साँड़
- **वोढृ**—पुं°——वह् + तृच्—रथवान्
- **वोढृ**—पुं°——वह् + तृच्—खींचने वाला घोड़ा
- **वोंटः**—पुं°————डंठल, वृन्त
- **वोद**—वि°——अवसिक्तमुदकं यत्र - प्रा° ब°, उदकस्य उदादेशः, भागुरिमते अकार लोपः—तर, गीला, आर्द्र
- **वोदालः**—पुं°——वोदः आर्द्रः सन् अलति-वोद + अल् + अच्—जर्मन-मछली
- **वोरकः**—पुं°——अवनतं लेखन काले उरो यस्य-प्रा° ब°, कप्, अवस्य अकारलोपः, पृषो° सलोपः—लिपिकार, लेखक
- **वोलकः**—पुं°——अवनतं लेखन काले उरो यस्य-प्रा° ब°, कप्, अवस्य अकारलोपः, पृषो° सलोपः, पक्षे रलयोरभेदः—लिपिकार, लेखक
- **वोरटः**—पुं°——वो इति रटन्ति भृङ्गा यत्र- वो + रट् + क—कुंद का एक भेद
- **वोलः**—पुं°——वुल् + अच्—गुग्गुल, रसगंध
- **वोल्लाहः**—पुं°————एक प्रकार का घोड़ा
- **वौषट्**—अव्य°——उद्यतेऽनेन हविः-वह् + डौषट्—पितरों या देवों को आहुति देते समय प्रयुक्त किया जाने वाला उद्गार या सांकेतिक शब्द
- **व्यंशकः**—पुं°——विशिष्टः अंशो यस्य-प्रा° ब°, कप्—पहाड़
- **व्यंशुकः**—वि°——विगतम् अंशुकं यस्य -प्रा° ब°—वस्त्रहीन, विवस्त्र, नंगा
- **व्यंसकः**—पुं°——वि + अंस् + ण्वुल्—धूर्त, ठग
- **व्यंसनम्**—नपुं°——वि + अंस् + ल्युट्—ठगना, धोखा देना
- **व्यक्त**—भू° क° कृ°——वि + अञ्ज + क्त—प्रकटीकृत, प्रदर्शित
- **व्यक्त**—भू° क° कृ°——वि + अञ्ज + क्त—विकसित, रचित
- **व्यक्त**—भू° क° कृ°——वि + अञ्ज + क्त—स्पष्ट, प्रकट, साफ, सरल, भिन्न, विशद रूप से विद्यमान
- **व्यक्त**—भू° क° कृ°——वि + अञ्ज + क्त—विशिष्ट, विदित, विख्यात
- **व्यक्त**—भू° क° कृ°——वि + अञ्ज + क्त—अकेला मनुष्य
- **व्यक्त**—भू° क° कृ°——वि + अञ्ज + क्त—बुद्धिमान्, विद्वान्
- **व्यक्तम्**—अव्य°————स्पष्ट, स्पष्ट रूप से, साफ़तौर पर, निश्चित रूप से

- **व्यक्तगणितम्**—नपुं०—व्यक्त-गणितम्—-—अंकगणित
- **व्यक्तदृष्टार्थः**—पुं०—व्यक्त-दृष्टार्थः—-—वह साथी जिसने घटना अपनी आँखों से देखी है, गवाह
- **व्यक्तराशिः**—पुं०—व्यक्त-राशिः—-—ज्ञात अंक
- **व्यक्तरूपः**—पुं०—व्यक्त-रूपः—-—विष्णु का विशेषण
- **व्यक्तविक्रम**—वि०—व्यक्त-विक्रम—-—शक्ति प्रदर्शित करने वाला
- **व्यक्तिः**—स्त्री०—-—वि + अञ्ज् + क्तिन्—प्रकटीकरण, दृश्यमानता, विशद प्रत्यक्षज्ञान
- **व्यक्तिः**—स्त्री०—-—वि + अञ्ज् + क्तिन्—दृश्यमान सूरत, स्पष्टता, विशदता
- **व्यक्तिः**—स्त्री०—-—वि + अञ्ज् + क्तिन्—भेद, विवेचन
- **व्यक्तिः**—स्त्री०—-—वि + अञ्ज् + क्तिन्—वास्तविक रूप या प्रकृति, सच्चरित्र
- **व्यक्तिः**—स्त्री०—-—वि + अञ्ज् + क्तिन्—वैयक्तिकता
- **व्यक्तिः**—स्त्री०—-—वि + अञ्ज् + क्तिन्—अकेला मनुष्य, पुरुष
- **व्यक्तिः**—स्त्री०—-—वि + अञ्ज् + क्तिन्—लिंग
- **व्यग्र**—वि०—-—विरुद्धम् अगति-वि + अग् + रक्—व्याकुल, विस्मित, उचाट
- **व्यग्र**—वि०—-—विरुद्धम् अगति-वि + अग् + रक्—आतङ्कित, भयभीत
- **व्यग्र**—वि०—-—विरुद्धम् अगति-वि + अग् + रक्—किसी कार्य में साभिप्राय व्यस्त
- **व्यङ्ग**—वि०—-—विगतं वा अङ्ग यस्य -प्रा० ब०—देहहीन
- **व्यङ्ग**—वि०—-—विगतं वा अङ्ग यस्य -प्रा० ब०—अङ्गहीन, विरूप, विकलाङ्ग, अपाहज, लुञ्जा
- **व्यङ्गः**—पुं०—-—-—लुञ्जा
- **व्यङ्गः**—पुं०—-—-—मेंढक
- **व्यङ्गः**—पुं०—-—-—गाल पर पड़े काले धब्बे
- **व्यङ्गुलम्**—नपुं०—-—-—लम्बाई का अत्यन्त छोटा माप, अंगुल का ६० वां अंश
- **व्यङ्ग्य**—वि०—-—वि + अञ्ज् + ण्यत्—व्यञ्जना शक्ति द्वारा ध्वनित, परोक्षसंकेत द्वारा सूचित
- **व्यङ्ग्य**—वि०—-—वि + अञ्ज् + ण्यत्—ध्वनित (अर्थ)
- **व्यङ्ग्यम्**—नपुं०—-—-—उपलक्षित अर्थ, व्यङ्ग्योक्ति, परोक्ष संकेत
- **व्यच्**—तुदा० पर० <विचति>, कर्मवा० <विच्यते>—-—-—ठगना, धोखा देना, चाल चलना
- **व्यजः**—पुं०—-—वि + अज् + घञ्—पंखा
- **व्यजनम्**—नपुं०—-—वि + अज् + ल्युट्—पंखा

- **व्यञ्जक**—वि०—–—वि + अञ्ज् + ण्वुल्—स्पष्ट करने वाला, सङ्केतक, बतलाने वाला, प्रकट करने वाला
- **व्यञ्जक**—पुं०—–—वि + अञ्ज् + ण्वुल्—अर्थ को उपलक्षित या ध्वनित करने वाला (शब्द)
- **व्यञ्जकः**—पुं०—–—–—नाटकीय हावभाव, आन्तरिक भावों को उपयुक्त हावभाव द्वारा प्रकट करने वाला बाह्य सङ्केत
- **व्यञ्जकः**—पुं०—–—–—सङ्केत, प्रतीक
- **व्यञ्जनम्**—नपुं०—–—वि + अञ्ज् + ल्युट्—स्पष्ट करना, सङ्केत करना, प्रकट करना
- **व्यञ्जनम्**—नपुं०—–—वि + अञ्ज् + ल्युट्—चिह्न, निशान, सङ्केत
- **व्यञ्जनम्**—नपुं०—–—वि + अञ्ज् + ल्युट्—स्मारक
- **व्यञ्जनम्**—नपुं०—–—वि + अञ्ज् + ल्युट्—छद्मवेश, परिधान
- **व्यञ्जनम्**—नपुं०—–—वि + अञ्ज् + ल्युट्—व्यञ्जन अक्षर
- **व्यञ्जनम्**—नपुं०—–—वि + अञ्ज् + ल्युट्—लिङ्गद्योतक चिह्न अर्थात स्त्री या पुरुष का परिचायक अङ्ग
- **व्यञ्जनम्**—नपुं०—–—वि + अञ्ज् + ल्युट्—अधिकार-चिह्न, बिल्ला
- **व्यञ्जनम्**—नपुं०—–—वि + अञ्ज् + ल्युट्—वयस्कता का चिह्न
- **व्यञ्जनम्**—नपुं०—–—वि + अञ्ज् + ल्युट्—दाढ़ी
- **व्यञ्जनम्**—नपुं०—–—वि + अञ्ज् + ल्युट्—अङ्ग, सदस्य
- **व्यञ्जनम्**—नपुं०—–—वि + अञ्ज् + ल्युट्—मिर्च मसाला, चटनी, सिझाई हुई वस्तु
- **व्यञ्जनम्**—नपुं०—–—वि + अञ्ज् + ल्युट्—तीनों शब्दशक्तियों में अन्तिम जिससे अर्थ उपलक्षित या ध्वनित होता है
- **व्यञ्जनोदय**—वि०—व्यञ्जनम्-उदय—–—वह जिसके पश्चात् व्यञ्जन अक्षर आता हो
- **व्यञ्जनसन्धिः**—पुं०—व्यञ्जनम्-सन्धिः—–—व्यञ्जन वर्णों का संयोग या संश्लेष
- **व्यञ्जना**—स्त्री०—–—–—तीनों शब्दशक्तियों में अन्तिम जिससे अर्थ उपलक्षित या ध्वनित होता है
- **व्यञ्जित**—भू० क० कृ०—–—वि + अञ्ज् + क्त—साफ किया गया, प्रकट किया गया, सङ्केत किया गया
- **व्यञ्जित**—वि०—–—वि + अञ्ज् + क्त—चिह्नित, भिन्न, चित्रित
- **व्यञ्जित**—वि०—–—वि + अञ्ज् + क्त—सुझाव दिया गया, ध्वनित
- **व्यडम्बकः**—पुं०—–—डम्ब् + ण्वुल्—अरण्ड का पेड़
- **व्यडम्बनः**—पुं०—–—डम्ब् + ल्युट्, विशेषेण न डम्बकः—अरण्ड का पेड़
- **व्यतिकरः**—पुं०—–—वि + अति + कृ + अप्—मिश्रण, अन्तःमिश्रण, इकट्ठा मिला देना
- **व्यतिकरः**—पुं०—–—वि + अति + कृ + अप्—सम्पर्क, मिलाप, सम्मिलन
- **व्यतिकरः**—पुं०—–—वि + अति + कृ + अप्—रगड़ना

- **व्यतिकरः**—पुं°—-—वि + अति + कृ + अप्—घटना, सम्भूति, वृत्तान्त, वस्तु, मामला
- **व्यतिकरः**—पुं°—-—वि + अति + कृ + अप्—अवसर
- **व्यतिकरः**—पुं°—-—वि + अति + कृ + अप्—मुसीबत, संकट
- **व्यतिकरः**—पुं°—-—वि + अति + कृ + अप्—पारस्परिक सम्बन्ध, पारस्परिकता
- **व्यतिकरः**—पुं°—-—वि + अति + कृ + अप्—विनिमय, अदलाबदली
- **व्यतिकीर्ण**—भू° क° कृ°—-—वि + अति + कृ + क्त—मिला हुआ, मिश्रित
- **व्यतिकीर्ण**—भू° क° कृ°—-—-—संयुक्त
- **व्यतिक्रमः**—पुं°—-—वि + अति + क्रम् + घञ्—अतिक्रमण, विचलन, भटकना
- **व्यतिक्रमः**—पुं°—-—वि + अति + क्रम् + घञ्—उल्लंघन, भंग, अननुष्ठान
- **व्यतिक्रमः**—पुं°—-—वि + अति + क्रम् + घञ्—अवहेलना, उपेक्षा, भूल
- **व्यतिक्रमः**—पुं°—-—वि + अति + क्रम् + घञ्—वैपरीत्य, उलट, व्यत्यास
- **व्यतिक्रमः**—पुं°—-—वि + अति + क्रम् + घञ्—पाप, दुर्व्यसन, जुर्म
- **व्यतिक्रमः**—पुं°—-—वि + अति + क्रम् + घञ्—आपत्काल, दुर्भाग्य
- **व्यतुक्रान्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अति + क्रम् + क्त—पार किया गया, अतिक्रमण किया गया, उल्लंघन किया गया, उपेक्षित
- **व्यतुक्रान्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अति + क्रम् + क्त—औंधा, विपर्यस्त
- **व्यतुक्रान्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अति + क्रम् + क्त—बीता हुआ, गुज़रा हुआ (समय)
- **व्यतिरिक्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अति + रिच् + क्त—वियुक्त, भिन्न
- **व्यतिरिक्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अति + रिच् + क्त—आगे बढ़ने वाला, सर्वोत्कृष्ट होने वाला, आगे निकल जाने वाला
- **व्यतिरिक्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अति + रिच् + क्त—प्रत्याहृत, रोका हुआ
- **व्यतिरिक्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अति + रिच् + क्त—अलगाया हुआ
- **व्यतिरेकः**—पुं°—-—वि + अति + रिच् + घञ्—भेद, अन्तर
- **व्यतिरेकः**—पुं°—-—वि + अति + रिच् + घञ्—वियोग
- **व्यतिरेकः**—पुं°—-—वि + अति + रिच् + घञ्—निष्कासन, अपवर्जन
- **व्यतिरेकः**—पुं°—-—वि + अति + रिच् + घञ्—श्रेष्ठता, आगे बढ़ जाना, आगे निकल जाना
- **व्यतिरेकः**—पुं°—-—वि + अति + रिच् + घञ्—वैशषम्य, असमानता
- **व्यतिरेकः**—पुं°—-—वि + अति + रिच् + घञ्—(तर्क में) अनन्वय
- **व्यतिरेकः**—पुं°—-—वि + अति + रिच् + घञ्—एक अर्थालंकार जिसमें किन्हीं विशेष दशाओं में उपमान की अपेक्षा उपमेय को श्रेष्ठतर बताया जाता है

- **व्यतिरेकिन्**—वि०—-—व्यतिरेक + इनि—भिन्न
- **व्यतिरेकिन्**—वि०—-—व्यतिरेक + इनि—आगे बढ़ जाने वाला, आगे निकल जाने वाला
- **व्यतिरेकिन्**—वि०—-—व्यतिरेक + इनि—बाहर निकालने वाला, अपवर्जन करने वाला
- **व्यतिरेकिन्**—वि०—-—व्यतिरेक + इनि—अभाव या अनस्तित्व दर्शाने वाला
- **व्यतिषक्त**—भू० क० कृ०—-—वि + अति + शञ्ज् + क्त—आपस में मिला हुआ, पारस्परिक संबंधयुक्त, शृंखलाबद्ध या एकत्र जुड़ा हुआ
- **व्यतिषक्त**—भू० क० कृ०—-—वि + अति + शञ्ज् + क्त—अन्तः मिश्रित
- **व्यतिषक्त**—भू० क० कृ०—-—वि + अति + शञ्ज् + क्त—अन्तर्जातीय विवाह करने वाला
- **व्यतिषङ्गः**—पुं०—-—वि + अति + सञ्ज् + घञ्—पारस्परिक संबन्ध, अन्योन्यसम्बन्ध
- **व्यतिषङ्गः**—पुं०—-—वि + अति + सञ्ज् + घञ्—अन्तःमिश्रण
- **व्यतिषङ्गः**—पुं०—-—वि + अति + सञ्ज् + घञ्—संयोग, या मिलाप
- **व्यतिहारः**—पुं०—-—वि + अति + हृ + घञ्—अदल-बदल, विनिमय
- **व्यतिहारः**—पुं०—-—वि + अति + हृ + घञ्—पारस्परिकता, अन्तःपरिवर्तन
- **व्यतीहारः**—पुं०—-—वि + अति + हृ + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य इकारस्य दीर्घः—अदल-बदल, विनिमय
- **व्यतीहारः**—पुं०—-—वि + अति + हृ + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य इकारस्य दीर्घः—पारस्परिकता, अन्तःपरिवर्तन
- **व्यतीत**—भू० क० कृ०—-—वि + अति + इ + क्त—गुजरा हुआ, गया हुआ, बीता हुआ, पार किया हुआ
- **व्यतीत**—भू० क० कृ०—-—वि + अति + इ + क्त—मृत
- **व्यतीत**—भू० क० कृ०—-—वि + अति + इ + क्त—छोड़ा हुआ, परित्यक्त, विसर्जित
- **व्यतीत**—भू० क० कृ०—-—वि + अति + इ + क्त—अवज्ञात
- **व्यतीपातः**—पुं०—-—वि + अति + पत् + घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः—समूचा प्रयाण, सम्पूर्णविचलन
- **व्यतीपातः**—पुं०—-—वि + अति + पत् + घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः—भारी उत्पात, भारी संकट को सूचित करने वाला अपशकुन
- **व्यतीपातः**—पुं०—-—वि + अति + पत् + घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः—अनादर, तिरस्कार
- **व्यत्ययः**—पुं०—-—वि + अति + इ + अच्—पार करना
- **व्यत्ययः**—पुं०—-—वि + अति + इ + अच्—विरोध, वैपरीत्य
- **व्यत्ययः**—पुं०—-—वि + अति + इ + अच्—व्यत्यस्त क्रम, व्युत्क्रान्ति
- **व्यत्ययः**—पुं०—-—वि + अति + इ + अच्—अन्तःपरिवर्तन, रूपान्तरण
- **व्यत्ययः**—पुं०—-—वि + अति + इ + अच्—अवरोध, अड़चन
- **व्यत्यस्त**—भू० क० कृ०—-—वि + अति + अस् + क्त—व्युत्क्रांत, विपर्यस्त

- **व्यत्यस्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अति + अस् + क्त—विपरीत, विरोधी
- **व्यत्यस्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अति + अस् + क्त—असंगत व्यत्यस्तं लपति
- **व्यत्यस्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अति + अस् + क्त—विरेखित, इस प्रकार रक्खी हुई (दो वस्तुएँ) जिसमें एक दूसरी को काटती हो
- **व्यत्यासः**—पुं°—-—वि + अति + अस् + घञ्—व्युत्क्रांत स्थिति या क्रम
- **व्यत्यासः**—पुं°—-—-—विरोध, वैपरीत्य
- **व्यथ्**—भ्वा° आ° <व्यथते>, <व्यथित>—-—-—शोकान्वित होना, पीडित होना, कष्टग्रस्त होना, विक्षुब्ध या अशांत होना
- **व्यथ्**—भ्वा° आ° <व्यथते>, <व्यथित>—-—-—आन्दोलित होना, दोलायमान होना
- **व्यथ्**—भ्वा° आ° <व्यथते>, <व्यथित>—-—-—कांपना
- **व्यथ्**—भ्वा° आ° <व्यथते>, <व्यथित>—-—-—भयभीत होना
- **व्यथ्**—भ्वा° आ° <व्यथते>, <व्यथित>—-—-—सूखना, शुष्क होना
- **व्यथ्**—भ्वा° उभ°, प्रेर° <व्यथयति>, <व्यथयते>—-—-—पीडा देना, कष्ट देना, नाराज करना, दुःखी करना
- **प्रव्यथ्**—भ्वा° आ°—प्र-व्यथ्—-—अत्यन्त क्रुद्ध होना
- **व्यथक**—वि°—-—व्यथ् + णिच् + ण्वुल्—पीडाजनक, दुःखद, कष्टकर
- **व्यथनम्**—नपुं°—-—व्यथ् + ल्युट्—पीडा देना, सताना
- **व्यथा**—स्त्री°—-—व्यथ् + अङ् + टाप्—पीडा, वेदना, आधि
- **व्यथा**—स्त्री°—-—व्यथ् + अङ् + टाप्—भय, आतंक, चिन्ता
- **व्यथा**—स्त्री°—-—व्यथ् + अङ् + टाप्—विक्षोभ, अशान्ति
- **व्यथा**—स्त्री°—-—व्यथ् + अङ् + टाप्—रोग
- **व्यथित**—भू° क° कृ°—-—व्यथ् + क्त—कष्टग्रस्त, दुःखी, पीडित
- **व्यथित**—भू° क° कृ°—-—व्यथ् + क्त—आतङ्कित
- **व्यथित**—भू° क° कृ°—-—व्यथ् + क्त—विक्षुब्ध, अशान्त, बेचैन
- **व्यध्**—दिवा° पर° <विध्यति>, <विद्ध>—-—-—बींधना, चोट पहुँचाना, प्रहार करना, छुरा भौंकना, मार डालना
- **व्यध्**—दिवा° पर° <विध्यति>, <विद्ध>—-—-—सूराख़ करना, छिद्र करना, आरपार बींधना
- **व्यध्**—दिवा° पर° <विध्यति>, <विद्ध>—-—-—खोदना, गड्ढा करना
- **अनुव्यध्**—दिवा° पर°—अनु-व्यध्—-—बींधना, चोट पहुँचाना, घायल करना
- **अनुव्यध्**—दिवा° पर°—अनु-व्यध्—-—गूंथना, घेरना
- **अनुव्यध्**—दिवा° पर°—अनु-व्यध्—-—जड़ना, जटित करना

- **अपव्यध्**—दिवा° पर°—अप-व्यध्—-—फेंकना, डालना, उछालना
- **अपव्यध्**—दिवा° पर°—अप-व्यध्—-—बींधना
- **अपव्यध्**—दिवा° पर°—अप-व्यध्—-—त्यागना, परित्यक्त करना
- **आव्यध्**—दिवा° पर°—आ-व्यध्—-—बींधना
- **आव्यध्**—दिवा° पर°—आ-व्यध्—-—फेंकना, डालना
- **परिव्यध्**—दिवा° पर°—परि-व्यध्—-—बींधना, घायल करना
- **संव्यध्**—दिवा° पर°—सम्-व्यध्—-—बींधना, घायल करना
- **व्यधः**—पुं°—-—व्यध् + अच्—बींधनअ, टुकड़े टुकड़े करना, प्रहार करना
- **व्यधः**—पुं°—-—व्यध् + अच्—आघात करना, घायल करना, प्रहार
- **व्यधः**—पुं°—-—व्यध् + अच्—छिद्र करना
- **व्यधिकरणम्**—नपुं°—-—वि + अधि + कृ + ल्युट्—भिन्न आधार या स्तर पर जीवित रहना
- **व्यध्यः**—पुं°—-—व्यध् + ण्यत्—चाँदमारी के पीछे का टीला, निशाना, लक्ष्य
- **व्यध्वः**—पुं°—-—विरुद्धः अध्वा- प्रा° स°—कुमार्ग, बुरी सड़क
- **व्यनुनादः**—पुं°—-—विशिष्टः अनुनादः प्रा° स°—प्रतिध्वनि, ऊँची गूँज
- **व्यन्तरः**—पुं°—-—विशिष्टः अन्तरो यस्य-प्रा° ब°—पिशाच, यक्ष आदि एक प्रकार का अतिप्राकृतिक प्राणी
- **व्यप्**—चुरा° उभ° <व्यपयति>, <व्यपयते>—-—-—फेंकना
- **व्यप्**—चुरा° उभ° <व्यपयति>, <व्यपयते>—-—-—घटाना, बरबाद करना, कम करना
- **व्यपकृष्ट**—भू° क° कृ°—-—वि + अप + कृष् + क्त—एक ओर खींचा हुआ, दूर किया हुआ, हटाया हुआ
- **व्यपगत**—भू° क° कृ°—-—वि + अप + गम् + क्त—गया हुआ, विसर्जित, अन्तर्हित
- **व्यपगत**—भू° क° कृ°—-—वि + अप + गम् + क्त—हटाया हुआ
- **व्यपगत**—भू° क° कृ°—-—वि + अप + गम् + क्त—गिराया हुआ
- **व्यपगमः**—भू° क° कृ°—-—वि + अप + गम् + अप्—विसर्जन, अन्तर्धान
- **व्यपत्रप**—वि°—-—विगता अपत्रपा यस्य-प्रा° ब° —निर्लज्ज, ढीठ
- **व्यपदिष्ट**—भू° क° कृ°—-—वि + अप + दिश् + क्त—नामाङ्कित
- **व्यपदिष्ट**—भू° क° कृ°—-—वि + अप + दिश् + क्त—बतलाया गया, प्रस्तुत किया गया, द्योतित
- **व्यपदिष्ट**—भू° क° कृ°—-—वि + अप + दिश् + क्त—बहाने या छल के रूप में प्रतिपादित किया गया
- **व्यपदेशः**—पुं°—-—वि + अप + दिश् + घञ्— निरूपण, सन्देश, सूचना

- **व्यपदेशः**—पुं०—–—वि + अप + दिश् + घञ्—नामकरण, नाम रखना
- **व्यपदेशः**—पुं०—–—वि + अप + दिश् + घञ्—नाम, अभिधान, उपाधि
- **व्यपदेशः**—पुं०—–—वि + अप + दिश् + घञ्—कीर्ति, यश, प्रसिद्धि
- **व्यपदेशः**—पुं०—–—वि + अप + दिश् + घञ्—चाल, बहाना, दाँव, उपाय
- **व्यपदेशः**—पुं०—–—वि + अप + दिश् + घञ्—जालसाजी, चालाकी
- **व्यपदेष्टृ**—पुं०—–—वि + अप + दिश् + तृच्—छलिया, धोखेबाज़
- **व्यपरोपणम्**—नपुं०—–—वि + अप + रुह् + णिच् + ल्युट्, हस्य पः —उन्मूलन, उखाड़ना
- **व्यपरोपणम्**—नपुं०—–—वि + अप + रुह् + णिच् + ल्युट्, हस्य पः —भगाना, हटाना, दूर करना
- **व्यपरोपणम्**—नपुं०—–—वि + अप + रुह् + णिच् + ल्युट्, हस्य पः —काट डालना, फाड़ डालना, तोड़ लेना
- **व्यपाकृतिः**—स्त्री०—–—वि + अप + आ + कृ + क्तिन्—निष्कासन, दूरीकरण, निकाल देना
- **व्यपाकृतिः**—स्त्री०—–—वि + अप + आ + कृ + क्तिन्—मुकरना
- **व्यपायः**—पुं०—–—वि + अप + इ + घञ्—अन्त, लोप, समाप्ति
- **व्यपाश्रयः**—पुं०—–—वि + अप + आ + श्रि + अप्—उत्तराधिकारिता
- **व्यपाश्रयः**—पुं०—–—वि + अप + आ + श्रि + अप्—शरण लेना, सहारा लेना, भरोसा करना
- **व्यपाश्रयः**—पुं०—–—वि + अप + आ + श्रि + अप्—निर्भर होना
- **व्यपेक्षा**—स्त्री०—–—वि + अप + ईक्ष् + अङ् + टाप्—प्रत्याशा, आशा
- **व्यपेक्षा**—स्त्री०—–—वि + अप + ईक्ष् + अङ् + टाप्—लिहाज़, विचार
- **व्यपेक्षा**—स्त्री०—–—वि + अप + ईक्ष् + अङ् + टाप्—पारस्परिक सम्बन्ध, अन्योन्याश्रय
- **व्यपेक्षा**—स्त्री०—–—वि + अप + ईक्ष् + अङ् + टाप्—पारस्परिक लिहाज़
- **व्यपेक्षा**—स्त्री०—–—वि + अप + ईक्ष् + अङ् + टाप्—व्यवहार
- **व्यपेक्षा**—स्त्री०—–—वि + अप + ईक्ष् + अङ् + टाप्—दो नियमों का पारस्परिक प्रयोग
- **व्यपेत**—भू० क० कृ०—–—वि + अप + इ + क्त—वियुक्त अलगाया हुआ
- **व्यपेत**—भू० क० कृ०—–—वि + अप + इ + क्त—गया हुआ, विसर्जित
- **व्यपोढ**—भू० क० कृ०—–—वि + अप + वह् + क्त—निकाला गया, हटाया गया
- **व्यपोढ**—भू० क० कृ०—–—वि + अप + वह् + क्त—विपरीत, विरोधी
- **व्यपोढ**—भू० क० कृ०—–—वि + अप + वह् + क्त—प्रकटीकृत, प्रदर्शित, बतलाया गया
- **व्यपोहः**—पुं०—–—वि + अप + ऊह् + घञ्—निकालना, दूर करना, अलग रखना

- **व्यभिचारः**—पुं॰——वि + अभि + चर् + घञ्—दूर चले जाना, विचलन, सन्मार्ग छोड़ देना, कुमार्ग का अनुसरण करना
- **व्यभिचारः**—पुं॰——वि + अभि + चर् + घञ्— अतिक्रमण, उल्लंघन
- **व्यभिचारः**—पुं॰——वि + अभि + चर् + घञ्—अशुद्धि, जुर्म, पाप
- **व्यभिचारः**—पुं॰——वि + अभि + चर् + घञ्—विच्छेद्यता, अलग होने की सामर्थ्य
- **व्यभिचारः**—पुं॰——वि + अभि + चर् + घञ्—अभक्ति, अनास्था, पति-पत्नि में अविश्वास, पतिव्रत या पत्नीव्रत का अभाव
- **व्यभिचारः**—पुं॰——वि + अभि + चर् + घञ्—असंगति, अनियमितता, अपवाद
- **व्यभिचारः**—पुं॰——वि + अभि + चर् + घञ्—(तर्क में) आभासी हेतु, हेत्वाभास, साध्य के न होने पर भी हेतु की विद्यमानता
- **व्यभीचारः**—पुं॰————दूर चले जाना, विचलन, सन्मार्ग छोड़ देना, कुमार्ग का अनुसरण करना
- **व्यभीचारः**—पुं॰———— अतिक्रमण, उल्लंघन
- **व्यभीचारः**—पुं॰————अशुद्धि, जुर्म, पाप
- **व्यभीचारः**—पुं॰————विच्छेद्यता, अलग होने की सामर्थ्य
- **व्यभीचारः**—पुं॰————अभक्ति, अनास्था, पति-पत्नि में अविश्वास, पतिव्रत या पत्नीव्रत का अभाव
- **व्यभीचारः**—पुं॰————असंगति, अनियमितता, अपवाद
- **व्यभीचारः**—पुं॰————(तर्क में) आभासी हेतु, हेत्वाभास, साध्य के न होने पर भी हेतु की विद्यमानता
- **व्यभिचारिणी**—स्त्री॰——व्यभिचारिन् + ङीप्—असती स्त्री, परपुरुषगामिनी स्त्री
- **व्यभिचारिन्**—वि॰——व्यभिचार + इनि—भटका हुआ, भूला हुआ, पथभ्रष्ट, भ्रान्त, नियम भंग करने वाला
- **व्यभिचारिन्**—वि॰——व्यभिचार + इनि—अनियमित, असंगत
- **व्यभिचारिन्**—वि॰——व्यभिचार + इनि—असत्य, मिथ्या
- **व्यभिचारिन्**—वि॰——व्यभिचार + इनि—श्रद्धाहीन, जो ब्रह्मचारी न हो, परस्त्रीगामी
- **व्यभिचारिन्**—पुं॰————संचारिभाव, सहकारी भाव
- **व्यभिचारिभावः**—पुं॰————संचारिभाव, सहकारी भाव
- **व्यय्**—चुरा॰ उभ॰ <व्यययति>, <व्यययते>————जाना, हिलना-जुलना
- **व्यय्**—चुरा॰ उभ॰ <व्यययति>, <व्यययते>————व्यय करना, प्रदान करना, अर्पण करना
- **व्यय्**—भ्वा॰ उभ॰ <व्ययति>, <व्ययते>————जाना, हिलना-जुलना
- **व्यय्**—चुरा॰ उभ॰ <व्याययति>, <व्याययते>————फेंकना, डालना
- **व्यय्**—चुरा॰ उभ॰ <व्याययति>, <व्याययते>————हाँकना
- **व्यय**—वि॰——वि + इ + अच्—परिवर्तनीय, परिणामशील, विकारवान्

- **व्ययः**—पुं°———–—हानि, लोप, विनाश
- **व्ययः**—पुं°———–—लागत लगाना, त्याग
- **व्ययः**—पुं°———–—रुकावट, अड़चन
- **व्ययः**—पुं°———–—क्षय, ह्रास, पराजय, अधःपतन
- **व्ययः**—पुं°———–—खर्च, भूल्य, परिव्यय, विनियोग, प्रयोग
- **व्ययः**—पुं°———–—अपव्यय, फिज़ूलखर्ची
- **व्ययपरः**—वि°—व्यय-पर—–—मुक्तहस्त से ख़र्च करने वाला
- **व्ययपराङ्मुख**—वि°—व्यय-पराङ्मुख—–—कृपण, कंज़ूस, मक्खीचूस
- **व्ययशील**—वि°—व्यय-शील—–—अतिव्ययी, फिज़ूलख़र्च
- **व्ययशुद्धिः**—स्त्री°—व्यय-शुद्धिः—–—हिसाब चुकाना
- **व्ययनम्**—नपुं°—–—व्यय् + ल्युट्—ख़र्च करना
- **व्ययनम्**—नपुं°—–—व्यय् + ल्युट्—बर्बाद करना, विनष्ट करना
- **व्ययित**—भू° क° कृ°—–—व्यय् + क्त—व्यय किया गया, खर्च किया गया
- **व्ययित**—भू° क° कृ°—–—व्यय् + क्त—बर्बाद किया गया, क्षयग्रस्त
- **व्यर्थ**—वि°—–—विगतोऽर्थो यस्मात्-प्रा° ब°—अनुप्अयोगी, निरर्थक, विफल, अलाभकर
- **व्यर्थ**—वि°—–—विगतोऽर्थो यस्मात्-प्रा° ब°—अर्थहीन, निरर्थक, बेकारी
- **व्यलीक**—वि°—–—विशेषेण अलति -वि + अल् + कीकन्—मिथ्या, झूठा
- **व्यलीक**—वि°—–—विशेषेण अलति -वि + अल् + कीकन्—कुत्सित, अनभिमत, असुखद
- **व्यलीक**—वि°—–—विशेषेण अलति -वि + अल् + कीकन्—ज़ो मिथ्या न हो
- **व्यलीकः**—पुं°———–—स्वेच्छाचारी
- **व्यलीकः**—पुं°———–—गांडू, लौण्डा
- **व्यलीकम्** —नपुं°———–—कोई भी अप्रिय या असुखद वस्तु, अप्रियता
- **व्यलीकम्** —नपुं°———–—बेचैनी का कारण, पीड़ा, शोक या रंज का कारण
- **व्यलीकम्** —नपुं°———–—दोष, अपराध, अतिक्रमण, अनुचित कार्य
- **व्यलीकम्** —नपुं°———–—जालसाज़ी, चाल, धोखा
- **व्यलीकम्** —नपुं°———–—मिथ्यापन
- **व्यलीकम्** —नपुं°———–—व्युत्क्रम, वैपरीत्य

- **व्यवकलनम्**—नपुं०—–—वि + अव + कल् + ल्युट्—वियोग
- **व्यवकलनम्**—नपुं०—–—वि + अव + कल् + ल्युट्—(गणि० में) घटाना, एक राशि में से दूसरी राशि कम करना
- **व्यवक्रोशनम्**—नपुं०—–—वि + अव + क्रुश् + ल्युट्—तू तू मैं मैं, आपस में गाली-गलौज
- **व्यवछिन्न**—भू० क० कृ०—–—वि + अव + छिद् + क्त—काट डाला गया, चीरा गया, फाड़ा गया
- **व्यवछिन्न**—भू० क० कृ०—–—वि + अव + छिद् + क्त—वियुक्त, विभक्त
- **व्यवछिन्न**—भू० क० कृ०—–—वि + अव + छिद् + क्त—विशिष्ट किया गया, विशिष्ट
- **व्यवछिन्न**—भू० क० कृ०—–—वि + अव + छिद् + क्त—अंकित, विलक्षण
- **व्यवछिन्न**—भू० क० कृ०—–—वि + अव + छिद् + क्त—अवरुद्ध, बाधित
- **व्यवच्छेदः**—पुं०—–—वि + अव + छिद् + घञ्—काट डालना, फाड़ देना
- **व्यवच्छेदः**—पुं०—–—वि + अव + छिद् + घञ्—विभाजन, वियोजन
- **व्यवच्छेदः**—पुं०—–—वि + अव + छिद् + घञ्—चीर-फाड़ करना
- **व्यवच्छेदः**—पुं०—–—वि + अव + छिद् + घञ्—विशिष्टीकरण
- **व्यवच्छेदः**—पुं०—–—वि + अव + छिद् + घञ्—विभेदक, विशिष्ट
- **व्यवच्छेदः**—पुं०—–—वि + अव + छिद् + घञ्—वैषम्य, वैशिष्ट्य
- **व्यवच्छेदः**—पुं०—–—वि + अव + छिद् + घञ्—निर्धारण
- **व्यवच्छेदः**—पुं०—–—वि + अव + छिद् + घञ्—बन्दूक दागना, तीर छोड़ना
- **व्यवच्छेदः**—पुं०—–—वि + अव + छिद् + घञ्—किसी पुस्तक का अध्याय या अनुभाग
- **व्यवधा**—स्त्री०—–—वि + अव + धा + अङ् + टाप्—व्यवधायक
- **व्यवधा**—स्त्री०—–—वि + अव + धा + अङ् + टाप्—आड़, पर्दा, व्यंशन
- **व्यवधा**—स्त्री०—–—वि + अव + धा + अङ् + टाप्—छिपाव, दुराव
- **व्यवधानम्**—नपुं०—–—वि + अव + धा + ल्युट्—हस्तक्षेप, अन्तःक्षेप, वियोग
- **व्यवधानम्**—नपुं०—–—वि + अव + धा + ल्युट्—अवरोध, दृष्टि से गुप्त रखना
- **व्यवधानम्**—नपुं०—–—वि + अव + धा + ल्युट्—छिपाना, अन्तर्धान
- **व्यवधानम्**—नपुं०—–—वि + अव + धा + ल्युट्—पर्दा, व्यंशन
- **व्यवधानम्**—नपुं०—–—वि + अव + धा + ल्युट्—ढकना, आवरण
- **व्यवधानम्**—नपुं०—–—वि + अव + धा + ल्युट्—अन्तराल, अवकाश
- **व्यवधानम्**—नपुं०—–—वि + अव + धा + ल्युट्—किसी अक्षर या मात्रा का बीच में आ पड़ना

- **व्यवधायक**—वि०——वि + अव + धा + ण्वुल्—बीच में आ पड़ने वाला, आवरण, ढकने वाला
- **व्यवधायक**—वि०——वि + अव + धा + ण्वुल्—अवरोध करने वाला, छिपाने वाला
- **व्यवधायक**—वि०——वि + अव + धा + ण्वुल्—मध्यवर्ती
- **व्यवधिः**—पुं०——वि + अव + धा + कि—आवरण, हस्तक्षेप आदि
- **व्यवसायः**—पुं०——वि + अव + सो + घञ्—प्रयत्न, चेष्टा, ऊर्जा, उद्योग, धैर्य
- **व्यवसायः**—पुं०——वि + अव + सो + घञ्—संकल्प, प्रस्ताव, निर्धारण
- **व्यवसायः**—पुं०——वि + अव + सो + घञ्—कृत्य, कर्म, क्रिया
- **व्यवसायः**—पुं०——वि + अव + सो + घञ्—व्यापार, नौकरी, वाणिज्य
- **व्यवसायः**—पुं०——वि + अव + सो + घञ्—आचरण, व्यवहार
- **व्यवसायः**—पुं०——वि + अव + सो + घञ्—उपाय, कूटयुक्ति, जुगत
- **व्यवसायः**—पुं०——वि + अव + सो + घञ्—शेख़ी बधारना
- **व्यवसायः**—पुं०——वि + अव + सो + घञ्—विष्णु
- **व्यवसायिन्**—वि०——व्यवसाय + इनि—ऊर्जस्वी, उद्योगी, परिश्रमी
- **व्यवसायिन्**—वि०——व्यवसाय + इनि—दृढ़ संकल्पी, धैर्यवान्
- **व्यवसित**—भू० क० कृ०——वि + अव + सो + क्त—प्रयास किया गया, कोशिश की गई
- **व्यवसित**—भू० क० कृ०——वि + अव + सो + क्त—जिम्मेवारी ली गई
- **व्यवसित**—भू० क० कृ०——वि + अव + सो + क्त—संकल्प किया गया, निर्धारित, निश्चित
- **व्यवसित**—भू० क० कृ०——वि + अव + सो + क्त—प्रकल्पित, आयोजित
- **व्यवसित**—भू० क० कृ०——वि + अव + सो + क्त—प्रयत्नशील, दृढ़ निश्चयी
- **व्यवसित**—भू० क० कृ०——वि + अव + सो + क्त—धयवान्, ऊर्जस्वी
- **व्यवसित**—भू० क० कृ०——वि + अव + सो + क्त—ठगा गया, छला गया
- **व्यवसितम्**—नपुं०————निश्चयन, निर्धारण
- **व्यवस्था**—स्त्री०——वि + अव + स्था + अङ् + टाप्—समंजन, क्रमस्थापन, निपटारा
- **व्यवस्था**—स्त्री०——वि + अव + स्था + अङ् + टाप्—स्थिरता, निश्चितता
- **व्यवस्था**—स्त्री०——वि + अव + स्था + अङ् + टाप्—दृढ़ता, दृढ़ आधार
- **व्यवस्था**—स्त्री०——वि + अव + स्था + अङ् + टाप्—संबद्ध स्थिति
- **व्यवस्था**—स्त्री०——वि + अव + स्था + अङ् + टाप्—निश्चित नियम, क़ानून, सविधि आदेश, निर्णय, क़ानूनी सलाह, क़ानून की लिखित घोषणा

- **व्यवस्था**—स्त्री°—-—वि + अव + स्था + अङ् + टाप्—सहमति, संविदा
- **व्यवस्था**—स्त्री°—-—वि + अव + स्था + अङ् + टाप्—अवस्था, दशा
- **व्यवस्थानम्**—नपुं°—-—वि + अव + स्था + ल्युट्—क्रमबन्धन, समाधान, निर्धारण, फ़ैसला
- **व्यवस्थानम्**—नपुं°—-—वि + अव + स्था + ल्युट्—नियम, विधान, निश्चय
- **व्यवस्थानम्**—नपुं°—-—वि + अव + स्था + ल्युट्—स्थिरता, अचलता
- **व्यवस्थानम्**—नपुं°—-—वि + अव + स्था + ल्युट्—दृढ़ता, धैर्य
- **व्यवस्थानम्**—नपुं°—-—वि + अव + स्था + ल्युट्—वियोग
- **व्यवस्थितिः**—स्त्री°—-—वि + अव + स्था + क्तिन्—क्रमबन्धन, समाधान, निर्धारण, फ़ैसला
- **व्यवस्थितिः**—स्त्री°—-—वि + अव + स्था + क्तिन्—नियम, विधान, निश्चय
- **व्यवस्थितिः**—स्त्री°—-—वि + अव + स्था + क्तिन्—स्थिरता, अचलता
- **व्यवस्थितिः**—स्त्री°—-—वि + अव + स्था + क्तिन्—दृढ़ता, धैर्य
- **व्यवस्थितिः**—स्त्री°—-—वि + अव + स्था + क्तिन्—वियोग
- **व्यवस्थापक**—वि°—-—वि + अव + स्था + णिच् + ण्वुल्, पुक्—क्रमस्थापन करने वाला, उपयुक्त क्रम में रखने वाला, समंजन करने वाला, स्थिर करने वाला, व्यवस्था करने वाला, फ़ैसला करने वाला
- **व्यवस्थापक**—वि°—-—वि + अव + स्था + णिच् + ण्वुल्, पुक्—वह जो कानूनी सलाह देता है
- **व्यवस्थापक**—वि°—-—वि + अव + स्था + णिच् + ण्वुल्, पुक्—प्रबन्धक (वर्तमान प्रयोग)
- **व्यवस्थापनम्**—नपुं°—-—वि + अव + स्था + णिच् + ल्युट्, पुक्—क्रमस्थापन, उपयुक्त समंजन
- **व्यवस्थापनम्**—नपुं°—-—वि + अव + स्था + णिच् + ल्युट्, पुक्—स्थिर करना, निर्धारण, निश्वय करना, फ़ैसला करना
- **व्यवस्थापित**—भू° क° कृ°—-—वि + अव + स्था + णिच् + क्त, पुक्—क्रमबद्ध, निश्चित
- **व्यवस्थित**—भू° क° कृ°—-—वि + अव + स्था + क्त—क्रम में रक्खा हुआ, समंजित, क्रमविन्यस्त
- **व्यवस्थित**—भू° क° कृ°—-—वि + अव + स्था + क्त—निश्चित, स्थिर
- **व्यवस्थित**—भू° क° कृ°—-—वि + अव + स्था + क्त—फ़ैसला किया गया, निर्धारित, क़ानून द्वारा घोषित
- **व्यवस्थित**—भू° क° कृ°—-—वि + अव + स्था + क्त—एक ओर रक्खा हुआ, वियुक्त
- **व्यवस्थित**—भू° क° कृ°—-—वि + अव + स्था + क्त—निकाला हुआ (रस आदि)
- **व्यवस्थित**—भू° क° कृ°—-—वि + अव + स्था + क्त—आधारित, अवलम्बित
- **व्यवस्थितविभाषा**—स्त्री°—व्यवस्थित-विभाषा—-—निश्चित इच्छा
- **व्यवहर्तृ**—पुं°—-—वि + अव + हृ + तृच्—किसी व्यवसाय का प्रबंधकर्ता

- **व्यवहर्तृ**—पुं°—-—वि + अव + हृ + तृच्—नालिश करने वाला, अभियोक्ता, वादी या मुद्दई
- **व्यवहर्तृ**—पुं°—-—वि + अव + हृ + तृच्—न्यायाधीश
- **व्यवहर्तृ**—पुं°—-—वि + अव + हृ + तृच्—साथी, संगी
- **व्यवहारः**—पुं°—-—वि + अव + हृ + घञ्—आचरण, बर्ताव, कर्म
- **व्यवहारः**—पुं°—-—वि + अव + हृ + घञ्—मामला, व्यवसाय, काम
- **व्यवहारः**—पुं°—-—वि + अव + हृ + घञ्—पेशा, धंधा
- **व्यवहारः**—पुं°—-—वि + अव + हृ + घञ्—लेनदेन, काम-काज
- **व्यवहारः**—पुं°—-—वि + अव + हृ + घञ्—वाणिज्य, तिजारत, सौदागरी
- **व्यवहारः**—पुं°—-—वि + अव + हृ + घञ्—रुपये पैसे का लेनदेन, सूदख़ोरी
- **व्यवहारः**—पुं°—-—वि + अव + हृ + घञ्—प्रचलन, प्रथा, दस्तूर, रिवाज
- **व्यवहारः**—पुं°—-—वि + अव + हृ + घञ्—संबन्ध, मेलजोल
- **व्यवहारः**—पुं°—-—वि + अव + हृ + घञ्—न्यायालयी या अदालती कार्यविधि, किसी अभियोग या मामले की छान-बीन, न्याय प्रशासन
- **व्यवहारः**—पुं°—-—वि + अव + हृ + घञ्—क़ानूनी झगड़ा, अभियोग, नालिश, क़ानूनी मुक़दमा, मुकदमेबाज़ी
- **व्यवहारः**—पुं°—-—वि + अव + हृ + घञ्—क़ानूनी कार्यविधि का शीर्षक, मुक़दमेबाजी का अवसर
- **व्यवहाराङ्गम्**—नपुं°—व्यवहारः-अङ्गम्—-—दीवानी और फ़ौजदारी क़ानूनों का समूह
- **व्यवहाराभिशस्त**—वि°—व्यवहारः-अभिशस्त—-—अभियोजित, दोषारोपित
- **व्यवहारासनम्**—नपुं°—व्यवहारः-आसनम्—-—न्यायाधिकरण, न्यायासन
- **व्यवहारज्ञः**—पुं°—व्यवहारः-ज्ञः—-—जो व्यवसाय को समझता है
- **व्यवहारज्ञः**—पुं°—व्यवहारः-ज्ञः—-—वयस्क युवा, बालिग़
- **व्यवहारज्ञः**—पुं°—व्यवहारः-ज्ञः—-—जो न्यायालयीय कार्यविधि से परिचित हो
- **व्यवहारतन्त्रम्**—नपुं°—व्यवहारः-तन्त्रम्—-—आचरणक्रम
- **व्यवहारदर्शनम्**—नपुं°—व्यवहारः-दर्शनम्—-—जांच, न्यायिक जांच-पड़ताल
- **व्यवहारपदम्**—नपुं°—व्यवहारः-पदम्—-—व्यवहार विषय
- **व्यवहारपादः**—पुं°—व्यवहारः-पादः—-—क़ानूनी कार्यवाही कीचार अवस्थाओं में से कोई सी एक
- **व्यवहारपादः**—पुं°—व्यवहारः-पादः—-—चौथी अवस्था अर्थात् निर्णयपाद जिसमें व्यवस्था या फ़ैसला बतलाया गया है
- **व्यवहारमातृका**—स्त्री°—व्यवहारः-मातृका—-—क़ानूनी प्रक्रिया
- **व्यवहारमातृका**—स्त्री°—व्यवहारः-मातृका—-—न्यायप्रशासन या न्यायालयों के निर्माण से सम्बन्ध रखने वाला कोई भी कर्म या विषय

- **व्यवहारविधिः**—पुं°—व्यवहारः-विधिः—-—क़ानून का नियम, विधिसंहिता
- **व्यवहारविषयः**—पुं°—व्यवहारः-विषयः—-—क़ानूनी कार्यविधि का शीर्षक या विषय, ऐसी बात जिसमें क़ानूनी कार्यवाही करनी चाहिए, वादयोग्य विषय
- **व्यवहारपदम्**—नपुं°—व्यवहारः-पदम्—-—क़ानूनी कार्यविधि का शीर्षक या विषय, ऐसी बात जिसमें क़ानूनी कार्यवाही करनी चाहिए, वादयोग्य विषय
- **व्यवहारमार्गः**—पुं°—व्यवहारः-मार्गः—-—क़ानूनी कार्यविधि का शीर्षक या विषय, ऐसी बात जिसमें क़ानूनी कार्यवाही करनी चाहिए, वादयोग्य विषय
- **व्यवहारस्थानम्**—नपुं°—व्यवहारः-स्थानम्—-—क़ानूनी कार्यविधि का शीर्षक या विषय, ऐसी बात जिसमें क़ानूनी कार्यवाही करनी चाहिए, वादयोग्य विषय
- **व्यवहारकः**—पुं°—-—वि + अव + हृ + ण्वुल्—विक्रेता, व्यापारी, सौदागर
- **व्यवहारिक**—वि°—-—व्यवहार + ठन्—व्यवसाय सम्बन्धी
- **व्यवहारिक**—वि°—-—व्यवहार + ठन्—व्यवसाय में लगा हुआ, अभ्यासप्राप्त
- **व्यवहारिक**—वि°—-—व्यवहार + ठन्—न्यायालयसंबंधी, क़ानूनी
- **व्यवहारिक**—वि°—-—व्यवहार + ठन्—मुक़दमेबाज़
- **व्यवहारिक**—वि°—-—व्यवहार + ठन्—प्रचलित, रूढ़ या प्रथानुसार
- **व्यवहारिका**—स्त्री°—-—वि + अव + हृ + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्—रिवाज, प्रथा
- **व्यवहारिका**—स्त्री°—-—वि + अव + हृ + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्—झाडू
- **व्यवहारिका**—स्त्री°—-—वि + अव + हृ + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्—इंगुदी का वृक्ष
- **व्यवहित**—भू° क° कृ°—-—वि + अव + धा + क्त—अलग अलग रक्खा हुआ
- **व्यवहित**—भू° क° कृ°—-—वि + अव + धा + क्त—किसी अन्तःक्षिप्त वस्तु के कारण वियुक्त किया गया
- **व्यवहित**—भू° क° कृ°—-—वि + अव + धा + क्त—बाधित, रोका गया, अवरुद्ध, अड़चन से युक्त
- **व्यवहित**—भू° क° कृ°—-—वि + अव + धा + क्त—दृष्टि से ओझल, छिपाया हुआ, गुप्त
- **व्यवहित**—भू° क° कृ°—-—वि + अव + धा + क्त—जिसका निरन्तर सम्बन्ध न हो
- **व्यवहित**—भू° क° कृ°—-—वि + अव + धा + क्त—किया गया, सम्पन्न
- **व्यवहित**—भू° क° कृ°—-—वि + अव + धा + क्त—भूला हुआ, छोड़ा हुआ
- **व्यवहित**—भू° क° कृ°—-—वि + अव + धा + क्त—आगे बढ़ा हुआ, आगे निकला हुआ
- **व्यवहित**—भू° क° कृ°—-—वि + अव + धा + क्त—विपक्षी, विरोधी
- **व्यवहृतिः**—स्त्री° —-—वि + अव + हृ + क्तिन्—अभ्यास, प्रक्रिया
- **व्यवहृतिः**—स्त्री° —-—वि + अव + हृ + क्तिन्—कर्म, सम्पादन
- **व्यवायः**—पुं°—-—वि + अव + अय् + अच्—वियोजन, विश्लेषण (अवयवों का) पृथक्करण

- **व्यवायः**—पुं°—-—वि + अव + अय् + अच्—विघटन
- **व्यवायः**—पुं°—-—वि + अव + अय् + अच्—आवरण, छिपाव
- **व्यवायः**—पुं°—-—वि + अव + अय् + अच्—हस्तक्षेप, अन्तराल
- **व्यवायः**—पुं°—-—वि + अव + अय् + अच्—अड़चन, रुकावट
- **व्यवायः**—पुं°—-—वि + अव + अय् + अच्—मैथुन, सम्भोग
- **व्यवायः**—पुं°—-—वि + अव + अय् + अच्—पवित्रता
- **व्यवायम्**—नपुं°—-—-—दीप्ति, आभा
- **व्यवायिन्**—पुं°—-—व्यवाय + इनि—विलासी, स्वेच्छाचारी
- **व्यवायिन्**—पुं°—-—व्यवाय + इनि—कामोद्दीपक, वाजीकरण
- **व्यवेत**—भू° क° कृ°—-—वि + अव + इ + क्त—वियोजित, विश्लिष्ट
- **व्यवेत**—भू° क° कृ°—-—वि + अव + इ + क्त—भिन्न
- **व्यष्टि**—स्त्री°—-—वि + अश् + क्तिन्—वैयक्तिकता, एकाकीपन
- **व्यष्टि**—स्त्री°—-—वि + अश् + क्तिन्—वितरणशील फैलाव
- **व्यष्टि**—स्त्री°—-—वि + अश् + क्तिन्—(वेदान्त° में) समष्टि को उसके पृथक्-पृथक अवयवों के रूप में देखना, एक अंश
- **व्यसनम्**—नपुं°—-—वि + अस् + ल्युट्—फ़ेक देना, दूर कर देना
- **व्यसनम्**—नपुं°—-—वि + अस् + ल्युट्—वियोजन, विभाजन
- **व्यसनम्**—नपुं°—-—वि + अस् + ल्युट्—उल्लंघन, व्यतिक्रमण
- **व्यसनम्**—नपुं°—-—वि + अस् + ल्युट्—हानि विनाश, पराजय, पतन, दोष, दुर्बलपक्ष
- **व्यसनम्**—नपुं°—-—वि + अस् + ल्युट्—विपत्ति, दुर्भाग्य, दुःख, अनिष्ट, संकट, अभाग्य
- **व्यसनम्**—नपुं°—-—वि + अस् + ल्युट्—आपत्काल, आवश्यकता
- **व्यसनम्**—नपुं°—-—वि + अस् + ल्युट्—(सूर्य आदि का) अस्त होना
- **व्यसनम्**—नपुं°—-—वि + अस् + ल्युट्—दुर्व्यसन, बुरीलत, बुरी आदत
- **व्यसनम्**—नपुं°—-—वि + अस् + ल्युट्—संलग्नता, जुट जाना, परिश्रमपूर्वक आसक्ति
- **व्यसनम्**—नपुं°—-—वि + अस् + ल्युट्—बहुत ज्यादा आदी होना
- **व्यसनम्**—नपुं°—-—वि + अस् + ल्युट्—जुर्म, पाप
- **व्यसनम्**—नपुं°—-—वि + अस् + ल्युट्—दण्ड
- **व्यसनम्**—नपुं°—-—वि + अस् + ल्युट्—अयोग्यता, अक्षमता

- **व्यसनम्**—नपुं°—-—वि + अस् + ल्युट्—निष्फल प्रयत्न
- **व्यसनम्**—नपुं°—-—वि + अस् + ल्युट्—हवा, वायु
- **व्यसनातिभारः**—पुं°—व्यसनम्-अतिभारः—-—भारी अनर्थ या संकट
- **व्यसनान्वित**—वि°—व्यसनम्-अन्वित—-—संकटग्रस्त, दुःख में फंसा हुआ
- **व्यसनार्त**—वि°—व्यसनम्-आर्त—-—संकटग्रस्त, दुःख में फंसा हुआ
- **व्यसनपीडित**—वि°—व्यसनम्-पीडित—-—संकटग्रस्त दुःख में फंसा हुआ
- **व्यसनिन्**—वि°—-—व्यसन + इनि—किसी दुर्व्यसन में ग्रस्त, दुश्चरित्र
- **व्यसनिन्**—वि°—-—व्यसन + इनि—अभागा, भाग्यहीन
- **व्यसनिन्**—वि°—-—व्यसन + इनि—किसी कार्य में अत्यन्त संलग्न
- **व्यसु**—वि°—-—विगताः असवः प्राणाः यस्य -प्रा° ब°—निर्जीव, मृतक
- **व्यस्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अस् + क्त—डाला हुआ, फेंका हुआ, उछाला हुआ
- **व्यस्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अस् + क्त—तितर-बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ
- **व्यस्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अस् + क्त—हटाया हुआ, दूर फेंका हुआ
- **व्यस्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अस् + क्त—वियुक्त, विभक्त अलगाया हुआ
- **व्यस्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अस् + क्त—पृथक् रूप से विचारित, एक एक करके ग्रहण
- **व्यस्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अस् + क्त—सरल, समासरहित (शब्द आदि)
- **व्यस्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अस् + क्त—वहुविध
- **व्यस्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अस् + क्त—हटाया गया, निकाला गया
- **व्यस्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अस् + क्त—विक्षुब्ध, कष्टमय, अव्यवस्थित
- **व्यस्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अस् + क्त—क्रमरहित, भग्नक्रम, विशृंखलित
- **व्यस्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अस् + क्त—उलटाया हुआ, उलट-पुलट किया हुआ
- **व्यस्त**—भू° क° कृ°—-—वि + अस् + क्त—विपर्यास (अनुपात आदि)
- **व्यस्तारः**—पुं°—-—-—हाथी के गंडस्थलों से मद का निकलना
- **व्याकरणम्**—नपुं°—-—व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः येन - वि + आ + कृ + ल्युट्—विग्रह, विश्लेषण
- **व्याकरणम्**—नपुं°—-—व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः येन - वि+ आ + कृ + ल्युट्—व्याकरण सम्बन्धी शब्द-पृथक्करण-प्रक्रिया, छः वेदांगों में से एक, व्याकरण
- **व्याकारः**—पुं°—-—वि + आ + कृ + घञ्—रूपान्तरण, रूपपरिवर्तन

- **व्याकारः**—पुं०——वि + आ + कृ + घञ्—विरूपता
- **व्याकीर्ण**—भू० क० कृ०——वि + आ + कृ + क्त—बिखेरा हुआ, इधर उधर फेंका हुआ
- **व्याकीर्ण**—भू० क० कृ०————अस्तव्यस्त किया हुआ
- **व्याकुल**—वि०——विशेषेण आकुलः-प्रा० स० —विक्षुब्ध, विस्मित, घबराया हुआ, किंकर्तव्य विमूढ़, शोकव्याकुल
- **व्याकुल**—वि०————आतंकित, उद्विग्न, भयभीत
- **व्याकुल**—वि०————भरापूरा, घिरा हुआ
- **व्याकुल**—वि०————संलग्न, व्यस्त
- **व्याकुल**—वि०————दमकने वाला, इधर उधर हिलजुल करने वाला
- **व्याकुलित**—वि०——वि + आ + कुल् + क्त—विश्लिष्ट, वियुक्त
- **व्याकुलित**—वि०——वि + आ + कुल् + क्त—व्याख्यात, स्पष्ट किया गया
- **व्याकुलित**—वि०——वि + आ + कुल् + क्त—विकृत, व्याकृष्ट, बिगाड़ा हुआ, विरूपित
- **व्याकूतिः**—स्त्री०——विशिष्टा आकूतिः -प्रा० स०—जालसाजी, छद्मवेश, धोखा
- **व्याकृत**—भू० क० कृ०——वि + आ + कृ + क्त— विश्लिष्ट, वियुक्त
- **व्याकृत**—भू० क० कृ०——वि + आ + कृ + क्त—व्याख्यात, स्पष्ट किया गया
- **व्याकृत**—भू० क० कृ०——वि + आ + कृ + क्त—विकृत, व्याकृष्ट, बिगाड़ा हुआ, विरूपित
- **व्याकृतिः**—स्त्री०——वि + आ + कृ + क्तिन्—विग्रह
- **व्याकृतिः**—स्त्री०——वि + आ + कृ + क्तिन्—विश्लेषण, व्याख्या
- **व्याकृतिः**—स्त्री०——वि + आ + कृ + क्तिन्—रूप परिवर्तन, विकास
- **व्याकृतिः**—स्त्री०——वि + आ + कृ + क्तिन्—व्याकरण
- **व्याक्रोश**—वि०——वि + आ + क्रुश् + अच्—फुलाया हुआ, प्रफुल्लित, पुष्पित, मुकुलित
- **व्याक्रोश**—वि०——वि + आ + क्रुश् + अच्—विकसित
- **व्याक्रोष**—वि०——वि + आ + क्रुष् + अच्—फुलाया हुआ, प्रफुल्लित, पुष्पित, मुकुलित
- **व्याक्रोष**—वि०——वि + आ + क्रुष् + अच्—विकसित
- **व्याक्षेपः**—पुं०——वि + आ + क्षिप् + घञ्—इधर उधर उछालना
- **व्याक्षेपः**—पुं०——वि + आ + क्षिप् + घञ्—अवरोध, रुकावट
- **व्याक्षेपः**—पुं०——वि + आ + क्षिप् + घञ्—विलम्ब
- **व्याक्षेपः**—पुं०——वि + आ + क्षिप् + घञ्—उलझन

- **व्याख्या**—स्त्री°—-—वि + आ + ख्या + अङ् + टाप्—वृत्तान्त, वर्णन
- **व्याख्या**—स्त्री°—-—वि + आ + ख्या + अङ् + टाप्—स्पष्टीकरण, विवृति, टीका, भाष्य
- **व्याख्यात**—वि°—-—वि + आ + ख्या + क्त—कथित, वर्णित
- **व्याख्यात**—वि°—-—वि + आ + ख्या + क्त—स्पटीकृत, विवृत, टीकायुक्त
- **व्याख्यातृ**—पुं°—-—वि + आ + ख्या + तृच्—व्याख्याकार, भाष्यकार
- **व्याख्यानम्**—नपुं°—-—वि + आ + ख्या + ल्युट्—संसूचन, वर्णन
- **व्याख्यानम्**—नपुं°—-—वि + आ + ख्या + ल्युट्—भाषण, वक्तृता
- **व्याख्यानम्**—नपुं°—-—वि + आ + ख्या + ल्युट्—स्पष्टीकरण, विवृति, अर्थकरण, टीका
- **व्याघट्टनम्**—नपुं°—-—वि + आ + घट् + ल्युट्—बिलोना, मथना
- **व्याघट्टनम्**—नपुं°—-—वि + आ + घट् + ल्युट्—रगड़ना, घर्षण
- **व्याघातः**—पुं°—-—वि + आ + हन् + क्त—रहड़ना
- **व्याघातः**—पुं°—-—वि + आ + हन् + क्त—थप्पड़, प्रहार
- **व्याघातः**—पुं°—-—वि + आ + हन् + क्त—विघ्न, रुकावट
- **व्याघातः**—पुं°—-—वि + आ + हन् + क्त—वचन विरोध
- **व्याघातः**—पुं°—-—वि + आ + हन् + क्त—एक अलंकार जिसमें परस्पर विरोधी फल एक ही कारण से उत्पन्न दिखाये जाते हैं
- **व्याघ्रः**—पुं°—-—व्याजिघ्रति-वि + आ + घ्रा + क—बाघ, चीता
- **व्याघ्रः**—पुं°—-—व्याजिघ्रति-वि + आ + घ्रा + क—सर्वोत्तम, प्रमुख, मुख्य
- **व्याघ्रः**—पुं°—-—व्याजिघ्रति-वि + आ + घ्रा + क—लालरंग का एरंड का पौधा
- **व्याघ्री**—स्त्री°—-—-—मादा चीता
- **व्याघ्रटः**—पुं°—व्याघ्रः-अटः—-—चातक पक्षी
- **व्याघ्रास्यः**—पुं°—व्याघ्रः-आस्यः—-—बिलाव
- **व्याघ्रनखः**—पुं°—व्याघ्रः-नखः—-—बाघ का पंजा
- **व्याघ्रनखः**—पुं°—व्याघ्रः-नखः—-—एक प्रकार का गन्धद्रव्य
- **व्याघ्रनखः**—पुं°—व्याघ्रः-नखः—-—खरौंच, नखक्षत
- **व्याघ्रनखम्**—नपुं°—व्याघ्रः-नखम्—-—बाघ का पंजा
- **व्याघ्रनखम्**—नपुं°—व्याघ्रः-नखम्—-—एक प्रकार का गन्धद्रव्य
- **व्याघ्रनखम्**—नपुं°—व्याघ्रः-नखम्—-—खरौंच, नखक्षत

- **व्याघ्रनायकः**—पुं°—व्याघ्रः-नायकः—-—गीदड़
- **व्याजः**—पुं°—-—व्यजति यथार्थव्यवहारात् अपगच्छति अनेन-वि + अज् + घञ्—धोखा, चाल, छल, जालसाजी
- **व्याजः**—पुं°—-—व्यजति यथार्थव्यवहारात् अपगच्छति अनेन-वि + अज् + घञ्—कला कौशल
- **व्याजः**—पुं°—-—व्यजति यथार्थव्यवहारात् अपगच्छति अनेन-वि + अज् + घञ्—बहाना, व्यपदेश, आभास
- **व्याजः**—पुं°—-—व्यजति यथार्थव्यवहारात् अपगच्छति अनेन-वि + अज् + घञ्—युक्ति, चाल, कूटयुक्ति
- **व्याजोक्तिः**—स्त्री°—व्याजः-उक्तिः—-—एक अलङ्कार जिसमें किसी कारण के स्पष्ट फल का जानबूझ कर कोई दूसरा कारण बताया जाता है, जहाँ वास्तविक भावना को कोई दूसरा कारण बताकर छिपा लिया जाता है
- **व्याजोक्तिः**—स्त्री°—व्याजः-उक्तिः—-—परोक्ष सङ्केत, व्यंग्योक्ति
- **व्याजनिन्दा**—स्त्री°—व्याजः-निन्दा—-—छल या कपट से की गई निन्दा
- **व्याजसुप्त**—वि°—व्याजः-सुप्त—-—झूठमूठ सोया हुआ
- **व्याजस्तुतिः**—स्त्री°—व्याजः-स्तुतिः—-—अंग्रेजी के `आइरनी' से मिलता जुलता एक अलङ्कार
- **व्याडः**—पुं°—-—वि + आ + अड् + अच्—मांस भक्षी जानवर
- **व्याडः**—पुं°—-—वि + आ + अड् + अच्—बदमाश, गुण्डा
- **व्याडः**—पुं°—-—वि + आ + अड् + अच्—साँप
- **व्याडः**—पुं°—-—वि + आ + अड् + अच्—इन्द्र
- **व्याडिः**—पुं°—-—-—एक प्रसिद्ध वैयाकरण
- **व्यात्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + दा + क—विवृत, फैलाया गया, फुलाया गया
- **व्यात्युक्षी**—स्त्री°—-—वि + आ + अति + उक्ष् + णिच् + अञ् + ङीष्—जलविहार, जलक्रीडा
- **व्यादानम्**—नपुं°—-—वि + आ + दा + ल्युट्—खोलना, उद्घाटन
- **व्यादिशः**—पुं°—-—विशेषेण आदिशति स्वे स्वे कर्मणि नियोजयति -वि + आ + दिश् + क—विष्णु का विशेषन
- **व्याधः**—पुं°—-—व्यध् + ण—शिकारी, बहेलिया (जाति से या पेशे के कारण)
- **व्याधः**—पुं°—-—व्यध् + ण—दुष्ट मनुष्य, अधम पुरुष
- **व्याधभीतः**—पुं°—व्याधः-भीतः—-—हरिण
- **व्याधामः**—पुं°—-—व्याध + अम् + णिच् + अच्—इन्द्र का वज्र
- **व्याधावः**—पुं°—-—-—इन्द्र का वज्र
- **व्याधिः**—पुं°—-—वि + आ + धा + कि—बीमारी, रोग, रुजा, अस्वस्थता
- **व्याधिः**—पुं°—-—वि + आ + धा + कि—कोढ़

- **व्याधिकर**—वि°—व्याधिः-कर—-—अस्वास्थ्यकर
- **व्याधिग्रस्त**—वि°—व्याधिः-ग्रस्त—-—रोगाक्रान्त, बीमार
- **व्याधित**—वि°—-—व्याधिः सञ्जातोऽस्य इतच्—रोगाक्रान्त, बीमार
- **व्याधूत**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + धू + क्त—झंझोड़ा हुआ, काँपता हुआ, थरथराता हुआ
- **व्यानः**—पुं°—-—व्यानिति सर्वशरीरं व्याप्नोति- वि + आ + अन् + अच्—शरीरस्थ पाँच प्राणों में से एक जो समस्त शरीर मे व्याप्त है
- **व्यानतम्**—नपुं°—-—वि + आ + नम् + क्त—मैथुन का एक विशेष प्रकार, रतिबन्ध
- **व्यापक**—वि° —-—विशेषेण आप्नोति-वि + आप + ण्वुल्—फैला हुआ, बहुग्राही, प्रसारी, विस्तृत रूप से फैलने वाला, सर्वतोमुखी
- **व्यापक**—वि° —-—विशेषेण आप्नोति-वि + आप + ण्वुल्—नितान्त सहवर्ती
- **व्यापकः**—पुं°—-—-—नितान्त सहवर्ती या अन्तर्हित विशेषण
- **व्यापकम्**—नपुं°—-—-—नितान्त सहवर्ती या अन्तर्हित गुण
- **व्यापत्तिः**—स्त्री°—-—वि + आ + पद् + क्तिन्—बर्बादी, संकट, दुर्भाग्य
- **व्यापत्तिः**—स्त्री°—-—वि + आ + पद् + क्तिन्—स्थानापन्नता
- **व्यापत्तिः**—स्त्री°—-—वि + आ + पद् + क्तिन्—मृत्यु
- **व्यापद्**—स्त्री°—-—वि + आ + पद् + क्विप्—सङ्कट, दुर्भाग्य
- **व्यापद्**—स्त्री°—-—वि + आ + पद् + क्विप्—रोग
- **व्यापद्**—स्त्री°—-—वि + आ + पद् + क्विप्—विशृङ्खलता, चित्तविक्षेप
- **व्यापद्**—स्त्री°—-—वि + आ + पद् + क्विप्—मृत्यु, निधन
- **व्यापनम्**—नपुं°—-—वि + आप् + ल्युट्—फैलना, पैठना, सर्वत्र फैल जाना
- **व्यापन्न**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + पद् + क्त—दुर्भाग्यग्रस्त, बर्बाद
- **व्यापन्न**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + पद् + क्त—विफल, उलट गया (गर्भस्राव हो गया)
- **व्यापन्न**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + पद् + क्त—चोट लगा हुआ, घायल
- **व्यापन्न**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + पद् + क्त—मृत, उपरत, मरा हुआ
- **व्यापन्न**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + पद् + क्त—विक्षिप्त, विकृत
- **व्यापन्न**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + पद् + क्त—स्थानापन्न, परिवर्तित
- **व्यापादः**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + पद् + णिच् + घञ्—हत्या, वध
- **व्यापादः**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + पद् + णिच् + घञ्—बर्बादी, विनाश
- **व्यापादः**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + पद् + णिच् + घञ्—दुर्भावना, द्वेष

- **व्यापादनम्**—भू॰ क॰ कृ॰—–—वि + आ + पद् + णिच् + ल्युट्—हत्या, वध
- **व्यापादनम्**—भू॰ क॰ कृ॰—–—वि + आ + पद् + णिच् + ल्युट्—बर्बादी, विनाश
- **व्यापादनम्**—भू॰ क॰ कृ॰—–—वि + आ + पद् + णिच् + ल्युट्—दुर्भावना, द्वेष
- **व्यापादित**—भू॰ क॰ कृ॰—–—वि + आ + पद् + णिच् + क्त—वध किया हुआ, क़तल किया हुआ, विनष्ट किया हुआ
- **व्यापादित**—भू॰ क॰ कृ॰—–—वि + आ + पद् + णिच् + क्त—बर्बाद, घायल, चोटिल
- **व्यापारः**—पुं॰—–—वि + आ + पृ + घञ्—नियोजन, संलग्नता, व्यावसाय, धन्धा
- **व्यापारः**—पुं॰—–—वि + आ + पृ + घञ्—प्रयोग, काम
- **व्यापारः**—पुं॰—–—वि + आ + पृ + घञ्—पेशा, वाणिज्य, व्यवसाय, कार्य
- **व्यापारः**—पुं॰—–—वि + आ + पृ + घञ्—कर्म, क्रिया, निष्पादन
- **व्यापारः**—पुं॰—–—वि + आ + पृ + घञ्—कार्यपद्धति, प्रक्रिया, कृत्य, प्रभाव
- **व्यापारः**—पुं॰—–—वि + आ + पृ + घञ्—ऊपर रक्खा जाने वाला
- **व्यापारः**—पुं॰—–—वि + आ + पृ + घञ्—उद्योग, प्रयत्न
- **व्यापारं कृ**—–—–—भाग लेना
- **व्यापारं कृ**—–—–—प्रभाव डालना
- **व्यापारं कृ**—–—–—हाथ डालना
- **व्यापारित**—भू॰ क॰ कृ॰—–—वि + आ + पृ + णिच् + क्त—काम पर लगाया हुआ, स्थापित, नियोजित, नियुक्त
- **व्यापारित**—भू॰ क॰ कृ॰—–—वि + आ + पृ + णिच् + क्त—रक्खा हुआ, निश्चित, जमाया हुआ
- **व्यापारिन्**—पुं॰—–—व्यापार + इनि—विक्रेता, व्यापार करने वाला
- **व्यापारिन्**—पुं॰—–—व्यापार + इनि—व्यवसायी
- **व्यापिन्**—वि॰—–—वि + आप् + णिनि—व्याप्त होने वाला, अपूर्ण करने वाला, अधिकार करने वाला
- **व्यापिन्**—वि॰—–—वि + आप् + णिनि—सर्वव्यापक, सहविस्तृत, नितान्त सहवर्ती
- **व्यापिन्**—वि॰—–—वि + आप् + णिनि—आवरक
- **व्यापिन्**—पुं॰—–—–—विष्णु का विशेषन
- **व्यापृत**—भू॰ क॰ कृ॰—–—वि + आपृ + क्त—काम में लगा हुआ, व्यस्त, नियोजित
- **व्यापृत**—भू॰ क॰ कृ॰—–—वि + आपृ + क्त—स्थापित, स्थिर किया हुआ
- **व्यापृत**—पुं॰—–—–—कर्मचारी, मन्त्री
- **व्यापृतिः**—स्त्री॰—–—व्यापृ + क्तिन्—काम में लगाना, व्यस्त करना, व्यावसाय

- **व्यापृतिः**—स्त्री°—-—व्यापृ + क्तिन्—प्रकार्य, कर्म
- **व्यापृतिः**—स्त्री°—-—व्यापृ + क्तिन्—चेष्टा
- **व्यापृतिः**—स्त्री°—-—व्यापृ + क्तिन्—पेशा, व्यावसाय
- **व्याप्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आप् + क्त—चारों ओर फैला हुआ, पैठा हुआ, व्यापक, विस्तार किया हुआ, आच्छादित, ढका हुआ
- **व्याप्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आप् + क्त—व्यापक, सर्वत्र फैला हुआ
- **व्याप्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आप् + क्त—भरा हुआ, पूर्ण
- **व्याप्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आप् + क्त—चारों ओर से लपेटा हुआ, घिरा हुआ
- **व्याप्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आप् + क्त—स्थापित, जमाया हुआ
- **व्याप्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आप् + क्त—प्राप्त किया हुआ, अधिकृत
- **व्याप्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आप् + क्त—समझा हुआ, सम्मिलित
- **व्याप्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आप् + क्त—नितांत ससक्त
- **व्याप्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आप् + क्त—प्रसिद्ध, विख्यात
- **व्याप्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आप् + क्त—फुलाया हुआ, बिछाया हुआ
- **व्याप्तिः**—स्त्री°—-—वि + आप् + क्तिन्—प्रसार, फैलाव
- **व्याप्तिः**—स्त्री°—-—वि + आप् + क्तिन्—विश्वतः फैलाव, नितांत सहवर्तिता, किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिला होना
- **व्याप्तिः**—स्त्री°—-—वि + आप् + क्तिन्—सार्वजनिक नियम, विश्वव्यापकता
- **व्याप्तिः**—स्त्री°—-—वि + आप् + क्तिन्—पूर्णता
- **व्याप्तिः**—स्त्री°—-—वि + आप् + क्तिन्—प्राप्ति
- **व्याप्तिग्रहः**—पुं°—व्याप्तिः-ग्रहः—-—सार्वजनिक सहवर्तिता का बोध
- **व्याप्तिज्ञानम्**—नपुं°—व्याप्तिः-ज्ञानम्—-—सार्वजनिक सहवर्तिता की जानकारी
- **व्याप्य**—वि°—-—वि + आप् + ण्यत्—व्यापकता के योग्य भरे जाने के योग्य
- **व्याप्यम्**—नपुं°—-—-—अनुमान प्रक्रिया का चिह्न (हेतु, साधन)
- **व्याप्यत्वम्**—नपुं°—-—व्याप्य + त्व—नित्यता
- **व्याप्यत्वासिद्धिः**—स्त्री°—व्याप्यत्वम्-असिद्धिः—-—अधूरी अटकल, अपूर्ण अनुमान
- **व्याभ्युक्षी**—स्त्री°—-—-—जलविहार, जलक्रीडा
- **व्यामः**—पुं°—-—वि + आ + अम् + घञ्—एक माप विशेष, जब दोनों हाथ पूर्ण रूप से दोनों ओर फैलाये हों तो हाथों की अंगुलियों के कोरों के वीच की दूरी

- **व्यामनम्**—नपुं॰——वि + आ + अम् + ल्युट्—एक माप विशेष, जब दोनों हाथ पूर्ण रूप से दोनों ओर फैलाये हों तो हाथों की अंगुलियों के कोरों के वीच की दूरी
- **व्यामिश्र**—वि॰ ——वि + आ + मिश्र + अच्—मिला हुआ मिश्रित, गड्ड-मड्ड किया हुआ
- **व्यामोहः**—पुं॰——वि + आ + मुह् + घञ्—प्रणयोन्माद
- **व्यामोहः**—पुं॰——वि + आ + मुह् + घञ्—व्याकुलता, परेशानी, बेचैनी
- **व्यायत**—भू॰ क॰ कृ॰——वि + आ + यम् + क्त—लम्बा, विस्तृत
- **व्यायत**—भू॰ क॰ कृ॰——वि + आ + यम् + क्त—फुलाया हुआ, खुला हुआ
- **व्यायत**—भू॰ क॰ कृ॰——वि + आ + यम् + क्त—जिसने व्यायाम किया है, अनुशिष्ट
- **व्यायत**—भू॰ क॰ कृ॰——वि + आ + यम् + क्त—व्यस्त, काम में लगा हुआ, अधिकृत
- **व्यायत**—भू॰ क॰ कृ॰——वि + आ + यम् + क्त—कठोर, दृढ़
- **व्यायत**—भू॰ क॰ कृ॰——वि + आ + यम् + क्त—मजबूत, गहन, अत्यधिक
- **व्यायत**—भू॰ क॰ कृ॰——वि + आ + यम् + क्त—ताकवर, शक्तिशाली
- **व्यायत**—भू॰ क॰ कृ॰——वि + आ + यम् + क्त—गहरा
- **व्यायतत्वम्**—नपुं॰——व्यायत + त्व—पुट्ठों का विकास
- **व्यायामः**—पुं॰——वि + आ + यम् + घञ्—विस्तार करना, फैलाना
- **व्यायामः**—पुं॰——वि + आ + यम् + घञ्—कसरत, शारीरिक, व्यायाभों का अभ्यास
- **व्यायामः**—पुं॰——वि + आ + यम् + घञ्—थकान, श्रम
- **व्यायामः**—पुं॰——वि + आ + यम् + घञ्—प्रयत्न, चेष्टा
- **व्यायामः**—पुं॰——वि + आ + यम् + घञ्—वाग्युद्ध, संघर्ष
- **व्यायामः**—पुं॰——वि + आ + यम् + घञ्—दूरी की माप विशेष
- **व्यायामिक**—वि॰——व्यायाम + ठक्—मल्लविद्या-विषयक, शारीरिक कसरत संबंधी
- **व्यायोगः**—पुं॰——वि + आ + युज् + घञ्—नाठ्यसाहित्य में एक प्रकार का एकांकी नाटक
- **व्याल**—वि॰——वि + आ + अल् + अच्—दुष्ट, दुर्व्यसनी
- **व्याल**—वि॰——वि + आ + अल् + अच्—बुरा, पापिष्ठ
- **व्याल**—वि॰——वि + आ + अल् + अच्—क्रूर, भीषण, बर्बर
- **व्यालः**—पुं॰————खूनी हाथी
- **व्यालः**—पुं॰————शिकार का जानवर

- **व्यालः**—पुं°———–—साँप
- **व्यालः**—पुं°———–—बाघ
- **व्यालः**—पुं°———–—चीता
- **व्यालः**—पुं°———–—राजा
- **व्यालः**—पुं°———–—ठग, वदमाश
- **व्यालः**—पुं°———–—विष्णु
- **व्यालखङ्गः**—पुं°—व्याल-खङ्गः—–—एक प्रकार की बूटी
- **व्यालनखः**—पुं°—व्याल-नखः—–—एक प्रकार की बूटी
- **व्यालग्राहः**—पुं°—व्याल-ग्राहः—–—सपेरा
- **व्यालग्राहिन्**—पुं°—व्याल-ग्राहिन्—–—सपेरा
- **व्यालमृगः**—पुं°—व्याल-मृगः—–—जंगली जानवर
- **व्यालमृगः**—पुं°—व्याल-मृगः—–—शिकारी चीता
- **व्यालरूपः**—पुं°—व्याल-रूपः—–—शिव का विशेषण
- **व्यालकः**—पुं°—–—व्याल + कन्—दुष्ट या खूनी हाथी
- **व्यालम्बः**—पुं°—–—विशेषेण आलम्बते वि + आ + लम्ब् + अच्—एक प्रकार का एरंड का पौधा
- **व्यालोल**—वि° —–—वि + आ + लोड् + अच्, डस्यलः—कांपने वाला, थरथराने वाला
- **व्यालोल**—वि° —–—वि + आ + लोड् + अच्, डस्यलः—अव्यवस्थित, अस्तव्यस्त
- **व्यावकलनम्**—नपुं°—–—वि + आ + अव + कल् + ल्युट्—घटाना
- **व्यावक्रोशी**—स्त्री°—–—वि + आ + अव + क्रुश् + णिच् + अञ् + ङीप्—परस्पर दुर्वचन कहना, आपस की गालीगलौज
- **व्यावभाषी**—स्त्री°—–—वि + आ + अव + भाष् + णिच् + अञ् + ङीप्—परस्पर दुर्वचन कहना, आपस की गालीगलौज
- **व्यावर्तः**—पुं°—–—वि + आ + वृत् + घञ्—घेरना, लपेटना
- **व्यावर्तः**—पुं°—–—वि + आ + वृत् + घञ्—क्रान्ति, भ्रमण, चक्कर खाना
- **व्यावर्तः**—पुं°—–—वि + आ + वृत् + घञ्—फटी हुई अर्थात् आगे को निकली हुई नाभि
- **व्यावर्तक**—वि°—–—वि + आ + वृत् + णिच् + ण्वुल्—लपेटने वाला, घेरा डालने वाला
- **व्यावर्तक**—वि°—–—वि + आ + वृत् + णिच् + ण्वुल्—निकालने वाला, अपवर्जन करने वाला, वियुक्त करने वाला
- **व्यावर्तक**—वि°—–—वि + आ + वृत् + णिच् + ण्वुल्—मुड़ने वाला
- **व्यावर्तक**—वि°—–—वि + आ + वृत् + णिच् + ण्वुल्—मोड़ खाने वाला

- **व्यावर्तनम्**—नपुं°—-—वि + आ + वृत् + ल्युट्—घेरना, लपेटना
- **व्यावर्तनम्**—नपुं°—-—वि + आ + वृत् + ल्युट्—घूमना, मुड़ना चक्करखाना
- **व्यावर्तनम्**—नपुं°—-—वि + आ + वृत् + ल्युट्—रस्सी आदि का गोल लपेट, पट्टी
- **व्यावल्गित**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + वल्ग् + क्त—पसीजा हुआ, द्रवित, विक्षुब्ध
- **व्यावहारिक**—वि°—-—व्यवहार + ठक्—व्यवसाय संबंधी, प्रयोगात्मक
- **व्यावहारिक**—वि°—-—व्यवहार + ठक्—कानूनी, वैध
- **व्यावहारिक**—वि°—-—व्यवहार + ठक्—प्रथागत, प्रचलित
- **व्यावहारिक**—वि°—-—व्यवहार + ठक्—भ्रमात्मक
- **व्यावहारिकः**—पुं°—-—-—परामर्शदाता, मंत्री
- **व्यावहारी**—स्त्री°—-—वि + आ + अव + हृ + णिच् + अञ् + ङीप्—पारस्परिक बंधन, लेन देन
- **व्यावहासी**—स्त्री°—-—वि + आ + अव + हस् + णिच् + अञ् + ङीप्—पारस्परिक अवज्ञा, एक दूसरे की हंसी उड़ाना
- **व्यावृत्तिः**—स्त्री°—-—वि + आ + वृत् + क्तिन्—आवरण, परदा डालना
- **व्यावृत्तिः**—स्त्री°—-—वि + आ + वृत् + क्तिन्—निकाल देना, निष्कासन
- **व्यावृत्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + वृत् + क्त—हटाया हुआ, वापिस लिया हुआ
- **व्यावृत्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + वृत् + क्त—वियुक्त किया गया, अलग हटाया हुआ
- **व्यावृत्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + वृत् + क्त—निकाला हुआ, एक ओर रक्खा हुआ
- **व्यावृत्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + वृत् + क्त—चक्कर खाया हुआ, मुड़ा हुआ
- **व्यावृत्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + वृत् + क्त—लपेटा हुआ, घिरा हुआ
- **व्यावृत्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + वृत् + क्त—रुका हुआ, उपरत
- **व्यावृत्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + वृत् + क्त—फाड़कर टुकड़े टुकड़े किया हुआ
- **व्यासः**—पुं°—-—वि + अस् + घञ्—वितरण, विभाजन
- **व्यासः**—पुं°—-—वि + अस् + घञ्—समास का विग्रह या विश्लेषण
- **व्यासः**—पुं°—-—वि + अस् + घञ्—अलगाव, पृथक्ता
- **व्यासः**—पुं°—-—वि + अस् + घञ्—प्रसार, फैलाव
- **व्यासः**—पुं°—-—वि + अस् + घञ्—अर्ज, चौड़ाई
- **व्यासः**—पुं°—-—वि + अस् + घञ्—वृत्त का व्यास
- **व्यासः**—पुं°—-—वि + अस् + घञ्—उच्चारणदोष

- **व्यासः**—पुं°—-—वि + अस् + घञ्—व्यवस्था, संकलन
- **व्यासः**—पुं°—-—वि + अस् + घञ्—व्यवस्थापक, संकलयिता
- **व्यासः**—पुं°—-—वि + अस् + घञ्—एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम
- **व्यासः**—पुं°—-—वि + अस् + घञ्—वह ब्राह्मण जो सार्वजनिक रूप से पुराणों की कथा करता है
- **व्यासक्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + सञ्ज् + क्त—जो दृढ़ता पूर्वक डटा रहे
- **व्यासक्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + सञ्ज् + क्त—जुड़ा हुआ, लगा हुआ, तुला हुआ व्यस्त
- **व्यासक्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + सञ्ज् + क्त—नियुक्त, पृथक् किया हुआ, अलग किया हुआ
- **व्यासक्त**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + सञ्ज् + क्त—परेशान, व्याकुल, घबड़ाया हुआ
- **व्यासङ्गः**—पुं°—-—वि + आ + सञ्ज् + घञ्—सटा होना, डटे रहना, तुला रहना
- **व्यासङ्गः**—पुं°—-—वि + आ + सञ्ज् + घञ्—एकनिष्ठता, भक्ति
- **व्यासङ्गः**—पुं°—-—वि + आ + सञ्ज् + घञ्—सपरिश्रम अध्ययन
- **व्यासङ्गः**—पुं°—-—वि + आ + सञ्ज् + घञ्—ध्यान
- **व्यासङ्गः**—पुं°—-—वि + आ + सञ्ज् + घञ्—पृथक्ता, संयोग
- **व्यासिद्ध**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + सिध् + क्त—प्रतिषिद्ध, वर्जित
- **व्यासिद्ध**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + सिध् + क्त—निषिद्धपण्य, चोरी का माल
- **व्याहत**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + हन् + क्त—अवरुद्ध, रोका हुआ
- **व्याहत**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + हन् + क्त—हटाया हुआ, पीछे ढकेला हुआ
- **व्याहत**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + हन् + क्त—विफल किया हुआ, निराश
- **व्याहत**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + हन् + क्त—व्याकुल, घवड़ाया हुआ, आतंकित
- **व्याहतार्थता**—स्त्री°—व्याहत-अर्थता—-—रचना का एक दोष
- **व्याहरणम्**—नपुं°—-—वि + आ + हृ + ल्युट्—बोलना, उच्चारण करना
- **व्याहरणम्**—नपुं°—-—वि + आ + हृ + ल्युट्—भाषण, वर्णन
- **व्याहारः**—पुं°—-—वि + आ + हृ + घञ्— भाषण, बोलना, वचन
- **व्याहारः**—पुं°—-—वि + आ + हृ + घञ्—आवाज़, स्वर, ध्वनि
- **व्याहृत**—भू° क° कृ°—-—वि + आ + हृ + क्त —कहा हुआ, बोला हुआ, उच्चारण किया हुआ
- **व्याहृतिः**—स्त्री°—-—वि + आ + हृ + क्तिन्—उच्चारण, भाषण, वचन
- **व्याहृतिः**—स्त्री°—-—वि + आ + हृ + क्तिन्—वक्तव्य, अभिव्यक्ति

- **व्याहृतिः**—स्त्री०—-—वि + आ + हृ + क्तिन्—सन्ध्या करते समय प्रतिदिन प्रत्येक ब्राह्मण द्वारा उच्चारित ईश्वर परक शब्द विशेष
- **व्युच्छित्तिः**—स्त्री०—-—वि + उत् + छिद् + क्तिन्—काट डालना, उन्मूलन, पूर्ण विनाश
- **व्युच्छेदः**—पुं०—-—वि + उत् + छिद् + घञ्—काट डालना, उन्मूलन, पूर्ण विनाश
- **व्युत्क्रमः**—पुं०—-—वि + उत् + क्रम् + घञ्—अतिक्रमण, विचलन
- **व्युत्क्रमः**—पुं०—-—वि + उत् + क्रम् + घञ्—उलटा क्रम, वैपरीत्य
- **व्युत्क्रमः**—पुं०—-—वि + उत् + क्रम् + घञ्—अव्यवस्था, गड़बड़ी
- **व्युत्क्रान्त**—भू० क० कृ०—-—वि + उ + क्रम् + क्त—अतिक्रान्त, उल्लंघन किया गया
- **व्युत्क्रान्त**—भू० क० कृ०—-—वि + उ + क्रम् + क्त—जो बिदा हो गया हो, छोड़कर चला गया हो, बीत गया हो
- **व्युत्थानम्**—स्त्री०—-—वि + उ + स्था + ल्युट्—महान् क्रियाकलाप
- **व्युत्थानम्**—स्त्री०—-—वि + उ + स्था + ल्युट्—किसी के विरुद्ध खड़े होना, विरोध, रुकावट
- **व्युत्थानम्**—स्त्री०—-—वि + उ + स्था + ल्युट्—स्वतन्त्र कर्म, मनोऽनुकूल कार्य
- **व्युत्थानम्**—स्त्री०—-—वि + उ + स्था + ल्युट्—धार्मिक मनोयोग की पूर्ति या भावात्मक मनन
- **व्युत्थानम्**—स्त्री०—-—वि + उ + स्था + ल्युट्—एक प्रकार का नृत्य
- **व्युत्थानम्**—स्त्री०—-—वि + उ + स्था + ल्युट्—(हाथी को) उठाना
- **व्युत्थितिः**—स्त्री०—-—वि + उ + स्था + क्तिन्—महान् क्रियाकलाप
- **व्युत्थितिः**—स्त्री०—-—वि + उ + स्था + क्तिन्—किसी के विरुद्ध खड़े होना, विरोध, रुकावट
- **व्युत्थितिः**—स्त्री०—-—वि + उ + स्था + क्तिन्—स्वतन्त्र कर्म, मनोऽनुकूल कार्य
- **व्युत्थितिः**—स्त्री०—-—वि + उ + स्था + क्तिन्—धार्मिक मनोयोग की पूर्ति या भावात्मक मनन
- **व्युत्थितिः**—स्त्री०—-—वि + उ + स्था + क्तिन्—एक प्रकार का नृत्य
- **व्युत्थितिः**—स्त्री०—-—वि + उ + स्था + क्तिन्—(हाथी को) उठाना
- **व्युत्पत्तिः**—स्त्री०—-—वि + उत् + पद + क्तिन्—मूल, उत्पत्ति
- **व्युत्पत्तिः**—स्त्री०—-—वि + उत् + पद + क्तिन्—व्युत्पादन, निर्वचन
- **व्युत्पत्तिः**—स्त्री०—-—वि + उत् + पद + क्तिन्—पूरी प्रवीणता, पूरी जानकारी
- **व्युत्पत्तिः**—स्त्री०—-—वि + उत् + पद + क्तिन्—विद्वत्ता, ज्ञान
- **व्युत्पन्न**—भू० क० कृ०—-—वि + उत् + पद + क्त—उत्पादित, पैदा किया गया
- **व्युत्पन्न**—भू० क० कृ०—-—वि + उत् + पद + क्त—निर्वचन द्वारा निर्मित

- **व्युत्पन्न**—भू० क० कृ०—-—वि + उत् + पद + क्त—व्याकरण द्वारा निष्पन्न, निरुक्त, (शब्द) जिसके निर्वचन का पता लग गया हो (विप० अव्युत्पन्न या मूल)
- **व्युत्पन्न**—भू० क० कृ०—-—वि + उत् + पद + क्त—पूरा किया गया, सम्पन्न किया गया
- **व्युत्त**—भू० क० कृ०—-—वि + उन्द् + क्त—क्लिन्न, आर्द्र, भिगोया हुआ
- **व्युदस्त**—भू० क० कृ०—-—वि + उद् + अस् + क्त—एक ओर फेंका हुआ, अस्वीकृत, दूर किया हुआ
- **व्युदासः**—पुं०—-—वि + उद् + अस् + घञ्—एक ओर फेंकना, अस्वीकृत
- **व्युदासः**—पुं०—-—वि + उद् + अस् + घञ्—निकाल देना
- **व्युदासः**—पुं०—-—वि + उद् + अस् + घञ्—प्रतिषेध
- **व्युदासः**—पुं०—-—वि + उद् + अस् + घञ्—उपेक्षा, उदासीनता
- **व्युदासः**—पुं०—-—वि + उद् + अस् + घञ्—हत्या, विनाश
- **व्युपदेशः**—पुं०—-—वि + उप + दिश् + घञ्—व्याज, बहाना
- **व्युपरमः**—पुं०—-—वि + उप + रम् + अप्—बिराम, यति, समाप्ति
- **व्युपशमः**—पुं०—-—वि + उप + शम् + अच्—विराम का अभाव
- **व्युपशमः**—पुं०—-—वि + उप + शम् + अच्—अशान्ति
- **व्युपशमः**—पुं०—-—वि + उप + शम् + अच्—पूर्ण विराम
- **व्युष्ट**—भू० क० कृ०—-—वि + उष् + क्त—जलाया गया
- **व्युष्ट**—भू० क० कृ०—-—वि + उष् + क्त—पौफटी, प्रभात
- **व्युष्ट**—भू० क० कृ०—-—वि + उष् + क्त—जो उज्ज्वल या स्वच्छ हो
- **व्युष्ट**—भू० क० कृ०—-—वि + उष् + क्त—बसा हुआ
- **व्युष्टम्**—नपुं०—-—-—पौ फटना, प्रभात
- **व्युष्टम्**—नपुं०—-—-—दिन
- **व्युष्टम्**—नपुं०—-—-—फल
- **व्युष्टिः**—स्त्री०—-—वि + वस् + क्तिन्—प्रभात
- **व्युष्टिः**—स्त्री०—-—वि + वस् + क्तिन्—समृद्धि
- **व्युष्टिः**—स्त्री०—-—वि + वस् + क्तिन्—प्रशंसा
- **व्युष्टिः**—स्त्री०—-—वि + वस् + क्तिन्—फल, परिणाम
- **व्यूढ**—भू० क० कृ०—-—वि + वह् + क्त—फुलाया हुआ, विकसित, विशाल, व्यापक

- **व्यूढ**—भू० क० कृ०—-—वि + वह् + क्त—दृढ़, सटा हुआ
- **व्यूढ**—भू० क० कृ०—-—वि + वह् + क्त—क्रमबद्ध, व्यवस्थित, (सेना आदि) सुविन्यस्त
- **व्यूढ**—भू० क० कृ०—-—वि + वह् + क्त—अव्यवस्थित, क्रमहीन
- **व्यूढ**—भू० क० कृ०—-—वि + वह् + क्त—विवाहित
- **व्यूढकङ्कट**—वि०—व्यूढ-कङ्कट—-—कवचित, जिरह वख्तर पहने हुए
- **व्यूत**—वि०—-—वि + वे + क्त—अन्तर्वलित, सीया गया, गूँथा गया
- **व्यूतिः**—स्त्री०—-—वि + वे + क्तिन्—बुनाई, सिलाई
- **व्यूतिः**—स्त्री०—-—वि + वे + क्तिन्—बुनाई की मजदूरी
- **व्यूहः**—पुं०—-—वि + ऊह + घञ्—सैनिक विन्यास
- **व्यूहः**—पुं०—-—वि + ऊह + घञ्—सेना, दल, टुकड़ी
- **व्यूहः**—पुं०—-—वि + ऊह + घञ्—बड़ीमात्रा, समवाय, समुच्चय, संग्रह
- **व्यूहः**—पुं०—-—वि + ऊह + घञ्—भाग, अंश, उपशीर्ष
- **व्यूहः**—पुं०—-—वि + ऊह + घञ्—शरीर
- **व्यूहः**—पुं०—-—वि + ऊह + घञ्—संरचन, निर्माण
- **व्यूहः**—पुं०—-—वि + ऊह + घञ्—तर्कना, तर्क
- **व्यूहपार्ष्णिः**—स्त्री०—व्यूहः-पार्ष्णिः—-—सेना का पिछला भाग
- **व्यूहभङ्गः**—पुं०—व्यूहः-भङ्गः—-—सैनिक व्यूह को तोड़ देना
- **व्युहभेदः**—पुं०—व्यूहः-भेदः—-—सैनिक व्यूह को तोड़ देना
- **व्यूहनम्**—नपुं०—-—वि + ऊह् + ल्युट्—सेना को व्यवस्थित करना, सेना को क्रमबद्ध करना
- **व्यूहनम्**—नपुं०—-—वि + ऊह् + ल्युट्—शरीर के अंगों की संरचना
- **व्यृद्धिः**—स्त्री०—-—विगता ऋद्धिः-प्रा० स०—समृद्धि का अभाव, बुरी क़िस्मत, दुर्भाग्य
- **व्ये**—भ्वा० उभ० <व्ययति>, <व्ययते>, <ऊत>, प्रेर० <व्यायति>, <व्यायते>, इच्छा० <विव्यासति>—-—-—ढकना
- **व्ये**—भ्वा० उभ० <व्ययति>, <व्ययते>, <ऊत>, प्रेर० <व्यायति>, <व्यायते>, इच्छा० <विव्यासति>—-—-—सीना
- **व्योकारः**—पुं०—-—व्यो + कृ + अण्—लुहार
- **व्योमन्**—नपुं०—-—व्ये + मनिन्, पृषो०—आकाश, अन्तरिक्ष
- **व्योमन्**—नपुं०—-—व्ये + मनिन्, पृषो०—जल
- **व्योमन्**—नपुं०—-—व्ये + मनिन्, पृषो०—सूर्य का मन्दिर

- **व्योमन्**—नपुं॰———व्ये + मनिन्, पृषो॰—अभ्रक
- **व्योमोदकम्**—नपुं॰—व्योमन्-उदकम्———बारिश का पानी, ओस
- **व्योमकेशः**—पुं॰—व्योमन्-केशः———शिव का विशेषण
- **व्योमकेशिन्**—पुं॰—व्योमन्-केशिन्———शिव का विशेषण
- **व्योमगंगा**—स्त्री॰—व्योमन्-गंगा———स्वर्गीय गंगा
- **व्योमचारिन्**—पुं॰—व्योमन्-चारिन्———देव
- **व्योमचारिन्**—पुं॰—व्योमन्-चारिन्———पक्षी
- **व्योमचारिन्**—पुं॰—व्योमन्-चारिन्———सन्त, महात्मा
- **व्योमचारिन्**—पुं॰—व्योमन्-चारिन्———ब्राह्मण
- **व्योमचारिन्**—पुं॰—व्योमन्-चारिन्———तारा, नक्षत्र
- **व्योमधूमः**—पुं॰—व्योमन्-धूमः———बादल
- **व्योमनाशिका**—स्त्री॰—व्योमन्-नाशिका———एक प्रकार की बटेर, लवा
- **व्योममंजरम्**—नपुं॰—व्योमन्-मंजरम्———झंडा, पताका
- **व्योममंडलन्**—नपुं॰—व्योमन्-मंडलन्———झंडा, पताका
- **व्योममुद्गरः**—पुं॰—व्योमन्-मुद्गरः———हवा का झोंका
- **व्योमयानम्**—नपुं॰—व्योमन्-यानम्———दिव्यसवारी, आकाशयान
- **व्योमशद्**—पुं॰—व्योमन् -शद्———देव, सुर
- **व्योमशद्**—पुं॰—व्योमन् -शद्———गन्धर्व
- **व्योमशद्**—पुं॰—व्योमन् -शद्———भूत-प्रेत
- **व्योमस्थली**—स्त्री॰—व्योमन् -स्थली———पृथ्वी
- **व्योमस्पृश्**—वि॰—व्योमन्-स्पृश्———गगनचुंबी, अत्यन्त ऊँचा
- **व्रज्**—भ्वा॰ पर॰ <व्रजति>————जाना, चलना, प्रगति करना
- **व्रज्**—भ्वा॰ पर॰ <व्रजति>————पधारना, पहुँचना दर्शन करना
- **व्रज्**—भ्वा॰ पर॰ <व्रजति>————बिदा होना, सेवा से निवृत्त होना, पीछे हटना
- **व्रज्**—भ्वा॰ पर॰ <व्रजति>————(समय का) बीतना
- **अनुव्रज्**—भ्वा॰ पर॰—अनु-व्रज्——— बाद में जाना, अनुगमन करना
- **अनुव्रज्**—भ्वा॰ पर॰—अनु-व्रज्———अभ्यास करना, सम्पन्न करना

- **अनुव्रज्**—भ्वा० पर०—अनु-व्रज्—-—सहारा लेना
- **आव्रज्**—भ्वा० पर०—आ-व्रज्—-—आना, पहुँचना
- **परिव्रज्**—भ्वा० पर०—परि-व्रज्—-—भिक्षु या साधु के रूप में इधर-उधर घूमना, संन्यासी या परिव्राजक हो जाना
- **प्रव्रज्**—भ्वा० पर०—प्र-व्रज्—-—निर्वासित होना
- **प्रव्रज्**—भ्वा० पर०—प्र-व्रज्—-—सांसारिक वासनाओं को छोड़ देना, चौथे आश्रम में प्रविष्ट होना, अर्थात् संन्यासी हो जाना
- **व्रजः**—पुं०—-—व्रज् + क—समुच्चय, संग्रह, रेवड़, समूह
- **व्रजः**—पुं०—-—व्रज् + क—ग्वालों के रहने का स्थान
- **व्रजः**—पुं०—-—व्रज् + क—गोष्ठ, गौशाला
- **व्रजः**—पुं०—-—व्रज् + क—आवास, विश्रामस्थल
- **व्रजः**—पुं०—-—व्रज् + क—सड़क, मार्ग
- **व्रजः**—पुं०—-—व्रज् + क—बादल
- **व्रजः**—पुं०—-—व्रज् + क—मथुरा के निकट एक जिला
- **व्रजाङ्गना**—स्त्री०—व्रजः-अङ्गना—-—व्रज में रहने वाली स्त्री, ग्वालन
- **व्रजयुवतिः**—स्त्री०—व्रजः-युवतिः—-—व्रज में रहने वाली स्त्री, ग्वालन
- **व्रजजिरम्**—नपुं०—व्रजः-अजिरम्—-—गोशाला
- **व्रजकिशोरः**—पुं०—व्रजः-किशोरः—-—कृष्ण के विशेषण
- **व्रजनाथः**—पुं०—व्रजः-नाथः—-—कृष्ण के विशेषण
- **व्रजमोहनः**—पुं०—व्रजः-मोहनः—-—कृष्ण के विशेषण
- **व्रजवरः**—पुं०—व्रजः-वरः—-—कृष्ण के विशेषण
- **व्रजवल्लभः**—पुं०—व्रजः-वल्लभः—-—कृष्ण के विशेषण
- **व्रजनम्**—नपुं०—-—व्रज् + ल्युट्—घूमना, फिरना, यात्रा करना
- **व्रजनम्**—नपुं०—-—व्रज् + ल्युट्—निर्वासन, देश निकाला
- **व्रज्या**—स्त्री०—-—व्रज् + क्यप् + टाप्—साधु या भिक्षु के रूप में इधर-उधर घूमना
- **व्रज्या**—स्त्री०—-—व्रज् + क्यप् + टाप्—आक्रमण, हमला, प्रस्थान
- **व्रज्या**—स्त्री०—-—व्रज् + क्यप् + टाप्—खेड़, समुदाय, जनजाति या क़बीला, संप्रदाय
- **व्रज्या**—स्त्री०—-—व्रज् + क्यप् + टाप्—रंगभूमि, नाट्यशाला
- **व्रण्**—भ्वा० पर० <व्रजति>—-—-—ध्वनि करना

- **व्रण्**—चुरा॰ उभ॰ <व्रणयति>, <व्रणयते>—————चोट पहुँचाना, घायल करना
- **व्रणः**—पुं॰———व्रण् + अच्—घाव, क्षत,ज़ख्म, चोट
- **व्रणः**—पुं॰———व्रण् + अच्—फोड़ा, नासूर
- **व्रणम्**—नपुं॰—————घाव, क्षत,ज़ख्म, चोट
- **व्रणम्**—नपुं॰—————फोड़ा, नासूर
- **व्रणकृत्**—वि॰—व्रणः-कृत्———घाव करने वाला
- **व्रणकृत्**—पुं॰—व्रणः-कृत्———ब्भिलावे का पेड़
- **व्रणविरोपण**—वि॰—व्रणः-विरोपण———घाव भरने वाला
- **व्रणशोधनम्**—नपुं॰—व्रणः-शोधनम्———घाव का साफ़ करना तथा पट्टी बाँधना
- **व्रणहः**—पुं॰—व्रणः-हः———एरंड का पौधा
- **व्रणित**—वि॰———व्रण + इतच्—घायल, जिसके खरोंच आ गई हो
- **व्रतः**—पुं॰———व्रज् + घ, जस्य तः—भक्ति या साधना का धार्मिक कृत्य, प्रतिज्ञात का पालन, प्रतिज्ञा, पण
- **व्रतः**—पुं॰———व्रज् + घ, जस्य तः—संकल्प, प्रतिज्ञा, दृढ़ निश्यय
- **व्रतः**—पुं॰———व्रज् + घ, जस्य तः—भक्ति या आस्था का पदार्थ, भक्ति,
- **व्रतः**—पुं॰———व्रज् + घ, जस्य तः—संस्कार अनुष्ठान, अभ्यास
- **व्रतः**—पुं॰———व्रज् + घ, जस्य तः—जीवनचर्या, आचरण, चालचलन
- **व्रतः**—पुं॰———व्रज् + घ, जस्य तः—अध्यादेश, विधि, नियम
- **व्रतः**—पुं॰———व्रज् + घ, जस्य तः—यज्ञ
- **व्रतः**—पुं॰———व्रज् + घ, जस्य तः—कर्म, करतब, कार्य
- **व्रतम्**—नपुं॰———व्रज् + घ, जस्य तः—भक्ति या साधना का धार्मिक कृत्य, प्रतिज्ञात का पालन, प्रतिज्ञा, पण
- **व्रतम्**—नपुं॰———व्रज् + घ, जस्य तः—संकल्प, प्रतिज्ञा, दृढ़ निश्यय
- **व्रतम्**—नपुं॰———व्रज् + घ, जस्य तः—भक्ति या आस्था का पदार्थ, भक्ति,
- **व्रतम्**—नपुं॰———व्रज् + घ, जस्य तः—संस्कार अनुष्ठान, अभ्यास
- **व्रतम्**—नपुं॰———व्रज् + घ, जस्य तः—जीवनचर्या, आचरण, चालचलन
- **व्रतम्**—नपुं॰———व्रज् + घ, जस्य तः—अध्यादेश, विधि, नियम
- **व्रतम्**—नपुं॰———व्रज् + घ, जस्य तः—यज्ञ
- **व्रतम्**—नपुं॰———व्रज् + घ, जस्य तः—कर्म, करतब, कार्य

- **व्रताचरणम्**—नपुं°—व्रतः-आचरणम्—-—किसी प्रतिज्ञा का पालन करना
- **व्रतादेशः**—पुं°—व्रतः-आदेशः—-—(किसी द्विज के) बालक का यज्ञोपवीत संस्कार
- **व्रतोपवासः**—पुं°—व्रतः-उपवासः—-—किसी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए अनशन करना
- **व्रतग्रहणम्**—नपुं°—व्रतः-ग्रहणम्—-—किसी धार्मिक अनुष्ठान को पूरा करने के लिए संकल्प लेना
- **व्रतचर्यः**—पुं°—व्रतः- चर्यः—-—ब्रह्मचारी, वेदविद्यार्थी
- **व्रतचर्या**—स्त्री°—व्रतः-चर्या—-—ब्रह्मचर्य का पालन करना
- **व्रतपारणम्**—नपुं°—व्रतः-पारणम्—-—उपवास खोलना या प्रतिज्ञा की सफल समाप्ति
- **व्रतपारणा**—स्त्री°—व्रतः-पारणा—-—उपवास खोलना या प्रतिज्ञा की सफल समाप्ति
- **व्रतभङ्गः**—पुं°—व्रतः-भङ्गः—-—संकल्प तोड़ना
- **व्रतभङ्गः**—पुं°—व्रतः-भङ्गः—-—प्रतिज्ञा तोड़ना
- **व्रतभिक्षा**—स्त्री°—व्रतः-भिक्षा—-—उपनयन संस्कार के अवसर पर भिक्षा मांगना
- **व्रतलोपनम्**—नपुं°—व्रतः-लोपनम्—-—प्रतिज्ञा को तोड़ना
- **व्रतवैकल्पम्**—नपुं°—व्रतः-वैकल्पम्—-—किसी धार्मिक संकल्प का अधूरा रह जाना
- **व्रतसंग्रहः**—पुं°—व्रतः-संग्रहः—-—व्रत की दीक्षा लेना
- **व्रतस्नातकः**—पुं°—व्रतः-स्नातकः—-—वह ब्राह्मण जिसने ब्रह्मचर्य आश्रम की अवस्था को पूरा कर लिया हैइइ अर्थात् ब्रह्मचर्य नामक प्रथम आश्रम
- **व्रतति**—स्त्री°—-—प्र + तन् + क्ति च, पृषो° पस्य वः—बेल, लता
- **व्रतति**—स्त्री°—-—-—फैलाव, विस्तार
- **व्रतती**—स्त्री°—-—-—बेल, लता
- **व्रतती**—स्त्री°—-—-—फैलाव, विस्तार
- **व्रतिन्**—वि°—-—व्रत + इनि—प्रतिज्ञा पालन करने वाला, भक्त, पुण्यात्मा
- **व्रतिन्**—पुं°—-—व्रत + इनि—ब्रह्मचारी
- **व्रतिन्**—पुं°—-—व्रत + इनि—संन्यासी, भक्त
- **व्रतिन्**—पुं°—-—व्रत + इनि—जो यज्ञ का उपक्रम करता है
- **व्रध्नः**—पुं°—-—-—सूर्य
- **व्रध्नः**—पुं°—-—-—वृक्ष की जड़
- **व्रध्नः**—पुं°—-—-—दिन
- **व्रध्नः**—पुं°—-—-—मदार का पौधा

- **व्रध्नः**—पुं°————सीसा
- **व्रध्नः**—पुं°————घोड़ा
- **व्रध्नः**—पुं°————शिव या ब्रह्मा का विशेषण
- **व्रह्मन्**—नपुं°————
- **व्रह्मन्**—नपुं°————परमात्मा जो निराकार और निर्गुण समझा जाता है
- **व्रह्मन्**—नपुं°————स्तुतिपरक सूक्त
- **व्रह्मन्**—नपुं°————पुनीत पाठ
- **व्रह्मन्**—नपुं°————वेद
- **व्रह्मन्**—नपुं°————ईश्वरपरक पावन अक्षर,
- **व्रह्मन्**—नपुं°————पुरोहितवर्ग या ब्रह्मण समुदाय
- **व्रह्मन्**—नपुं°————ब्राह्मण की शक्ति या ऊर्जा
- **व्रह्मन्**—नपुं°————धार्मिक साधना या तपस्या
- **व्रह्मन्**—नपुं°————ब्रह्मचर्य, सतीत्व
- **व्रह्मन्**—नपुं°————मोक्ष या निर्वाण
- **व्रह्मन्**—नपुं°————ब्रह्मज्ञान, अध्यात्मविद्या
- **व्रह्मन्**—नपुं°————बेदों का ब्राह्मणभाग
- **व्रह्मन्**—नपुं°————धनदौलत, संपत्ति
- **व्रह्मन्**—पुं°————परमात्मा, ब्रह्मा, पावन त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) में प्रथम जिनको संसार की रचना का कार्य सौंपा गया है
- **व्रह्मन्**—पुं°————ब्राह्मण
- **व्रह्मन्**—पुं°————भक्त
- **व्रह्मन्**—पुं°————सोमयाग में नियुक्त चार ऋत्विजों (पुरोहितों) में से एक
- **व्रह्मन्**—पुं°————धर्मज्ञान का ज्ञाता
- **व्रह्मन्**—पुं°————सूर्य
- **व्रह्मन्**—पुं°————प्रतिभा
- **व्रह्मन्**—पुं°————सता प्रजापतियों (मरीचि, अत्रि, अंगिरस्, पुलस्त्य, पुलह, ऋतु और और वसिष्ठ) का विशेषण
- **व्रह्मन्**—पुं°————बृहस्पति का विशेषण
- **व्रह्मन्**—पुं°————शिव का विशेषण

- **व्रश्च्**—तुदा° पर° <वृश्चति>, <वृक्ण्>, प्रेर° <व्रश्चयति>, <व्रश्चयते>, इच्छा° <विव्रश्चिषति>, <विव्रक्षति>—————काटना, काट डालना, फाड़ना, चीरना
- **व्रश्च्**—तुदा° पर° <वृश्चति>, <वृक्ण्>, प्रेर° <व्रश्चयति>, <व्रश्चयते>, इच्छा° <विव्रश्चिषति>, <विव्रक्षति>—————घायल करना
- **व्रश्चनः**—पुं°———व्रश्च् + ल्युट्—छोटी आरी
- **व्रश्चनः**—पुं°———व्रश्च् + ल्युट्—बारीक रेती जिसे सुनार काम में लाते हैं
- **व्रश्चनम्**—नपुं°—————काटना, फाड़ना घायल करना
- **व्राजिः**—स्त्री°———व्रज् + इञ्—हवा का झोंका, तूफानी हवा, झंझावात
- **व्रातः**—पुं°———वृ + अतच्, पृषो° साधुः—समुदाय, रेवड़, समुच्चय
- **व्रातम्**—नपुं°—————शारीरिक श्रम, मजदूरी
- **व्रातम्**—नपुं°—————दैनिक मजदूरी
- **व्रातम्**—नपुं°—————यदा-यदा कार्य में नियुक्ति
- **व्रातीन**—वि°———व्रातेन जीवति - व्रात् + ख—दैनिक मजदूरी से जीविका चलाने वाला, किराये का मजदूर, बेलदार, झल्ली वाला
- **व्रात्यः**—पुं°———व्रातात् समूहात् च्यवति-यत्—प्रथम तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का पुरुष जो मुख्य संस्कार या शोधक कृत्यों का अनुष्ठान न करने के कारण पतित हो गया है (जिसका उपनयन संस्कार नहीं हुआ); जातिबहिष्कृत-भवत्या हि व्रात्याघमपतितपाखण्डपरिषत्परित्राणस्नेहः @ गंगा° ३७
- **व्रात्यः**—पुं°—————नीच पुरुष, अधम पुरुष
- **व्रात्यः**—पुं°—————विशेष नीच जाति (शूद्रपिता और क्षत्रिय माता की सन्तान) का पुरुष
- **व्रात्यब्रुव**—वि°—व्रात्यः-ब्रुव———जो अपने आपको `व्रात्य' कहता है
- **व्रात्यस्तोमः**—पुं°—व्रात्यः-स्तोमः———उपयुक्त संस्कारों का अनुष्ठान न करने के कारण छीने गये अधिकारों को फिर से प्राप्त करने के लिए किया गया यज्ञ
- **व्री**—क्र्या° पर° <व्रिणाति>, <व्रीणाति>—————छांटना, चुनना
- **व्री**—दिवा° आ° <व्रीयते>, <व्रीण>—————जाना, हिलना-जुलना
- **व्री**—दिवा° आ° <व्रीयते>, <व्रीण>—————चुना जाना
- **व्रीड्**—दिवा° पर° <व्रीड्यति>—————लज्जित होना, शर्मिन्दा होना
- **व्रीड्**—दिवा° पर° <व्रीड्यति>—————फेंकना, डालना, भेज देना
- **व्रीडः**—पुं°———व्रीड् + घञ् —लज्जा
- **व्रीडः**—पुं°———व्रीड् + घञ् —विनय, लज्जाशीलता
- **व्रीडा**—स्त्री°———व्रीड् + अ + टाप्—लज्जा
- **व्रीडा**—स्त्री°———व्रीड् + अ + टाप्—विनय, लज्जाशीलता

- **व्रीडित**—भू० क० कृ०—-—व्रीड् + क्त—लज्जित किया गया, शर्मिन्दा, लज्जाशील
- **व्रीस्**—भ्वा० पर० <व्रीसति>, चुरा० उभ० <व्रीसयति>, <व्रीसयते>—-—-—क्षति पहुँचाना, हत्या करना
- **व्रीहिः**—पुं०—-—व्री + हि, किच्च—चावल
- **व्रीहिः**—पुं०—-—व्री + हि, किच्च—चावल का दाना
- **व्रीह्यगारम्**—नपुं०—व्रीहिः-अगारम्—-—धान्यागार, खत्ती
- **व्रीहिकाञ्चनम्**—नपुं०—व्रीहिः-काञ्चनम्—-—मसूर की दाल
- **व्रीहिराजिकम्**—नपुं०—व्रीहिः-राजिकम्—-—चना, कंगू या कांगनी चावल
- **व्रुड्**—तुदा० पर० <व्रुडति>,—-—-—ढकना
- **व्रुड्**—तुदा० पर० <व्रुडति>,—-—-—इकट्ठा होना
- **व्रुड्**—तुदा० पर० <व्रुडति>,—-—-—एकत्र करना, संचय करना
- **व्रुड्**—तुदा० पर० <व्रुडति>,—-—-—डूबना, नीचे जाना
- **व्रुस्**—भ्वा० पर० , उभ०—-—-—क्षति पहुँचाना, हत्या करना
- **व्रैहेय**—वि०—-—व्रीहि + ढक्—चावलों के योग्य
- **व्रैहेय**—वि०—-—व्रीहि + ढक्—चावल के साथ बोया हुआ
- **व्रैहेयम्**—नपुं०—-—-—चावल का खेत, वह खेत जिसमें चावल बोये जाने चाहिए
- **व्ली**—क्र्या० पर० <व्लिनाति>, प्रेर० <व्लेपयति>—-—-—जाना, हिलना-जुलना
- **व्ली**—क्र्या० पर० <व्लिनाति>, प्रेर० <व्लेपयति>—-—-—भरण-पोषण करना, थामे रखना, निर्वाह करना
- **व्ली**—क्र्या० पर० <व्लिनाति>, प्रेर० <व्लेपयति>—-—-—छांटना, चुनना
- **व्लेक्ष्**—चुरा० उभ० <व्लेक्षयति>, <व्लेक्षयते>—-—-—देखना
- **शः**—पुं०—-—शो + ड —काटने वाला, विनाशकर्ता
- **शः**—पुं०—-—शो + ड —शस्त्र
- **शः**—पुं०—-—शो + ड —शिव
- **शम्**—नपुं०—-—-—आनन्द
- **शंयु**—वि०—-—शं शुभम् अस्त्यस्य-शम् + युस —प्रसन्न ,समृद्ध
- **शंवः**—पुं०—-—शम् + व —प्रसन्न, भाग्यशाली
- **शंवः**—पुं०—-—शम् + व —ठीक दिशा में हल चलाना
- **शंवः**—पुं०—-—शम् + व —इन्द्र का वज्र

- **शंवः**—पुं°—-—शम् + व —मूसल का सिर जो लोहे का बना होता है
- **शंस्**—भ्वा° पर° <शंसति>, <शस्त> कर्मवा° <शस्यते> —-—-—प्रशंसा करना, स्तुति करना, अनुमोदन करना
- **शंस्**—भ्वा° पर° <शंसति>, <शस्त> कर्मवा° <शस्यते> —-—-—कहना, बयान करना, अभिव्यक्त करना, प्रकथन करना, संसूचित करना, घोषणा करना, विवरण देना (
- **शंस्**—भ्वा° पर° <शंसति>, <शस्त> कर्मवा° <शस्यते> —-—-—संकेत करना,कह रखना,जताना
- **शंस्**—भ्वा° पर° <शंसति>, <शस्त> कर्मवा° <शस्यते> —-—-—आवृत्ति करना,पाठ करना
- **शंस्**—भ्वा° पर° <शंसति>, <शस्त> कर्मवा° <शस्यते> —-—-—चोट मारना, क्षति पहुँचाना
- **शंस्**—भ्वा° पर° <शंसति>, <शस्त> कर्मवा° <शस्यते> —-—-—बुरा भला कहना, बदनाम करना
- **अभिशंस्**—भ्वा° पर°—अभि-शंस्—-—अभिशाप देना
- **अभिशंस्**—भ्वा° पर°—अभि-शंस्—-—दोषारोपण करना, निन्दा करना, बदनाम करना
- **अभिशंस्**—भ्वा° पर°—अभि-शंस्—-—प्रशंसा करना,
- **आशंस्** —भ्वा° पर°—आ-शंस् —-—आशा करना, प्रत्याशा करना, इच्छा करना,अभिलाषा करना
- **आशंस्** —भ्वा° पर°—आ-शंस् —-—आशीर्वाद देना, सदिच्छा प्रकट करना, मंगलकामना करना
- **आशंस्** —भ्वा° पर°—आ-शंस् —-—कहना, वर्णन करना
- **आशंस्** —भ्वा° पर°—आ-शंस् —-—प्रशंसा करना
- **आशंस्** —भ्वा° पर°—आ-शंस् —-—दोहरना
- **प्रशंस्**—भ्वा° पर°—प्र-शंस्—-—सराहना, स्तुति करना, अनुमोदन करना, गुण-कथन करना, श्लाघा करना
- **शंसनम्**—नपुं°—-—शंस् + ल्युट्—प्रशंसा करना,
- **शंसनम्**—नपुं°—-—शंस् + ल्युट्—कहना, वर्णन करना
- **शंसनम्**—नपुं°—-—शंस् + ल्युट्—पाठ करना
- **शंसा**—स्त्री°—-—शंस् + अ + टाप्—श्लाघा
- **शंसा**—स्त्री°—-—शंस् + अ + टाप्—अभिलाषा, इच्छा, आशा
- **शंसा**—स्त्री°—-—शंस् + अ + टाप्—दोहराना, वर्णन करना
- **शंसित**—भू° क° कृ°—-—शंस् + क्त—जिसकी श्लाघा की गई हो, स्तुति की गई हो
- **शंसित**—भू° क° कृ°—-—शंस् + क्त—बोला गया, कहा गया, उक्त, घोषित
- **शंसित**—भू° क° कृ°—-—शंस् + क्त—अभिलषित, इच्छित
- **शंसित**—भू° क° कृ°—-—शंस् + क्त—निश्चय किया गया, स्थापित, निर्धारित

- **शंसित**—भू० क० कृ०—-—शंस् + क्त—जिस पर मिथ्या दोषारोपण किया गया हो, कलंकित।
- **शंसिन्**—वि०—-—शंस् + इनि—श्लाघा करने वाला
- **शंसिन्**—वि०—-—शंस् + इनि—कहने वाला, घोषणा करने वाला, संसूचित करने वाला
- **शंसिन्**—वि०—-—शंस् + इनि—संकेत करने वाला, पहले से कह रखने वाला
- **शंसिन्**—वि०—-—शंस् + इनि—शकुन बताने वाला, भविष्य कथन करने वाला
- **शक्** —स्वा० पर० <शक्नोति>, <शक्त>—-—-—योग्य होना, सक्षम होना, सबल होना, अमल में लाना
- **शक्** —स्वा० पर० <शक्नोति>, <शक्त>—-—-—सहन करना, बर्दाश्त करना
- **शक्** —स्वा० पर० <शक्नोति>, <शक्त>—-—-—शक्तिशाली होना,
- **शक्** —कर्मवा०—-—-—समर्थ होना, सम्भव होना, व्यवहार के योग्य होना
- **शक्** —इच्छा० <शिक्षति>—-—-—समर्थ होने की इच्छा करना
- **शक्** —इच्छा० <शिक्षति>—-—-—सीखना
- **शक्** —दिवा० उभ० <शक्यति>, <शक्यते>, <शक्त>—-—-—समर्थ होना, अमल में लाने की शक्ति रखना
- **शक्** —दिवा० उभ० <शक्यति>, <शक्यते>, <शक्त>—-—-—सहन करना,बर्दाश्त करना
- **शकः**—पुं०—-—शक् + अच्—एक राजा
- **शकः**—पुं०—-—शक् + अच्—काल, सम्वत्
- **शकाः**—पुं० ब० व०—-—-—एक देश का नाम
- **शकाः**—पुं० ब० व०—-—-—एक विशेष जन-जाति या राष्ट्र का नाम
- **शकान्तकः**—पुं०—शक-अन्तकः—-—राजा विक्रमादित्य के विशेषण जिसने शकों क उन्मूलन किया
- **शकारिः**—पुं०—शक-अरिः—-—राजा विक्रमादित्य के विशेषण जिसने शकों क उन्मूलन किया
- **शकाब्दः**—पुं०—शक-अब्दः—-—शकसंवत् का वर्ष,
- **शककर्तृ**—पुं०—शक-कर्तृ—-—संवत् का प्रवर्तक
- **शककृत्**—पुं०—शक-कृत्—-—संवत् का प्रवर्तक
- **शकटः**—पुं०—-—शक् + अटन्—गाडी,छकडा,भार ढोने की गाड़ी
- **शकटम्**—नपुं०—-—शक् + अटन्—गाडी,छकडा,भार ढोने की गाड़ी
- **शकटः**—पुं०—-—-—सैनिक व्यूह विशेषण
- **शकटः**—पुं०—-—-—एक विशेष प्रकार की तोल जो एक गाडी-भर बोझ या २००० पल के बराबर है
- **शकटः**—पुं०—-—-—एक राक्षस का नाम जिसे कृष्ण ने अपने बचपन में ही मार डाला था

- **शकटः**—पुं°———–—तिनिश नामक पेड़
- **शकटारिः**—पुं°—शकट-अरिः—–—कृष्ण के विशेषण
- **शकटहन्**—पुं°—शकट-हन्—–—कृष्ण के विशेषण
- **शकटाह्वा**—स्त्री°—शकट-आह्वा—–—रोहिणी नामक नक्षत्र (इसका आकार 'शकट' जैसा होता है)
- **शकटबिलः**—पुं°—शकट-बिलः—–—जलकुक्कुट
- **शकटिका**—स्त्री°—–—शकट + ङीष् + कन् + टाप्, ह्रस्वः—छोटी गाड़ी, खिलौना गाड़ी
- **शकन्**—नपुं°———–—मल, विष्ठा, विशेषकर जानवरों का मल, लीद गोबर आदि
- **शकलः**—पुं°——शक् + कलक्—भाग, अंश, हिस्सा, टुकडा, खण्ड
- **शकलः**—पुं°——शक् + कलक्—बक्कल,छिलका
- **शकलः**—पुं°——शक् + कलक्—(मछली की) खाल,परत
- **शकलित**—वि°—–—शकल + इतच्—खण्ड-खण्ड किया हुआ, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ
- **शकलिन्**—वि°—–—शकल + इनि—मछली
- **शकारः**—पुं°———–—राजा की रखैल का भाई, राजा की उस पत्नी का भाई जिससे विधिपूर्वक विवाह ना किया गया हो, अनूढा भ्राता
- **शकुनः**—पुं°——शक् + उनन्—पक्षी
- **शकुनः**—पुं°——शक् + उनन्—पक्षिविशेष, चील, गिद्ध
- **शकुनम्**—नपुं°———–—सगुन, लक्षण, शुभाशुभ बतलाने वाला चिह्न
- **शकुनम्**—नपुं°—–—–—शंकासूचक सगुन ।
- **शकुनज्ञ**—वि°—शकुनः-ज्ञ—–—सगुनों को जानने वाला
- **शकुनज्ञानम्**—नपुं°—शकुनः-ज्ञानम्——सगुनों का ज्ञान, भवितव्यता, होनहार
- **शकुनशास्त्रम्**—नपुं°—शकुनः-शास्त्रम्—–—वह शास्त्र जिसमें सगुनसम्बन्धी विचार किये गये हैं, सगुन शास्त्र ।
- **शकुनिः**—पुं°—–—शक् + उनि—पक्षी
- **शकुनिः**—पुं°—–—शक् + उनि—गिद्ध, चील, बाज
- **शकुनिः**—पुं°—–—शक् + उनि—मुर्गा
- **शकुनिः**—पुं°—–—शक् + उनि—गांधारराज सुबल का एक पुत्र, धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी का भाई, इस प्रकार यह दुर्योधन का मामा था
- **शकुनीश्वरः**—पुं°—शकुनि-ईश्वरः—–—गरुड़
- **शकुनिप्रपा**—पुं°—शकुनि- प्रपा—–—पक्षियों को पानी पिलाने की कूँड
- **शकुनिवादः**—पुं°—शकुनि-वादः—–—पक्षी की कूजन

- **शकुनिवादः**—पुं°—शकुनि-वादः—–—मुर्गे की बाँग
- **शकुनी**—स्त्री°—–—शकुन + ङीष्—चिड़िया, गोरैया
- **शकुनी**—स्त्री°—–—शकुन + ङीष्—एक पक्षिविशेष
- **शकुन्तः**—पुं°—–—शक् + उन्त—एक पक्षी
- **शकुन्तः**—पुं°—–—शक् + उन्त—नीलकण्ठ पक्षी
- **शकुन्तः**—पुं°—–—शक् + उन्त—पक्षिविशेष
- **शकुन्तकः**—पुं°—–—शकुन्त + कन्—पक्षी
- **शकुन्तला**—स्त्री°—–—शकुन्तैः लायते- ला घञर्थे क + टाप्—विश्वामित्र ऋषि की तपस्या भंग करने के लिए इन्द्र द्वारा भेजी गई मेनका अप्सरा से उत्पन्न विश्वामित्र की पुत्री
- **शकुन्तिः**—पुं°—–—शक् + उन्ति—पक्षी
- **शकुन्तिका**—स्त्री°—–—शकुन्ति + कन् + टाप्—पक्षी
- **शकुन्तिका**—स्त्री°—–—शकुन्ति + कन् + टाप्—पक्षिविशेष
- **शकुन्तिका**—स्त्री°—–—शकुन्ति + कन् + टाप्—टिड्डी, झींगुर
- **शकुलः**—पुं°—–—शक् + उलच्—एक प्रकार की मछली
- **शकुली**—स्त्री°—–—शक् + उलच्—एक प्रकार की मछली
- **शकुलादनी**—स्त्री°—शकुल-अदनी—–—एक जडीबूटी, कटकी या कुटकी
- **शकुलार्भकः**—पुं°—शकुल-अर्भकः—–—एक प्रकार की मछली
- **शकृत्**—नपुं°—–—शक् + ऋतन्—मल, विष्ठा, विशेषकर जानवरों की लीद,गोबर आदि ।
- **शकृत्करिः**—पुं° —शकृत्-करिः—–—बछड़ा
- **शकृत्करिः**—स्त्री°—शकृत्-करिः—–—बछड़ा
- **शकृत्करी**—स्त्री°—शकृत्-करी—–—बछड़ा
- **शकृद्द्वारम्**—नपुं°—शकृत्-द्वारम्—–—गुदा, मलद्वार
- **शकृत्पिण्डः**—पुं° —शकृत्-पिण्डः—–—गोबर का गोला
- **शकृत्पिण्डकः**—पुं° —शकृत्- पिण्डकः—–—गोबर का गोला
- **शक्करः** —पुं° —–—शक् + क्विप् —बैल सांड़
- **शक्करिः**—पुं° —–—कृ + अच् कर्म° स°—बैल सांड़
- **शक्करी**—स्त्री°—–—शक्कर + ङीष्—नदी

- **शक्करी**—स्त्री°—-—शक्कर + ङीष्—करधनी, मेखला,
- **शक्करी**—स्त्री°—-—शक्कर + ङीष्—नीच जाति की स्त्री ।
- **शक्त**—भू° क° कृ°—-—शक् + क्त—योग्य, सक्षम, समर्थ
- **शक्त**—भू° क° कृ°—-—शक् + क्त—मजबूत, ताक़तवर, शक्तिशाली
- **शक्त**—भू° क° कृ°—-—शक् + क्त—धनाढय, समृद्धिशाली
- **शक्त**—भू° क° कृ°—-—शक् + क्त—सार्थक, अभिव्यञ्जक (शब्द)
- **शक्त**—भू° क° कृ°—-—शक् + क्त—चतुर, प्रज्ञावान्
- **शक्त**—भू° क° कृ°—-—शक् + क्त—प्रियवादी ।
- **शक्तिः**—स्त्री°—-—शक् + क्तिन्—बल, योग्यता, धारिता, सामर्थ्य, ऊर्जा, पराक्रम
- **शक्तिः**—स्त्री°—-—शक् + क्तिन्—रचनाशक्ति, काव्य शक्ति या प्रतिभा
- **शक्तिः**—स्त्री°—-—शक् + क्तिन्—देव की सक्रिय शक्ति, यह शक्ति देवपत्नी मानी जाती है, देवी, दिव्यता
- **शक्तिः**—स्त्री°—-—शक् + क्तिन्—एक प्रकार का अस्त्र
- **शक्तिः**—स्त्री°—-—शक् + क्तिन्—बर्छी, नेज़ा, शूल, भाला
- **शक्तिः**—स्त्री°—-—शक् + क्तिन्—किसी पदार्थ का उसके बोधक शब्द से सम्बन्ध
- **शक्तिः**—स्त्री°—-—शक् + क्तिन्—कारण की अन्तर्निहित शक्ति जिससे कार्य की उत्पत्ति होती है
- **शक्तिः**—स्त्री°—-—शक् + क्तिन्—(काव्य° में) शब्दशक्ति या शब्द की अर्थशक्ति
- **शक्तिः**—स्त्री°—-—शक् + क्तिन्—अभिधाशक्ति, शब्दसङ्केत
- **शक्तिः**—स्त्री°—-—शक् + क्तिन्—स्त्री की जननेन्द्रिय, भग, शाक्तसंप्रदाय के अनुयाइयों द्वारा पूजित शिवलिङ्ग की मूर्ति ।
- **शक्त्यर्धः**—पुं° —शक्तिः-अर्धः—-—उद्योग तथा श्रम के फ़लस्वरूप हांपना तथा शरीर का पसीने से तर होना
- **शक्त्यपेक्ष**—वि°—शक्तिः- अपेक्ष—-—सामर्थ्य का ध्यान रखने वाला
- **शक्त्यपेक्षिन्**—वि°—शक्तिः- अपेक्षिन्—-—सामर्थ्य का ध्यान रखने वाला
- **शक्तिकुण्ठनम्**—नपुं°—शक्तिः-कुण्ठनम्—-—शक्ति को कुण्ठित करना
- **शक्तिग्रह**—वि°—शक्तिः-ग्रह—-—बल या अर्थ को धारण करने वाला
- **शक्तिग्रह**—वि°—शक्तिः-ग्रह—-—बर्छीधारी
- **शक्तिग्रहः**—पुं° —शक्तिः-ग्रहः—-—बल या अर्थ का बोध अथवा शब्दशक्ति का ज्ञान
- **शक्तिग्रहः**—पुं° —शक्तिः-ग्रहः—-—बर्छीधारी, भालाधारी
- **शक्तिग्रहः**—पुं° —शक्तिः-ग्रहः—-—शिव का विशेषण

- **शक्तिग्रहः**—पुं° —शक्तिः-ग्रहः—–—कार्तिकेय का विशेषण
- **शक्तिग्राहक**—वि°—शक्तिः- ग्राहक—–—शब्द के अर्थ की स्थापना या निर्धारण करने वाला
- **शक्तिग्राहकः**—पुं° —शक्तिः- ग्राहकः—–—कार्तिकेय का विशेषण
- **शक्तित्रयम्**—नपुं°—शक्तिः-त्रयम्—–—राज्यशक्ति के संघटक तीन तत्त्व
- **शक्तिधर**—वि°—शक्तिः-धर—–—मज़बूत, शक्तिशाली
- **शक्तिधरः**—पुं° —शक्तिः-धरः—–—बर्छीधारी
- **शक्तिधरः**—पुं° —शक्तिः-धरः—–—कार्तिकेय का विशेषण
- **शक्तिपाणिः**—पुं°—शक्तिः-पाणिः—–—बर्छीधारी
- **शक्तिपाणिः**—पुं°—शक्तिः-पाणिः—–—कार्तिकेय का विशेषण
- **शक्तिभृत्**—पुं°—शक्तिः-भृत्—–—बर्छीधारी
- **शक्तिभृत्**—पुं°—शक्तिः-भृत्—–—कार्तिकेय का विशेषण
- **शक्तिपातः**—पुं° —शक्तिः-पातः—–—शक्तिक्षय, पराजय
- **शक्तिपूजकः**—पुं° —शक्तिः-पूजकः—–—शाक्त
- **शक्तिपूजा**—स्त्री°—शक्तिः-पूजा—–—शक्ति की पूजा
- **शक्तिवैकल्यम्**—नपुं°—शक्तिः-वैकल्यम्—–—शक्तिक्षय, दुर्बलता, अक्षमता
- **शक्तिहीन**—वि°—शक्तिः-हीन—–—शक्तिहीन, निर्बल, बलरहित,नपुंसक,
- **शक्तिहेतिकः**—पुं° —शक्तिः-हेतिकः—–—भालाधारी, बर्छीधारी
- **शक्तितः**—अव्य°—–—शक्ति + तसिल्—शक्ति के अनुसार, यथायोग्य, यथाशक्ति
- **शक्न**—वि°—–—शक् + न—मिष्टभाषी, प्रियवादी
- **शक्ल**—वि°—–—शक् + क्ल —मिष्टभाषी, प्रियवादी
- **शक्य**—सं° कृ°—–—शक् + यत्—संभव, क्रियात्मक, किये जाने के योग्य
- **शक्य**—सं° कृ°—–—शक् + यत्—कार्यान्वयन के योग्य
- **शक्य**—सं° कृ°—–—शक् + यत्—कार्यान्वयन में सरल
- **शक्य**—सं° कृ°—–—शक् + यत्—प्रत्यक्ष कहा गया, अभिहित (शब्दार्थ आदि)
- **शक्य**—सं° कृ°—–—शक् + यत्—संभाव्य
- **शक्यार्थः**—पुं° —शक्य-अर्थः—–—प्रत्यक्ष अभिहितार्थ
- **शक्रः**—पुं° —–—शक् + रक्—इन्द्र

- **शक्रः**—पुं° —-—शक् + रक्—अर्जुन का वृक्ष
- **शक्रः**—पुं° —-—शक् + रक्—कुटज का पेड़
- **शक्रः**—पुं° —-—शक् + रक्—उल्लू
- **शक्रः**—पुं° —-—शक् + रक्—ज्येष्ठा नक्षत्र
- **शक्रः**—पुं° —-—शक् + रक्—चौदह की संख्या
- **शक्राशनः**—पुं° —शक्रः-अशनः—-—कुटज का वृक्ष
- **शक्राख्यः**—पुं° —शक्रः-आख्यः—-—उल्लू
- **शक्रात्मजः**—पुं° —शक्रः-आत्मजः—-—इन्द्र का पुत्र जयन्त
- **शक्रात्मजः**—पुं° —शक्रः-आत्मजः—-—अर्जुन
- **शक्रोत्थानम्**—नपुं°—शक्रः-उत्थानम्—-—भाद्रपदशुक्ला द्वादशी को इन्द्र के सम्मान में मनाया जाने वाला उत्सव, पर्व
- **शक्रोत्सवः**—पुं° —शक्रः-उत्सवः—-—भाद्रपदशुक्ला द्वादशी को इन्द्र के सम्मान में मनाया जाने वाला उत्सव, पर्व
- **शक्रगोपः**—पुं° —शक्रः-गोपः—-—एक प्रकार का लाल कीड़ा
- **शक्रजः**—पुं° —शक्रः-जः—-—कौवा
- **शक्रजातः**—पुं° —शक्रः-जातः—-—कौवा
- **शक्रजित्**—पुं°—शक्रः-जित्—-—रावण के पुत्र मेघनाद के विशेषण
- **शक्रभिद्**—पुं°—शक्रः-भिद्—-—रावण के पुत्र मेघनाद के विशेषण
- **शक्रद्रुमः**—पुं° —शक्रः-द्रुमः—-—देवदारु का वृक्ष
- **शक्रधनुस्**—नपुं°—शक्रः-धनुस्—-—इन्द्रधनुष
- **शक्रशरासनम्**—नपुं°—शक्रः-शरासनम्—-—इन्द्रधनुष
- **शक्रध्वजः**—पुं° —शक्रः-ध्वजः—-—इन्द्र के सम्मान में स्थापित झंडा
- **शक्रपर्यायः**—पुं° —शक्रः-पर्यायः—-—कुटज का वृक्ष
- **शक्रपादपः**—पुं° —शक्रः-पादपः—-—कुटज का पेड़
- **शक्रपादपः**—पुं° —शक्रः-पादपः—-—देवदारु वृक्ष
- **शक्रप्रस्थ**—वि°—शक्रः-प्रस्थ—-—इन्द्रप्रस्थ
- **शक्रभवनम्**—नपुं°—शक्रः-भवनम्—-—स्वर्ग, वैकुण्ठ
- **शक्रभुवनम्**—नपुं°—शक्रः-भुवनम्—-—स्वर्ग, वैकुण्ठ
- **शक्रवासः**—पुं° —शक्रः-वासः—-—स्वर्ग, वैकुण्ठ

- **शक्रमूर्धन्**—नपुं०—शक्रः-मूर्धन्——बांबी,वल्मीक
- **शक्रशिरस्**—नपुं०—शक्रः-शिरस्——बांबी,वल्मीक
- **शक्रलोकः**—पुं० —शक्रः-लोकः——इन्द्र का संसार
- **शक्रवाहनम्**—नपुं०—शक्रः-वाहनम्——बादल
- **शक्रशाखिन्**—पुं०—शक्रः-शाखिन्——कुटज का वृक्ष
- **शक्रसारथिः**—पुं०—शक्रः-सारथिः——इन्द्र का रथवान्, मातलि का विशेषण,
- **शक्रसुतः**—पुं०—शक्रः-सुतः——जयंत का विशेषण
- **शक्रसुतः**—पुं०—शक्रः-सुतः——अर्जुन का विशेशण
- **शक्रसुतः**—पुं०—शक्रः-सुतः——वालि का विशेषण
- **शक्राणी**—स्त्री०——शक्र + ङीष, आनुक्—इन्द्र की पत्नी, शची
- **शक्रिः**—पुं०——शक् + क्रिन्—बादल
- **शक्रिः**—पुं०——शक् + क्रिन्—इन्द्र का वज्र
- **शक्रिः**—पुं०——शक् + क्रिन्—पहाड़
- **शक्रिः**—पुं०——शक् + क्रिन्—हाथी
- **शक्वरः**—पुं०——शक्+वन् , र—साँड, बैल
- **शङ्क्**—भ्वा० आ० <शङ्कते>, <शङ्कित>————संदेह करना, अनिश्चित होना, संकोच करना, संदिग्ध होना
- **शङ्क्**—भ्वा० आ० <शङ्कते>, <शङ्कित>————डरना, भय होना, त्रस्त होना
- **शङ्क्**—भ्वा० आ० <शङ्कते>, <शङ्कित>————शंका करना, अविश्वास करना, भरोसा न करना
- **शङ्क्**—भ्वा० आ० <शङ्कते>, <शङ्कित>————सोचना, विश्वास करना, उत्प्रेक्षा करना, कल्पना करना, संभव समझना, शंका करना, डरना
- **शङ्क्**—भ्वा० आ० <शङ्कते>, <शङ्कित>————आक्षेप करना, अपनी शंका या ऐतराज उठाना
- **अभिशङ्क्**—भ्वा० आ०—अभि-शङ्क्——शंका करना
- **अभिशङ्क्**—भ्वा० आ०—अभि-शङ्क्——संदिग्ध या अनिश्चयी होना
- **आशङ्क्**—भ्वा० आ०—आ-शङ्क्——शङ्का करना, भरोसा न करना, संदेह रखना
- **आशङ्क्**—भ्वा० आ०—आ-शङ्क्——संदेह करना, विश्वास करना, सोचना
- **आशङ्क्**—भ्वा० आ०—आ-शङ्क्——डरना, आशंका करना
- **आशङ्क्**—भ्वा० आ०—आ-शङ्क्——आक्षेप करना, संदेह करना -
- **परिशङ्क्**—भ्वा० आ०—परि-शङ्क्——शंका करना, विश्वास करना, उत्प्रेक्षा करना

- **परिशङ्क्**—भ्वा० आ०—परि-शङ्क्——संदेह करना, संदेहशील होना
- **परिशङ्क्**—भ्वा० आ०—परि-शङ्क्——डरना, भयभीत होना
- **विशङ्क्**—भ्वा० आ०—वि-शङ्क्——शंका करना, डरना, संदेहशील या शंकालु होना
- **विशङ्क्**—भ्वा० आ०—वि-शङ्क्——सत्ता का चिन्तन करना, उत्प्रेक्षा करना, कल्पना करना
- **शङ्कः**—पुं०——शङ्क + अच्—कर्षक बैल, (गाड़ी) खींचने वाला बैल ।
- **शङ्कर**—वि०——शं सुखं करोति - कृ + अच्—आनन्द या समृद्धि देने वाला, शुभ, मङ्गलमय
- **शङ्करः**—पुं०————शिव
- **शङ्करः**—पुं०————विख्यात आचार्य और ग्रन्थप्रणेता शंकराचार्य
- **शङ्करी**—स्त्री०————शिव की पत्नी पार्वती
- **शङ्करी**—स्त्री०————मंजिष्ठा, मजीठ
- **शङ्करी**—स्त्री०————शमीवृक्ष
- **शङ्का**—स्त्री०——शङ्क् + अ + टाप्—संदेह, अनिश्चितता
- **शङ्का**—स्त्री०——शङ्क् + अ + टाप्—संकल्प-विकल्प, दुविधा
- **शङ्का**—स्त्री०——शङ्क् + अ + टाप्—आशंका, अविश्वास, अनिष्टशंका, अपायशंका, अरिष्टस्कंका आदि
- **शङ्का**—स्त्री०——शङ्क् + अ + टाप्—डर, आशंका, त्रास, आतंक
- **शङ्का**—स्त्री०——शङ्क् + अ + टाप्—आशा, प्रत्याशा
- **शङ्का**—स्त्री०——शङ्क् + अ + टाप्—(भ्रान्त) विश्वास, आश्ंका, (मिथ्या) धारणा
- **शङ्कित**—भू० क० कृ०——शङ्क् + क्त—सन्दिग्ध, आशंकायुक्त, त्रस्त
- **शङ्कित**—भू० क० कृ०——शङ्क् + क्त—शंकालु, आशंका करने वाला, अविश्वासपूर्ण
- **शङ्कित**—भू० क० कृ०——शङ्क् + क्त—अनिश्चित, संदिग्ध
- **शङ्कित**—भू० क० कृ०——शङ्क् + क्त—भयपूर्ण, सशंक, आतंकित
- **शङ्कितचित्त**—वि०—शङ्कित-चित्त——भीरु, कातरहृदय
- **शङ्कितचित्त**—वि०—शङ्कित-चित्त——शंकाकुल, अविश्वासपूर्ण
- **शङ्कितचित्त**—वि०—शङ्कित-चित्त——संदिग्ध ।
- **शङ्कितमनस्**—वि०—शङ्कित-मनस्——भीरु, कातरहृदय
- **शङ्कितमनस्**—वि०—शङ्कित-मनस्——शंकाकुल, अविश्वासपूर्ण
- **शङ्कितमनस्**—वि०—शङ्कित-मनस्——संदिग्ध

- **शङ्किन्**—वि०—-—शङ्का + इनि—सन्देह करने वाला, शंका करने वाला, डरने वाला, विश्वास करने वाला
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—नेज़ा, बर्छी, नुकीली कील, शक्ति, कटार
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—खूँटा, खम्बा, स्तम्भ, शूल या नोकदार छड़
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—कील, मेख, खूँटी
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—बाण की तीखी नोक, काँटा या आँकड़ा
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—(कटे हुए वृक्ष का) तना,पेड़ का ठूँठ, मुंडा पेड़
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—घड़ी की सुई
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—बारह अंगुल की माप
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—गज, मापने का डंडा
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—लंबरेखा या ऊँचाई
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—सौ खरब या एक नील की संख्या
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—पत्तों के रेशे
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—वल्मीक, बमी
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—पुरुष की जननेन्द्रिय
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—एक प्रकार की मछली, तनुका
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—राक्षस
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—विष
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—पाप
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—जलचर, विशेषकर कलहंस
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—शिव
- **शङ्कुः**—पुं०—-—शङ्क् + उण्—साल का पेड़
- **शङ्कुकर्ण**—वि०—शङ्कुः-कर्ण—-—जिसके कान शंकु के समान लंबे और नुकीले हों
- **शङ्कुकर्णः**—पुं०—शङ्कु-कर्णः—-—गधा
- **शङ्कुतरुः**—पुं०—शङ्कु-तरुः—-—साल का एक पेड़
- **शङ्कुवृक्षः**—पुं०—शङ्कु-वृक्षः—-—साल का एक पेड़
- **शङ्कुला**—स्त्री०—-—शङ्क् + उलच्—एक प्रकार का चाकू या दो धार वाला नश्तर
- **शङ्कुला**—स्त्री०—-—शङ्क् + उलच्—सरौता

- **शङ्कुलाखण्डः**—पुं°—शङ्कुला-खण्डः—-—सरौते से काटा हुआ टुकड़ा
- **शङ्खः**—पुं°—-—शम् + ख—शंख, घोंघा
- **शङ्खः**—पुं°—-—शम् + ख—मस्तक की हड्डी,
- **शङ्खः**—पुं°—-—शम् + ख—कनपटी की हड्डी
- **शङ्खः**—पुं°—-—शम् + ख—हाथी के दोनों दाँतों के बीच का भाग
- **शङ्खः**—पुं°—-—शम् + ख—दस नील की संख्या
- **शङ्खः**—पुं°—-—शम् + ख—सैनिक ढोल या मारूबाजा
- **शङ्खः**—पुं°—-—शम् + ख—एक प्रकार का गन्धद्रव्य, नखी
- **शङ्खः**—पुं°—-—शम् + ख—कुबेर की नवनिधियों में से एक
- **शङ्खः**—पुं°—-—शम् + ख—एक राक्षस जिसको विष्णु ने मार डाला था
- **शङ्खः**—पुं°—-—शम् + ख—एक स्मृतिकार
- **शङ्खम्** —नपुं°—-—-—शंख, घोंघा
- **शङ्खम्** —नपुं°—-—-—मस्तक की हड्डी,
- **शङ्खम्** —नपुं°—-—-—कनपटी की हड्डी
- **शङ्खम्** —नपुं°—-—-—हाथी के दोनों दाँतों के बीच का भाग
- **शङ्खम्** —नपुं°—-—-—दस नील की संख्या
- **शङ्खम्** —नपुं°—-—-—सैनिक ढोल या मारूबाजा
- **शङ्खम्** —नपुं°—-—-—एक प्रकार का गन्धद्रव्य, नखी
- **शङ्खम्** —नपुं°—-—-—कुबेर की नवनिधियों में से एक
- **शङ्खम्** —नपुं°—-—-—एक राक्षस जिसको विष्णु ने मार डाला था
- **शङ्खम्** —नपुं°—-—-—एक स्मृतिकार
- **शङ्खोदकम्**—नपुं°—शङ्खः- उदकम्—-—शंख में डाला हुआ पानी
- **शङ्खकारः**—पुं°—शङ्खः- कारः—-—शंखकार नाम की एक वर्णसंकर जाति
- **शङ्खकारकः**—पुं°—शङ्खः- कारकः—-—शंखकार नाम की एक वर्णसंकर जाति
- **शङ्खचरी**—स्त्री°—शङ्खः- चरी—-—(मस्तक पर लगाया गया) चन्दन का तिलक
- **शङ्खचर्ची**—स्त्री°—शङ्खः- चर्ची—-—(मस्तक पर लगाया गया) चन्दन का तिलक
- **शङ्खचूर्णम्**—नपुं°—शङ्खः- चूर्णम्—-—शंख को पीसकर बनाया गया चूरा

- **शङ्खद्रावः**—पुं०—शङ्खः- द्रावः—-—एक प्रकार का घोल जिसमें शंख भी घुल जाता हैं
- **शङ्खद्रावकः**—पुं०—शङ्खः- द्रावकः—-—एक प्रकार का घोल जिसमें शंख भी घुल जाता हैं
- **शङ्खध्मः**— पुं० —शङ्खः- ध्मः—-—शंख बजाने वाला
- **शङ्खध्मा**— पुं० —शङ्खः- ध्मा—-—शंख बजाने वाला
- **शङ्खध्वनिः**—पुं०—शङ्खः- ध्वनिः—-—शंख की आवाज
- **शङ्खप्रस्थः**—पुं०—शङ्खः- प्रस्थः—-—चन्द्रमा का कलंक
- **शङ्खभृत्**—पुं०—शङ्खः- भृत्—-—विष्णु का विशेषण
- **शङ्खमुखः**—पुं०—शङ्खः- मुखः—-—घड़ियाल, मगर
- **शङ्खस्वनः**—पुं०—शङ्खः- स्वनः—-—शंखध्वनि
- **शङ्खकः**—पुं०—-—शंख + कन्—शंख
- **शङ्खकः**—पुं०—-—शंख + कन्—कनपटी की हड्डी
- **शङ्खकम्**—नपुं०—-—शंख + कन्—शंख
- **शङ्खकम्**—नपुं०—-—शंख + कन्—कनपटी की हड्डी
- **शङ्खकः**—पुं०—-—-—(शङ्ख का बना) कड़ा
- **शङ्खनकः** —पुं०—-—-—एक छोटा शंख या घोंघा
- **शङ्खनखः**—पुं०—-—-—एक छोटा शंख या घोंघा
- **शङ्खिन्**—पुं०—-—शङ्ख + इनि—समुद्र
- **शङ्खिन्**—पुं०—-—शङ्ख + इनि—विष्णु
- **शङ्खिन्**—पुं०—-—शङ्ख + इनि—शंख बजाने वाला
- **शङ्खिनी**—स्त्री०—-—शङ्खिन् + ङीप्—काम शास्त्र के लेखकों के अनुसार स्त्रियों के किये गये चार भेदों में से एक
- **शङ्खिनी**—स्त्री०—-—शङ्खिन् + ङीप्—प्रेतात्मा, अप्सरा, परी
- **शच्**—भ्वा० आ० <शचते>—-—-—बोलना, कहना, बतलाना
- **शचिः** —स्त्री०—-—शच् + इन् —इन्द्र की पत्नी
- **शची** —स्त्री०—-—शचि + ङीष्—इन्द्र की पत्नी
- **शचीपतिः**—पुं०—शची-पतिः—-—इन्द्र के विशेषण
- **शचीभर्तृ**—पुं०—शची-भर्तृ—-—इन्द्र के विशेषण
- **शञ्च्**—भ्वा० आ० <शञ्चते>—-—-—जाना, हिलना-जुलना

- **शट्**—भ्वा॰ पर॰ <शटति>—-—-—बीमार होना
- **शट्**—भ्वा॰ पर॰ <शटति>—-—-—बांटना, वियुक्त होना
- **शट**—वि॰—-—शट् + अच्—खट्टा, अम्ल, कसैला
- **शटा**—स्त्री॰—-—शट् + टाप्—संन्यासी के उलझे बाल
- **शटिः**—स्त्री॰—-—शट् + इन्—कचूर का पौधा, आमा हल्दी
- **शठ्** —भ्वा॰ पर॰ <शठति>—-—-—धोखा देना,ठगना, जालसाजी करना
- **शठ्** —भ्वा॰ पर॰ <शठति>—-—-—चोट मारना, मार डालना
- **शठ्** —भ्वा॰ पर॰ <शठति>—-—-—कष्ट उठाना
- **शठ्** —चुरा॰ पर॰ <शाठयति>—-—-—समाप्त करना
- **शठ्** —चुरा॰ पर॰ <शाठयति>—-—-—असमाप्त छोड़ देना
- **शठ्** —चुरा॰ पर॰ <शाठयति>—-—-—जाना,हिलना-जुलना
- **शठ्** —चुरा॰ पर॰ <शाठयति>—-—-—आलसी या सुस्त होना
- **शठ्** —चुरा॰ पर॰ <शाठयति>—-—-—धोखा देना, ठगना
- **शठ**—वि॰—-—शठ् + अच्—चालाक, धोखेबाज, जालसाज, बेईमान, कपटी
- **शठ**—वि॰—-—शठ् + अच्—दुष्ट, दुर्वृत्त,
- **शठः**—पुं॰—-—-—बदमाश, ठग, धूर्त, मक्कार
- **शठः**—पुं॰—-—-—झूठा या धोखेबाज प्रेमी
- **शठः**—पुं॰—-—-—मूढ, बुद्धू
- **शठः**—पुं॰—-—-—मध्यस्त, बिवाचक
- **शठः**—पुं॰—-—-—धतूरे का पौधा
- **शठः**—पुं॰—-—-—आलसी पुरुष, सुस्त व्यक्ति
- **शठम्**—नपुं॰—-—-—लोहा
- **शठम्**—नपुं॰—-—-—केसर, जाफ़रान
- **शणम्**—नपुं॰—-—शण् + अच्—सन, पटसन
- **शणसूत्रम्**—नपुं॰—शणम्-सूत्रम्—-—सन की बनी डोरी या रस्सी
- **शणसूत्रम्**—नपुं॰—शणम्-सूत्रम्—-—सन का बना जाल
- **शणसूत्रम्**—नपुं॰—शणम्-सूत्रम्—-—रस्सियाँ, डोरियाँ

- **शण्डः**—पुं°—-—शण्ड् + अच्—नपुंसक, हिजड़ा
- **शण्डः**—पुं°—-—शण्ड् + अच्—साँड़
- **शण्डः**—पुं°—-—शण्ड् + अच्—छोड़ा हुआ साँड़
- **शण्डम्**—नपुं°—-—-—संग्रह, समुच्चय
- **शण्ढः**—पुं°—-—शाम्यति ग्रामधर्मात् -शम् + ढ —हिजड़ा, नपुंसक
- **शण्ढः**—पुं°—-—शाम्यति ग्रामधर्मात् -शम् + ढ —अन्तःपुर में रहने वाला टहलुआ, पुरुषसेवक
- **शण्ढः**—पुं°—-—शाम्यति ग्रामधर्मात् -शम् + ढ —साँड़
- **शण्ढः**—पुं°—-—शाम्यति ग्रामधर्मात् -शम् + ढ —छोड़ा हुआ साँड़
- **शण्ढः**—पुं°—-—शाम्यति ग्रामधर्मात् -शम् + ढ —पागल आदमी
- **शतम्**—नपुं°—-—दश दशतः परिमाणमस्य-दशन् + त, श आदेशः नि° साधुः—सौ की संख्या
- **शतम्**—नपुं°—-—दश दशतः परिमाणमस्य-दशन् + त, श आदेशः नि° साधुः—कोई भी बड़ी संख्या।
- **शताक्षी**—स्त्री°—शतम्-अक्षी—-—रात्रि
- **शताक्षी**—स्त्री°—शतम्-अक्षी—-—दुर्गादेवी
- **शताङ्गः**—पुं°—शतम्-अङ्गः—-—गाड़ी, छकड़ा
- **शतानीकः**—पुं°—शतम्-अनीकः—-—बूढ़ा आदमी
- **शतारम्**—नपुं°—शतम्-अरम्—-—इन्द्र का वज्र
- **शतारम्**—नपुं°—शतम्-आरम्—-—इन्द्र का वज्र
- **शतानकम्**—नपुं°—शतम्-आनकम्—-—श्मशान, क़बरिस्तान,
- **शतानन्दः**—पुं°—शतम्-आनन्दः—-—ब्रह्मा
- **शतानन्दः**—पुं°—शतम्-आनन्दः—-—विष्णु, कृष्ण
- **शतानन्दः**—पुं°—शतम्-आनन्दः—-—विष्णु का वाहन
- **शतानन्दः**—पुं°—शतम्-आनन्दः—-—गौतम और अहिल्या का पुत्र, जनकराज का कुलपुरोहित
- **शतायुस्**—वि°—शतम्-आयुस्—-—सौ वर्ष तक जीवित रहने वाला या टिकने वाला
- **शतावर्तः**—पुं°—शतम्-आवर्तः—-—विष्णु
- **शतावर्तिन्**—पु°—शतम्-आवर्तिन्—-—विष्णु
- **शतेशः**—पुं°—शतम्-ईशः—-—सौ के ऊपर शासन करने वाला
- **शतेशः**—पुं°—शतम्-ईशः—-—सौ गाँव का शासक

- **शतकुम्भः**—पुं°—शतम्-कुम्भः—–—एक पहाड़ का नाम (कहते हैं कि यहाँ पर सोना पाया जाता है)
- **शतभम्**—नपुं°—शतम्-भम्—–—सोना
- **शतकृत्वः**—अव्य°—शतम्-कृत्वः—–—सौ गुणा
- **शतकोटि**—वि°—शतम्-कोटि—–—सौ धार वाला
- **शतकोटिः**—पुं°—शतम्-कोटिः—–—इन्द्र का वज्र
- **शतकोटिः**—स्त्री°—शतम्-कोटिः—–—एक अरब या सौ करोड़ की संख्या
- **शतर्तुः**—पुं°—शतम्-ऋतुः—–—इन्द्र का विशेषण
- **शतखण्डम्**—नपुं°—शतम्-खण्डम्—–—सोना
- **शतगु**—वि°—शतम्-गु—–—सौ गायों का स्वामी
- **शतगुण**—वि°—शतम्-गुण—–—सौगुणा बढ़ा हुआ
- **शतगुणित**—वि°—शतम्-गुणित—–—सौगुणा बढ़ा हुआ
- **शतग्रन्थिः**—स्त्री°—शतम्-ग्रन्थिः—–—दूर्वा घास
- **शतघ्नी**—स्त्री°—शतम्-घ्नी—–—एक प्रकार का शस्त्र जो अस्त्र की भांति प्रयुक्त किया जाय
- **शतघ्नी**—स्त्री°—शतम्-घ्नी—–—बिच्छू की मादा
- **शतघ्नी**—स्त्री°—शतम्-घ्नी—–—गले का एक रोग
- **शतजिह्वः**—पुं°—शतम्-जिह्वः—–—शिव का विशेषण
- **शततारका**—स्त्री°—शतम्-तारका—–—सौ तारिकाओं का पुंज शतभिषा नामक नक्षत्र
- **शतभिषज्**—स्त्री°—शतम्-भिषज्—–—सौ तारिकाओं का पुंज शतभिषा नामक नक्षत्र
- **शतभिषा**—स्त्री°—शतम्-भिषा—–—सौ तारिकाओं का पुंज शतभिषा नामक नक्षत्र
- **शतदला**—स्त्री°—शतम्-दला—–—सफ़ेद गुलाब
- **शतद्रुः**—स्त्री°—शतम्-द्रुः—–—पंजाब की एक नदी जिसका वर्तमान नाम सतलज है
- **शतधामन्**—पुं°—शतम्-धामन्—–—विष्णु का विशेषण
- **शतधार**—वि°—शतम्- धार—–—सौ धारों वाला
- **शतधारम्**—नपुं°—शतम्- धारम्—–—इन्द्र का वज्र
- **शतधृतिः**—पुं°—शतम्- धृतिः—–—इन्द्र का विशेषण
- **शतधृतिः**—पुं°—शतम्- धृतिः—–—ब्रह्मा का विशेषण
- **शतधृतिः**—पुं°—शतम्- धृतिः—–—स्वर्ग

- **शतपत्रः**—पुं°—शतम्-पत्रः—-—मोर
- **शतपत्रः**—पुं°—शतम्-पत्रः—-—सारस
- **शतपत्रः**—पुं°—शतम्-पत्रः—-—खुट-बढ़ई पक्षी
- **शतपत्रः**—पुं°—शतम्-पत्रः—-—तोता या तोते की जाति
- **शतपत्रा**—स्त्री°—शतम्-पत्रा—-—स्त्री
- **शतपत्रम्** —नपुं°—शतम्-पत्रम् —-—कमल
- **शतयोनिः**—पुं°—शतम्-योनिः—-—ब्रह्मा का विशेषण
- **शतपत्रकः**—पुं°—शतम्-पत्रकः—-—खुटबढ़ई
- **शतपद्**—वि°—शतम्-पद्—-—सौ पैरों वाला
- **शतपाद्**—वि°—शतम्-पाद्—-—सौ पैरों वाला
- **शतपदी**—स्त्री°—शतम्-पदी—-—कानखजूरा
- **शतपद्मम्**—नपुं°—शतम्-पद्मम्—-—वह कमल जिसमें सौ पंखड़ियाँ हों
- **शतपद्मम्**—नपुं°—शतम्-पद्मम्—-—श्वेत कमल
- **शतपर्वन्**—पुं°—शतम्-पर्वन्—-—बाँस
- **शतपर्वन्**—स्त्री°—शतम्-पर्वन्—-—आश्विन मास की पूर्णिमा
- **शतपर्वन्**—स्त्री°—शतम्-पर्वन्—-—दूर्वा घास
- **शतपर्वन्**—स्त्री°—शतम्-पर्वन्—-—कटुक का पौधा
- **शतेशः**—पुं°—शतम्-ईशः—-—शुक्र, ग्रह
- **शतभीरुः**—स्त्री°—शतम्-भीरुः—-—अरबदेश की चमेली
- **शतमख**—पुं°—शतम्-मख—-—इन्द्र के विशेषण
- **शतमख**—पुं°—शतम्-मख—-—उल्लू
- **शतमन्युः**—पुं°—शतम्-मन्युः—-—इन्द्र के विशेषण
- **शतमन्युः**—पुं°—शतम्-मन्युः—-—उल्लू
- **शतमुख**—वि°—शतम्-मुख—-—जिसके सौ रास्ते हों
- **शतमुख**—वि°—शतम्-मुख—-—सौ द्वार या मुँह वाला
- **शतमुखम्**—नपुं°—शतम्-मुखम्—-—सौ रास्ते या द्वार
- **शतमुखी**—स्त्री°—शतम्-मुखी—-—बुहारी, झाड़ू

- **शतमूला**—स्त्री॰—शतम्-मूला—-—दूर्वा घास, दूबड़ा
- **शतयज्वम्**—पुं॰—शतम्-यज्वम्—-—इन्द्र का विशेषण,
- **शतयष्टिकः**—पुं॰—शतम्-यष्टिकः—-—सौ लड़ियों का हार
- **शतरूपा**—स्त्री॰—शतम्-रूपा—-—ब्रह्मा की एक पुत्री
- **शतवर्षम्**—नपुं॰—शतम्-वर्षम्—-—सौ बरस, शताब्दी
- **शतवेधिन्**—पुं॰—शतम्- वेधिन्—-—एक प्रकार का खटमिठा शाक, चोका
- **शतसहस्रम्**—नपुं॰—शतम्-सहस्रम्—-—सौ हज़ार
- **शतसहस्रम्**—नपुं॰—शतम्-सहस्रम्—-—कई हज़ार अर्थात् एक बड़ी संख्या
- **शतसाहस्र**—वि॰—शतम्-साहस्र—-—सौ हज़ार से युक्त
- **शतसाहस्र**—वि॰—शतम्-साहस्र—-—सौ हज़ार में मोल लिया हुआ
- **शतह्रदा**—स्त्री॰—शतम्-ह्रदा—-—बिजली
- **शतह्रदा**—स्त्री॰—शतम्-ह्रदा—-—इन्द्र का वज्र
- **शतक**—वि॰—-—शत + कन्—सौ
- **शतक**—वि॰—-—शत + कन्—सौ से युक्त
- **शतकम्**—नपुं॰—-—-—शताब्दी
- **शतकम्**—नपुं॰—-—-—सौ श्लोकों का संग्रह
- **नीतिशतकम्**—नपुं॰—नीति-शतकम्—-—नीति विषयक सौ श्लोकों का संग्रह
- **वैराग्यशतकम्**—नपुं॰—वैराग्य-शतकम्—-—वैराग्य विषयक सौ श्लोकों का संग्रह
- **शृङ्गारशतकम्**—नपुं॰—शृङ्गार-शतकम्—-—शृङ्गार विषयक सौ श्लोकों का संग्रह
- **शततम**—वि॰—-—शत + तमप्—सौवाँ
- **शतधा**—अव्य॰—-—शत + धाच्—सौ तरह से
- **शतधा**—अव्य॰—-—शत + धाच्—सौ भागों में या टुकड़ों में
- **शतधा**—अव्य॰—-—शत + धाच्—सौगुना
- **शतशस्**—अव्य॰—-—शत + शस्—सौ सौ करके
- **शतशस्**—अव्य॰—-—शत + शस्—सौ बार
- **शतशस्**—अव्य॰—-—शत + शस्—सौ तरह से, विविध प्रकार से, नाना प्रकार से
- **शतिक**—वि॰—-—शत + ठन् —सौ से युक्त

- **शतिक**—वि°—-—शत + ठन् —सौ से सम्बन्ध रखने वाला
- **शतिक**—वि°—-—शत + ठन् —सौ से प्रभावित
- **शतिक**—वि°—-—शत + ठन् —सौ में मोल लिया
- **शतिक**—वि°—-—शत + ठन् —सौ से बदला किया हुआ
- **शतिक**—वि°—-—शत + ठन् —प्रतिशत शुल्क या ब्याज देने वाला
- **शतिक**—वि°—-—शत + ठन् —सौ का सूचक
- **शत्य**—वि°—-—शत + यत्—सौ से युक्त
- **शत्य**—वि°—-—शत + यत्—सौ से सम्बन्ध रखने वाला
- **शत्य**—वि°—-—शत + यत्—सौ से प्रभावित
- **शत्य**—वि°—-—शत + यत्—सौ में मोल लिया
- **शत्य**—वि°—-—शत + यत्—सौ से बदला किया हुआ
- **शत्य**—वि°—-—शत + यत्—प्रतिशत शुल्क या ब्याज देने वाला
- **शत्य**—वि°—-—शत + यत्—सौ का सूचक
- **शतिन्**—वि° —-—शत + इनि—सौगुणा
- **शतिन्**—वि° —-—शत + इनि—असंख्य
- **शतिन्**—पुं°—-—शत + इनि—सौ का स्वामी
- **शत्रिः**—पुं°—-—शद् + त्रिप्—हाथी ।
- **शत्रुः**—पुं°—-—शद् + त्रुन्—परास्त करने वाला, विनाशक, विजेता
- **शत्रुः**—पुं°—-—शद् + त्रुन्—दुश्मन, वैरी, प्रतिपक्षी
- **शत्रुः**—पुं°—-—शद् + त्रुन्—राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वी, पड़ौस का प्रतिद्वन्द्वी राजा
- **शत्रूपजापः**—पुं°—शत्रु-उपजापः—-—दुश्मन की गुपचुप कानाफूसी, शत्रु का विश्वासघाती प्रस्ताव
- **शत्रुकर्षण**—वि°—शत्रु-कर्षण—-—शत्रु का दमन करने वाला, शत्रु को जीतने वाला या शत्रु को नष्ट करने वाला
- **शत्रुदमन**—वि°—शत्रु-दमन—-—शत्रु का दमन करने वाला, शत्रु को जीतने वाला या शत्रु को नष्ट करने वाला
- **शत्रुनिबर्हण**—वि°—शत्रु-निबर्हण—-—शत्रु का दमन करने वाला, शत्रु को जीतने वाला या शत्रु को नष्ट करने वाला
- **शत्रुघ्नः**—पुं°—शत्रु-घ्नः—-—शत्रुओं को नष्ट करने वाला
- **शत्रुपक्षः**—पुं°—शत्रु-पक्षः—-—शत्रु का पक्ष या दल
- **शत्रुपक्षः**—पुं°—शत्रु-पक्षः—-—प्रतिपक्षी, विरोधी,

- **शत्रुविनाशनः**—पुं°—शत्रु-विनाशनः—–—शिव का विशेषण
- **शत्रुहत्या**—स्त्री°—शत्रु-हत्या—–—शत्रु की हत्या
- **शत्रुहन्**—वि°—शत्रु-हन्—–—शत्रु का वध करने वाला
- **शत्रुञ्जयः**—पुं°—–—शत्रु + जि + खच्, मुम्—अपने शत्रु को परास्त करने वाला या नष्ट करने वाला।
- **शत्वरी**—स्त्री°—–—–—रात
- **शद्** —भ्वा° पर° <शीयते>, <शन्न>—–—–—पतन होना, नष्ट होना, मुर्झाना, कुम्हलाना
- **शद्** —भ्वा° पर° <शीयते>, <शन्न>—–—–—जाना
- **शद्** —भ्वा°उभ°, प्रेर° <शादयति>, <शादयते>—–—–—पहुँचाना, ठेलना
- **शद्** —भ्वा°उभ°, प्रेर° <शादयति>, <शादयते>—–—–—गिराना, नीचे फेंक देना, काट डालना
- **शद्** —भ्वा°उभ°, प्रेर° <शादयति>, <शादयते>—–—–—वध करना, नष्ट करना
- **शद्** —भ्वा° पर° <शदति>—–—–—जाना
- **शदः**—पुं°—–—शद् + अच्—खाद्य, शाकभाजी (फल मूल आदि) ।
- **शद्रिः**—पुं°—–—शद् + क्रिन्—हाथी
- **शद्रिः**—पुं°—–—शद् + क्रिन्—बादल
- **शद्रिः**—पुं°—–—शद् + क्रिन्—अर्जुन
- **शद्रिः**—स्त्री°—–—–—बिजली
- **शद्रुः**—वि°—–—शद् + रु—जाने वाला, गतिशील
- **शद्रुः**—वि°—–—शद् + रु—पतनशील, नश्वर, क्षय होने वाला।
- **शनकैः**—अव्य°—–—शनैः + अकच्—शनैः शनैः
- **शनिः**—पुं°—–—शो + अनि किच्च—शनिग्रह
- **शनिः**—पुं°—–—शो + अनि किच्च—शनिवार
- **शनिः**—पुं°—–—शो + अनि किच्च—शिव।
- **शनिजम्**—नपुं°—शनि-जम्—–—काली मिर्च
- **शनिप्रदोषः**—पुं°—शनि-प्रदोषः—–—शिव की (सांध्यकालीन) पूजा जो शुक्लपक्ष की त्रयोदशी को शनिवार आ पड़ने पर की जाता है
- **शनिप्रियम्**—नपुं°—शनि-प्रियम्—–—नीलमणि
- **शनिवारः**—पुं°—शनि-वारः—–—शनिवार का दिन
- **शनिवासरः**—पुं°—शनि-वासरः—–—शनिवार का दिन

- **शनैस्**—अव्य०—-—शण् + डैस्, पृषो० नुक्—आहिस्ता से, धीमे, चुपचाप
- **शनैस्**—अव्य०—-—शण् + डैस्, पृषो० नुक्—यथाक्रम क्रमशः, थोड़ा थोड़ा करके धर्म
- **शनैस्**—अव्य०—-—शण् + डैस्, पृषो० नुक्—उत्तरोत्तर, उपयुक्त क्रम में
- **शनैस्**—अव्य०—-—शण् + डैस्, पृषो० नुक्—मृदुता से, नरमी से
- **शनैस्**—अव्य०—-—शण् + डैस्, पृषो० नुक्—सुस्ती के साथ, आलस्यपूर्वक
- **शनैः शनैः**—अव्य०—-—-—आहिस्ता से, आहिस्ता आहिस्ता
- **शनैश्चर**—वि०—शनैस्-चर—-—शनैः शनैः घूमने वाला या चलने वाला
- **शनैश्चरः**—पुं०—शनैस्-चरः—-—शनिग्रह
- **शन्तनुः**—पुं०—-—शं मंगलात्मका तनुर्यस्य ब० स०— एक चन्द्रबंशी राजा
- **शप्**—भ्वा० <शपति> ,<शपते>, दिवा० उभ०, <शप्यति>, <शप्यते>, <शप्त>—-— —अभिशाप देना, कोसना
- **शप्**—भ्वा० <शपति> ,<शपते>, दिवा० उभ०, <शप्यति>, <शप्यते>, <शप्त>—-—-—शपथ लेना, कसम उठाना, शपथपूर्वक प्रतिज्ञा करना, सौगंध खाना
- **शप्**—भ्वा० <शपति> ,<शपते>, दिवा० उभ०, <शप्यति>, <शप्यते>, <शप्त>—-—-—कंलकित करना, धमकाना, बुरा-भला कहना, गाली देना
- **शप्**—भ्वा०, प्रेर० <शापयति>, <शापयते>—-—-—शपथद्वारा बाँध लेना, शपथपूर्वक प्रतिज्ञा करना
- **शपः**—पुं०—-—शप् + अच्—अभिशाप, सरापना, कोसना
- **शपः**—पुं०—-—शप् + अच्—शपथ, सौगन्ध
- **शपथः**—पुं०—-—शप् + अथन्—कोसना
- **शपथः**—पुं०—-—शप् + अथन्—अभिशाप, आक्रोश, फटकारा
- **शपथः**—पुं०—-—शप् + अथन्—सौगन्ध, कसम खाना, शपथ लेना या दिलवाना, शपथोक्ति
- **शपथः**—पुं०—-—शप् + अथन्—शपथपूर्वक अनुरोध, सौगन्ध से बाँधना
- **शपनम्**—नपुं०—-—शप् + ल्युट्—कोसना
- **शपनम्**—नपुं०—-—शप् + ल्युट्—अभिशाप, आक्रोश, फटकारा
- **शपनम्**—नपुं०—-—शप् + ल्युट्—सौगन्ध, कसम खाना, शपथ लेना या दिलवाना, शपथोक्ति
- **शपनम्**—नपुं०—-—शप् + ल्युट्—शपथपूर्वक अनुरोध, सौगन्ध से बाँधना
- **शप्त**—भू० क० कृ०—-—शप् + क्त—अभिशप्त
- **शप्त**—भू० क० कृ०—-—शप् + क्त—जिसने सौगन्ध खाली है
- **शप्त**—भू० क० कृ०—-—शप् + क्त—बुरा भला कहा गया, दुर्वचन कहा गया ।

- **शफः**—पुं°—–—शप् + अच्, पृषो° पस्य फः —सुम
- **शफः**—पुं°—–—शप् + अच्, पृषो° पस्य फः —वृक्ष की जड़
- **शफम्**—नपुं°—–—शप् + अच्, पृषो° पस्य फः —सुम
- **शफम्**—नपुं°—–—शप् + अच्, पृषो° पस्य फः —वृक्ष की जड़
- **शफरः**—पुं°—-—शफ राति- रा + क—एक प्रकार की छोटी चमकीली मछली
- **शफराधिपः**—पुं°—शफर-अधिपः—-—`इलीश' नामक मछली ।
- **शबरः**—पुं°—–—–—पहाड़ी, असभ्य, भील, जंगली
- **शबरः**—पुं°—–—–—शिव
- **शबरः**—पुं°—–—–—हाथ
- **शबरः**—पुं°—–—–—जल
- **शबरः**—पुं°—–—–—एक शास्त्र विशेष या धार्मिक पुस्तक
- **शबरः**—पुं°—–—–—मीमांसा के प्रसिद्ध भाष्यकार
- **शवरः**—पुं°—–—शव् + अरन्—पहाड़ी, असभ्य, भील, जंगली
- **शवरः**—पुं°—–—शव् + अरन्—शिव
- **शवरः**—पुं°—–—शव् + अरन्—हाथ
- **शवरः**—पुं°—–—शव् + अरन्—जल
- **शवरः**—पुं°—–—शव् + अरन्—एक शास्त्र विशेष या धार्मिक पुस्तक
- **शवरः**—पुं°—–—शव् + अरन्—मीमांसा के प्रसिद्ध भाष्यकार
- **शबरीः**—स्त्री°—–—–—भीलनी
- **शबरीः**—स्त्री°—–—–—राम की अनन्य भक्त एक भीलनी
- **शबरालयः**—पुं°—शबर-आलयः—-—जंगली, पहाड़ियों और भीलों का निवासस्थान
- **शबरलोध्र**—पुं°—शबर-लोध्र—-—जंगली लोध्र का वृक्ष
- **शबल**—वि°—–—शप् + अल, बश्च—धब्बेदार, रंग-बिरंगा, चितकबरा
- **शबल**—वि°—–—शप् + अल, बश्च—नानारूप, अनेक भागों में विभक्त
- **शवल**—वि°—–—–—धब्बेदार, रंग-बिरंगा, चितकबरा
- **शवल**—वि°—–—–—नानारूप, अनेक भागों में विभक्त
- **शबलः**—पुं°—–—–—नानाप्रकार का रंग

- **शबला**—स्त्री॰—-—-—धब्बेदार या चितकबरी गाय
- **शबला**—स्त्री॰—-—-—कामधेनु
- **शबली**—स्त्री॰—-—-—धब्बेदार या चितकबरी गाय
- **शबली**—स्त्री॰—-—-—कामधेनु
- **शबलम्**—नपुं॰—-—-—पानी
- **शब्द्**—चुरा॰ उभ॰ <शब्दयति>, <शब्दयते> , <शब्दित>—-—-—ध्वनि करना, शोर मचाना
- **शब्द्**—चुरा॰ उभ॰ <शब्दयति>, <शब्दयते> , <शब्दित>—-—-—बोलना, बुलाना, आवाज़ देना
- **शब्द्**—चुरा॰ उभ॰ <शब्दयति>, <शब्दयते> , <शब्दित>—-—-—नाम लेना, पुकारना
- **अभिशब्द्**—चुरा॰ उभ॰—अभि-शब्द्—-—नाम रखना
- **प्रशब्द्**—चुरा॰ उभ॰—प्र-शब्द्—-—व्याख्या करना
- **संशब्द्**—चुरा॰ उभ॰—सम्-शब्द्—-—बुलाना
- **शब्दः**—पुं॰—-—शब्द् + घञ्—ध्वनि (श्रोत्रेन्द्रिय का विषय) आकाशगुण
- **शब्दः**—पुं॰—-—शब्द् + घञ्—आवाज़, कलरव (पक्षियों का या मनुष्यादिकों का), कोलाहल
- **शब्दः**—पुं॰—-—शब्द् + घञ्—बाजे की आवाज़
- **शब्दः**—पुं॰—-—शब्द् + घञ्—वचन, ध्वनि, सार्थक ध्वनि, शब्द
- **शब्दः**—पुं॰—-—शब्द् + घञ्—विकारीशब्द, संज्ञा, प्रतिपादक
- **शब्दः**—पुं॰—-—शब्द् + घञ्—उपाधि, विशेषण
- **शब्दः**—पुं॰—-—शब्द् + घञ्—नाम, केवल नाम
- **शब्दः**—पुं॰—-—शब्द् + घञ्—शाब्दिक प्रामाणिकता
- **शब्दातीत**—वि॰—शब्द-अतीत—-—शब्दों की शक्ति से परे, अनिर्वचनीय
- **शब्दाधिष्ठानम्**—नपुं॰—शब्द-अधिष्ठानम्—-—कान
- **शब्दाध्याहारः**—पुं॰—शब्द-अध्याहारः—-—(शब्दन्यूनता को पूरा करने के लिए) शब्दपूर्ति
- **शब्दानुशासनम्**—नपुं॰—शब्द-अनुशासनम्—-—शब्दों का शास्त्र अर्थात् व्याकरण
- **शब्दार्थः**—पुं॰—शब्द-अर्थः—-—शब्द के अर्थ
- **शब्दार्थौ**—पुं॰द्वि॰ व॰—शब्द-अर्थौ—-—शब्द और उसका अर्थ
- **शब्दालङ्कारः**—पुं॰—शब्द-अलङ्कारः—-—वह अलङ्कार जो अपने शब्द सौन्दर्य पर निर्भर करता है, तथा जब उसी अर्थ को प्रकट करने वाला दूसरा शब्द रख दिया जाता है तो उसका सौन्दर्य लुप्त हो जाता है)

- **शब्दाख्येय**—वि°—शब्द-आख्येय—-—शब्दों में भेजा जाने वाला समाचार
- **शब्दाख्येयम्**—नपुं°—शब्द- आख्येयम्—-—मौखिक या शाब्दिक सन्देश
- **शब्दाडम्बरः**—पुं°—शब्द-आडम्बरः—-—वाग्जाल, वाक्प्रपंच, शब्दाधिक्य, अतिशयोक्तिपूर्ण शब्द
- **शब्दादि**—वि°—शब्द-आदि—-—`शब्द' से आरम्भ होने वाले (ज्ञान के विषय)
- **शब्दकोशः**—पुं°—शब्द-कोशः—-—अभिधान, शब्दसंग्रह
- **शब्दगत**—वि°—शब्द-गत—-—शब्द के अन्दर रहने वाला
- **शब्दग्रहः**—पुं°—शब्द-ग्रहः—-—शब्द पकड़ना
- **शब्दग्रहः**—पुं°—शब्द-ग्रहः—-—कान
- **शब्दचातुर्यम्**—नपुं°—शब्द-चातुर्यम्—-—शैली की निपुणता, वाक्पटुता
- **शब्दचित्रम्**—नपुं°—शब्द-चित्रम्—-—कविता की अन्तिम श्रेणी के दो उपभेदों में से एक (अवर या अधम)
- **शब्दचोरः**—पुं°—शब्द-चोरः—-—`शब्दचोर' साहित्यचोर
- **शब्दतन्मात्रम्**—नपुं°—शब्द-तन्मात्रम्—-—ध्वनि का सूक्ष्म तत्त्व
- **शब्दपतिः**—पुं°—शब्द-पतिः—-—नाममात्र स्वामी, नाम का प्रभु
- **शब्दपातिन्**—वि°—शब्द-पातिन्—-—शब्द सुनकर ही अदृश्य निशाना लगाने वाला, शब्दवेधी, निशाना लगाने वाला
- **शब्दप्रमाणम्**—नपुं°—शब्द-प्रमाणम्—-—शाब्दिक या मौखिक प्रमाण
- **शब्दबोधः**—पुं°—शब्द-बोधः—-—मौखिक साक्ष्य से प्राप्त ज्ञान
- **शब्दब्रह्मन्**—नपुं°—शब्द-ब्रह्मन्—-—वेद
- **शब्दब्रह्मन्**—नपुं°—शब्द-ब्रह्मन्—-—शब्दों में निहित आध्यात्मिक ज्ञान, आत्मा या परमात्मसम्बन्धी ज्ञान
- **शब्दब्रह्मन्**—नपुं°—शब्द-ब्रह्मन्—-—शब्द का गुण, 'स्फोट'
- **शब्दभेदिन्**—वि°—शब्द-भेदिन्—-—शब्दवेधी निशान लगाने वाला
- **शब्दभेदिन्**—पुं°—शब्द-भेदिन्—-—अर्जुन का विशेषण
- **शब्दभेदिन्**—पुं°—शब्द-भेदिन्—-—गुदा
- **शब्दभेदिन्**—पुं°—शब्द-भेदिन्—-—एक प्रकार का बाण
- **शब्दयोनिः**—स्त्री°—शब्द-योनिः—-— धातु, मूल शब्द
- **शब्दविद्या**—स्त्री°—शब्द-विद्या—-—शब्दशास्त्र अर्थात् व्याकरण
- **शब्दशासनम्**—नपुं°—शब्द-शासनम्—-—शब्दशास्त्र अर्थात् व्याकरण
- **शब्दशास्त्रम**—नपुं°—शब्द-शास्त्रम—-—शब्दशास्त्र अर्थात् व्याकरण

- **शब्दविरोधः**—पुं°—शब्द-विरोधः—-—(शास्त्र में) शब्दों का विरोध
- **शब्दविशेषः**—पुं°—शब्द-विशेषः—-—ध्वनि का एक भेद
- **शब्दवृत्तिः**—स्त्री°—शब्द-वृत्तिः—-—साहित्य शास्त्र में शब्द का प्रयोग
- **शब्दवेधिन्**—वि°—शब्द-वेधिन्—-—ध्वनि सुनकर ही शब्दवेधी निशाना लगाने वाला
- **शब्दवेधिन्**—पुं°—शब्द-वेधिन्—-—अर्जुन का विशेषण
- **शब्दवेधिन्**—पुं°—शब्द-वेधिन्—-—एक प्रकार का बाण
- **शब्दशक्तिः**—स्त्री°—शब्द-शक्तिः—-—शब्द की अभिव्यञ्जक शक्ति, शब्द की सार्थकता
- **शब्दशुद्धिः**—स्त्री°—शब्द-शुद्धिः—-—शब्दों की पवित्रता
- **शब्दशुद्धिः**—स्त्री°—शब्द-शुद्धिः—-—शब्दों का शुद्ध प्रयोग
- **शब्दश्लेषः**—पुं°—शब्द-श्लेषः—-—शब्दों में अनेकार्थता, द्व्यर्थकता
- **शब्दसंग्रहः**—पुं°—शब्द-संग्रहः—-—शब्दकोश, शब्दावली
- **शब्दसौष्ठवम्**—नपुं°—शब्द-सौष्ठवम्—-—शब्दों का लालित्य, ललित और प्राञ्जल शैली
- **शब्दसौकर्यम्**—नपुं°—शब्द-सौकर्यम्—-—अभिव्यक्ति की सरलता
- **शब्दन**—वि°—-—शब्द + ल्युट—शब्द करने वाला, ध्वननशील
- **शब्दनम्**—नपुं°—-—-—ध्वनन, कोलाहल करना, शब्द करना
- **शब्दनम्**—नपुं°—-—-—आवाज, कोलाहल
- **शब्दनम्**—नपुं°—-—-—पुकारना, बुलाना
- **शब्दनम्**—नपुं°—-—-—नाम लेना
- **शब्दायते**—नामधातु आ°—-—-—कोलाहल करना, शोर करना
- **शब्दायते**—नामधातु आ°—-—-—क्रन्दन करना, दहाड़ना, चिल्लाना, चीं चीं करना
- **शब्दायते**—नामधातु आ°—-—-—बुलाना, पुकारना
- **शब्दित**—भू° क° कृ°—-—शब्द + क्त—ध्वनित, आवाज निकाली गई (वाद्ययंत्रादिक) बजाया गया
- **शब्दित**—भू° क° कृ°—-—शब्द + क्त—कहा गया, उच्चारण किया गया
- **शब्दित**—भू° क° कृ°—-—शब्द + क्त—बुलाया गया, पुकारा गया
- **शब्दित**—भू° क° कृ°—-—शब्द + क्त—नाम रक्खा गया, अभिहित
- **शम्**—अव्य°—-—शम् + क्विप—कल्याण, आनन्द, समृद्धि, स्वास्थ्य को द्योतन करने वाला अव्यय, आशीर्वाद या मंगल कामना प्रकट करने के लिए प्रयुक्त

- **शन्ताति**—वि०—शम्-ताति—-—आनन्द प्रदान करने वाला, मंगलमय, शुभ
- **शम्पाकः**—पुं०—शम्-पाकः—-—लाख, महावर, लाल रंग
- **शम्पाकः**—पुं०—शम्-पाकः—-—पकाना, परिपक्व करना
- **शम्**—दिवा० पर० <शाम्यन्ति>, < शान्त>—-—-—शान्त होना, चुप होना, संतुष्ट होना, प्रसन्न होना
- **शम्**—दिवा० पर० <शाम्यन्ति>, < शान्त>—-—-—थमना, ठहरना, समाप्त होना
- **शम्**—दिवा० पर० <शाम्यन्ति>, < शान्त>—-—-—शांत होना, बुझना
- **शम्**—दिवा० पर० <शाम्यन्ति>, < शान्त>—-—-—काम तमाम करना, नष्ट करना, मार डालना
- **शम्**—दिवा०उभ०, प्रेर० <शमयति>, <शमयते>—-—-—प्रसन्न करना, उपशमन करना, शान्त करना, धीरज देना, सांत्वना देना, ढाढस बंधाना
- **शम्**—दिवा०उभ०, प्रेर० <शमयति>, <शमयते>—-—-—अन्त करना, रोकना
- **शम्**—दिवा०उभ०, प्रेर० <शमयति>, <शमयते>—-—-—हटाना, परे करना
- **शम्**—दिवा०उभ०, प्रेर० <शमयति>, <शमयते>—-—-—दमन करना, पालतू बनाना, हराना, छीनना,परास्त करना
- **शम्**—दिवा०उभ०, प्रेर० <शमयति>, <शमयते>—-—-—मार डालना, नष्ट करना, वध करना
- **शम्**—दिवा०उभ०, प्रेर० <शमयति>, <शमयते>—-—-—शान्त करना, बुझाना
- **शम्**—दिवा०उभ०, प्रेर० <शमयति>, <शमयते>—-—-—त्याग देना, रुकना, थमना
- **उपशम्**—दिवा० पर०—उप-शम्—-—शान्त करना
- **उपशम्**—दिवा० पर०—उप-शम्—-—थमना, ठहरना, बुझाना
- **उपशम्**—दिवा० पर०—उप-शम्—-—हट जाना, बोलना बन्द होना
- **उपशम्**—दिवा० पर०—उप-शम्—-—परे रहना, बुझ जाना
- **उपशम्**—दिवा० पर०—उप-शम्—-—मुर्झाना, कुम्हलाना
- **उपशम्**—दिवा०उभ०, प्रेर०—उप-शम्—-—सांत्वना देना, प्रसन्न करना, शान्त करना
- **उपशम्**—दिवा०उभ०, प्रेर०—उप-शम्—-—दूर करना, बुझाना, शीतल करना, दबा देना
- **उपशम्**—दिवा०उभ०, प्रेर०—उप-शम्—-—हटाना, अन्त करना
- **उपशम्**—दिवा०उभ०, प्रेर०—उप-शम्—-—जीतना, परास्त करना, वशीभूत करना
- **उपशम्**—दिवा०उभ०, प्रेर०—उप-शम्—-—प्रतिष्ठित होना, समंजन करना, स्वस्थचित
- **उपशम्**—दिवा०उभ०, प्रेर०—उप-शम्—-—होना
- **संशम्**—दिवा० पर०—सम्-शम्—-—शान्त करना
- **संशम्**—दिवा० पर०—सम्-शम्—-—निराकृत होना, बुझना, लुप्त होना

- **संशम्**—दिवा॰ पर॰—सम्-शम्—-—हट जाना
- **शम्**—चुरा॰ उभ॰ <शामयति>, <शामयते>—-—-—देखना, निगाह डालना, निरीक्षण करना
- **शम्**—चुरा॰ उभ॰ <शामयति>, <शामयते>—-—-—बतलाना, प्रदर्शन करना
- **निशम्**—चुरा॰ उभ॰—नि-शम्—-—देखना, अवलोकन करना
- **निशम्**—चुरा॰ उभ॰—नि-शम्—-—सुनना, कान देना
- **शमः**—पुं॰—-—शम् + घञ्—मूकता, शान्ति, धैर्य
- **शमः**—पुं॰—-—शम् + घञ्—विश्राम, ठहराव, आराम, निवृत्ति
- **शमः**—पुं॰—-—शम् + घञ्—वासनाओं पर प्रतिबन्ध या अभाव, मानसिक शान्ति, विरक्ति
- **शमः**—पुं॰—-—शम् + घञ्—निराकरण, लघूकरण, उन्नयन, सन्तोषीकरण (शोक, प्यास, भूख आदि का) प्रशमन
- **शमः**—पुं॰—-—शम् + घञ्—शान्ति
- **शमः**—पुं॰—-—शम् + घञ्—(संसार की समस्त भ्रान्तियों व आसक्तियों से) मोक्ष
- **शमः**—पुं॰—-—शम् + घञ्—हाथ
- **शमान्तकः**—पुं॰—शम-अन्तकः—-—कामदेव (मानसिक शान्ति को नष्ट करने वाला)
- **शमपर**—वि॰—शम-पर—-—शान्त, मूक, बिषयविरागी
- **शमथः**—पुं॰—-—शम् + अथच्—शान्ति, स्थिरता, विशेषतः मानसिक शान्ति, आवेशाभाव
- **शमथः**—पुं॰—-—शम् + अथच्—परामर्शदाता, मन्त्री
- **शमन**—वि॰—-—शम् + णिच् + ल्युट्—शमन करने वाला, दमन करने वाला, वशीभूत करने वाला आदि
- **शमनम्**—नपुं॰—-—-—प्रसन्न करना, निराकरण करना, ढाढस बंधाना, जीतना, उन्नयन करना
- **शमनम्**—नपुं॰—-—-—स्थैर्य, शान्ति
- **शमनम्**—नपुं॰—-—-—अन्त, ठहराव, समाप्ति, विनाश
- **शमनम्**—नपुं॰—-—-—चोट पहुँचाना, घायल करना
- **शमनम्**—नपुं॰—-—-—यज्ञ के लिए पशुवध करना, पशुमेध
- **शमनम्**—नपुं॰—-—-—निगल जाना, चबाना
- **शमनः**—पुं॰—-—-—एक प्रकार का हरिण, बारहसिंगा
- **शमनः**—पुं॰—-—-—मृत्यु का देवता, यम
- **शमनस्वभू**—स्त्री॰—शमन-स्वभू—-—'यमस्वसा' यमुना नदी का विशेषण
- **शमनी**—स्त्री॰—-—शमन + ङीप्—रात

- **शमनीसदः**—पुं°—शमनी-सदः———राक्षस, पिशाच, भूत-प्रेत
- **शमनीषदः**—पुं°—शमनी-षदः———राक्षस, पिशाच, भूत-प्रेत
- **शमलम्**—नपुं°———शम् + कलच्—मल, लीद, विष्ठा
- **शमलम्**—नपुं°—————अपवित्रता, गाद, तलौंछ
- **शमलम्**—नपुं°—————पाप, नैतिक मलिनता
- **शमित**—भू° क° कृ°———शम् + णिच् + क्त—प्रसन्न किया गया, निराकृत, ढाढस बंधाया गया, शान्त
- **शमित**—भू° क° कृ°———शम् + णिच् + क्त—धीमा किया गया, चिकित्सा की गई, भारविमुक्त किया गया
- **शमित**—भू° क° कृ°———शम् + णिच् + क्त—विश्राम दिया गया
- **शमित**—भू° क° कृ°———शम् + णिच् + क्त—शान्त, सौम्य, परिमित किया गया, मृदु किया गया
- **शमिन्**—वि°———शम् + इनि— सौम्य, शान्त, प्रशान्त
- **शमिन्**—वि°———शम् + इनि—जिसने अपने आवेशों का दमन कर लिया ह
- **शमी**—स्त्री°———शम् + इन्—एक वृक्ष (कहा जाता है कि इसमें आग रहती है)
- **शमी**—स्त्री°———शम् + इन्—फली, छीमी, सेम
- **शमि**—स्त्री°———शम् + ङीप् —एक वृक्ष (कहा जाता है कि इसमें आग रहती है)
- **शमि**—स्त्री°———शम् + ङीप् —फली, छीमी, सेम
- **शमीगर्भः**—पुं°—शमी-गर्भः———अग्नि का विशेषण
- **शमीगर्भः**—पुं°—शमी-गर्भः———ब्राह्मण, अग्निहोत्री ब्राह्मण
- **शमीधान्यम्**—नपुं°—शमी-धान्यम्———फलियों में उत्पन्न या दाल आदि, द्विदलीय अन्न
- **शम्पा**—स्त्री°———शम् + पा + क—बिजली
- **शम्ब्**—भ्वा° पर° <शम्बति>—————जाना, हिलना-जुलना
- **शम्ब्**—चुरा° पर° < शम्बयति>—————संचय करना, ढेर लगाना
- **शम्ब**—वि°———शम्ब् + अच्—प्रसन्न, भाग्यशाली
- **शम्ब**—वि°———शम्ब् + अच्—बेचारा, अभागा
- **शम्व**—वि°———शम्ब् + अच्—प्रसन्न, भाग्यशाली
- **शम्व**—वि°———शम्ब् + अच्—बेचारा, अभागा
- **शम्बः**—पुं°—————इन्द्र का वज्र
- **शम्बः**—पुं°—————मूसली का लोहे का बना सिर

- **शम्बः**—पुं॰—————लोहे की जञ्जीर जो कमर के चारों ओर पहनी जाय
- **शम्बः**—पुं॰—————नियमित रूप से हल चलाना
- **शम्बः**—पुं॰—————जुते हुए खेत में हल चलाना
- **शम्बाकृ** ——————दोबारा हल चलाना
- **शम्बरः**—पुं॰———शम्ब् + अरच्— एक राक्षस का नाम जिसे प्रद्युम्न ने मार गिराया था
- **शम्बरः**—पुं॰———शम्ब् + अरच्—पहाड़
- **शम्बरः**—पुं॰———शम्ब् + अरच्—एक प्रकार का हरिण
- **शम्बरः**—पुं॰———शम्ब् + अरच्—एक प्रकार की मछली
- **शम्बरः**—पुं॰———शम्ब् + अरच्—युद्ध
- **शम्बरम्**—नपुं॰—————जल
- **शम्बरम्**—नपुं॰—————बादल
- **शम्बरम्**—नपुं॰—————दौलत
- **शम्बरम्**—नपुं॰—————संस्कार या कोई धार्मिक अनुष्ठान
- **शम्बरारिः**—पुं॰—शम्बर-अरिः———प्रद्युम्न या कामदेव के विशेषण
- **शम्बरसूदनः**—पुं॰—शम्बर-सूदनः———प्रद्युम्न या कामदेव के विशेषण
- **शम्बरासुरः**—पुं॰—शम्बर-असुरः———शंबर नामक राक्षस
- **शम्बरी**—स्त्री॰———शम्बर + ङीष्—माया, जादू
- **शम्बरी**—स्त्री॰———शम्बर + ङीष्—स्त्री जादूगरनी
- **शम्बलः**—पुं॰———शम्ब् + कलच्—तट, किनारा
- **शम्बलः**—पुं॰———शम्ब् + कलच्—पाथेय, मार्गव्यय, राहख़र्च
- **शम्बलः**—पुं॰———शम्ब् + कलच्—स्पर्धा, ईर्ष्या
- **शम्बलम्**—नपुं॰———शम्ब् + कलच्—तट, किनारा
- **शम्बलम्**—नपुं॰———शम्ब् + कलच्—पाथेय, मार्गव्यय, राहख़र्च
- **शम्बलम्**—नपुं॰———शम्ब् + कलच्—स्पर्धा, ईर्ष्या
- **शम्बली**—स्त्री॰———शम्बल + ङीष्—कुटनी
- **शम्बुः**—पुं॰———शम्ब् + उण्—द्विकोषीय घोंघा
- **शम्बुकः**—पुं॰———शम्बु + कन्—द्विकोषीय घोंघा

- **शम्बुक्कः**—पुं°—-—शम्बु + कन्—द्विकोषीय घोंघा
- **शम्बूकः**—पुं°—-—शम्ब् + ऊकः—द्विकोषीय घोंघा
- **शम्बूकः**—पुं°—-—शम्ब् + ऊकः—शंख
- **शम्बूकः**—पुं°—-—शम्ब् + ऊकः—घोंघा
- **शम्बूकः**—पुं°—-—शम्ब् + ऊकः—हाथी की सूंड़ की नोक
- **शम्बूकः**—पुं°—-—शम्ब् + ऊकः—एक शूद्र (इसे राम ने उसकी जाति के लिए वर्जित साधना का अभ्यास करने के कारण मार डाला था
- **शम्भः**—पुं°—-—शम् + भ—प्रसन्न मनुष्य
- **शम्भः**—पुं°—-—शम् + भ—इन्द्र का वज्र
- **शम्भली**—स्त्री°—-—शम्भल + ङीष्—दूती, कुटनी
- **शम्भु**—वि°—-—शम् + भू + डु—आनन्द देने वाला, समृद्धि प्रदान करने वाला
- **शम्भुः**—पुं°—-—-—शिव
- **शम्भुः**—पुं°—-—-—ब्रह्मा
- **शम्भुः**—पुं°—-—-—ऋषि, श्रद्धेय पुरुष
- **शम्भुः**—पुं°—-—-—एक प्रकार का सिद्ध
- **शम्भुतनयः**—पुं°—शम्भु-तनयः—-—कार्तिकेय या गणेश के विशेषण
- **शम्भुनन्दनः**—पुं°—शम्भु-नन्दनः—-—कार्तिकेय या गणेश के विशेषण
- **शम्भुसुतः**—पुं°—शम्भु-सुतः—-—कार्तिकेय या गणेश के विशेषण
- **शम्भुप्रिया**—स्त्री°—शम्भु-प्रिया—-—दुर्गा
- **शम्भुप्रिया**—स्त्री°—शम्भु-प्रिया—-—आमल की
- **शम्भुवल्लभम्**—नपुं°—शम्भु-वल्लभम्—-—श्वेत कमल
- **शम्या**—स्त्री°—-—शम् + यत् + टाप्—लकड़ी की छड़ी या थूणी
- **शम्या**—स्त्री°—-—शम् + यत् + टाप्—डंडा
- **शम्या**—स्त्री°—-—शम् + यत् + टाप्—जूए की कील, सिलम
- **शम्या**—स्त्री°—-—शम् + यत् + टाप्—एक प्रकार की झाँझ
- **शम्या**—स्त्री°—-—शम् + यत् + टाप्—यज्ञीय पात्र
- **शय**—वि°—-—शी + अच्—लेटने वाला, सोने वाला
- **शयः**—पुं°—-—-—नींद

- **शयः**—पुं°—-—-—बिस्तरा, शय्या
- **शयः**—पुं°—-—-—हाथ
- **शयः**—पुं°—-—-—साँप विशेषतः अजगर
- **शयः**—पुं°—-—-—दुर्वचन, कोसना, अभिशाप
- **शयण्ड**—वि°—-—शी + अण्डन्—निद्रालु, सोने वाला
- **शयथ**—वि°—-—शी + अथच्—निद्रालु, सोया हुआ
- **शयथः**—पुं°—-—-—मृत्यु
- **शयथः**—पुं°—-—-—एक प्रकार का साँप, अजगर
- **शयथः**—पुं°—-—-—मछली
- **शयनम्**—नपुं°—-—शी + ल्युट्—सोना, निद्रा, लेटना
- **शयनम्**—नपुं°—-—शी + ल्युट्—बिस्तरा, शय्या
- **शयनम्**—नपुं°—-—शी + ल्युट्—मैथुन, संभोग
- **शयनागारः**—पुं°—शयनम्-अगारः—-—शयनकक्ष, सोने का कमरा
- **शयनागारः**—पुं°—शयनम्-आगारः—-—शयनकक्ष, सोने का कमरा
- **शयनागारम्**—नपुं°—शयनम्-अगारम्—-—शयनकक्ष, सोने का कमरा
- **शयनागारम्**—नपुं°—शयनम्-आगारम्—-—शयनकक्ष, सोने का कमरा
- **शयनगृहम्**—नपुं°—शयनम्-गृहम्—-—शयनकक्ष, सोने का कमरा
- **शयनैकादशी**—स्त्री°—शयनम्-एकादशी—-—आषाढ़ शुक्ला एकादशी (इस दिन विष्णु भगवान् चार मास तक विश्राम के लिए लेट जाते हैं)
- **शयनसखी**—स्त्री°—शयनम्-सखी—-—एक शय्या पर साथ सोने वाली सहेली
- **शयनस्थानम्**—नपुं°—शयनम्-स्थानम्—-—सोने का कमरा, शयनकक्ष
- **शयनीयम्**—नपुं°—-—शी + अनीयर्— बिस्तरा, शय्या
- **शयनीयकम्** —नपुं°—-—-— बिस्तरा, शय्या
- **शयानकः**—पुं°—-—शी + शानच् + कन्—गिरगिट
- **शयानकः**—पुं°—-—शी + शानच् + कन्—एक साँप, अजगर
- **शयालु**—वि°—-—शी + आलुच्—निद्रालु, तन्द्रालु, आलसी
- **शयालुः**—पुं°—-—-—एक प्रकार का साँप, अजगर
- **शयालुः**—पुं°—-—-—कुत्ता

- **शयालुः**—पुं॰—-—-—गीदड़
- **शयित**—भू॰ क॰ कृ॰—-—शी कर्तरि क्त—सोने वाला, विश्रान्त, सुप्त
- **शयित**—भू॰ क॰ कृ॰—-—शी कर्तरि क्त—लेटा हुआ
- **शयुः**—पुं॰—-—शी + उ—बड़ा साँप, अजगर
- **शय्या**—स्त्री॰—-—शी आधारे क्यप् + टाप्—बिस्तरा, बिछौना
- **शय्या**—स्त्री॰—-—शी आधारे क्यप् + टाप्—बाँधना, नत्थी करना
- **शय्याध्यक्षः** —पुं॰—शय्या-अध्यक्षः —-—राजा के शयनकक्ष का अधीक्षक
- **शय्यापाल**—वि॰—शय्या-पाल—-—राजा के शयनकक्ष का अधीक्षक
- **शय्योत्सङ्गः**—पुं॰—शय्या-उत्सङ्गः—-—पलंग का एक पार्श्व
- **शय्यागत**—वि॰—शय्या-गत—-—पलंग पर लेटा हुआ
- **शय्यागत**—वि॰—शय्या-गत—-—रोगी
- **शय्यागृहम्**—नपुं॰—शय्या-गृहम्—-—शयन-कक्ष
- **शरः**—पुं॰—-—शॄ + अच्— बाण, तीर
- **शरः**—पुं॰—-—शॄ + अच्—एक प्रकार का सफेद सरकंडा या घास
- **शरः**—पुं॰—-—शॄ + अच्—कुछ जमे हुए दूध की मलाई, मलाई
- **शरः**—पुं॰—-—शॄ + अच्—चोट, क्षति, घाव
- **शरः**—पुं॰—-—शॄ + अच्—पाँच की संख्या
- **शरम्**—नपुं॰—-—-—पानी
- **शराग्र्यः**—पुं॰—शर-अग्र्यः—-—बढ़िया तीर
- **शराभ्यासः**—पुं॰—शर-अभ्यासः—-—तीरंदाजी
- **शरासनम्**—नपुं॰—शर-असनम्—-—धनुष, कमान
- **शरास्यम्**—नपुं॰—शर-आस्यम्—-—धनुष, कमान
- **शराक्षेपः**—पुं॰—शर-आक्षेपः—-—तीरों की वर्षा
- **शरारोप**—पुं॰—शर-आरोप—-—धनुष
- **शरावापः**—पुं॰—शर-आवापः—-—धनुष
- **शराश्रय**—वि॰—शर-आश्रय—-—तरकस
- **शराहत**—वि॰—शर-आहत—-—जिसके तीर लगा हो

- **शरेषिका**—स्त्री°—शर-ईषिका—-—बाण
- **शरेष्टः**—पुं°—शर-इष्टः—-—आम का वृक्ष
- **शरौघः**—पुं°—शर-ओघः—-—बाणों का समूह, बाणवर्षा
- **शरकाण्डः**—पुं°—शर-काण्डः—-—नरकुल की डंडी
- **शरकाण्डः**—पुं°—शर-काण्डः—-—बाण की लकड़ी
- **शराघातः**—पुं°—शर-घातः—-—बाण से लक्ष्यवेध करना, तीरंदाजी
- **शरजम्**—नपुं°—शर-जम्—-—ताजा मक्खन
- **शरजन्मन्**—पुं°—शर-जन्मन्—-—कार्तिकेय का विशेषण
- **शरजालम्**—नपुं°—शर-जालम्—-—बाणों का समूह या ढेर
- **शरधिः**—पुं°—शर-धिः—-—तरकस
- **शरपातः**—पुं°—शर-पातः—-—बाण का छोड़ना
- **शरस्थानम्**—नपुं°—शर-स्थानम्—-—बाण का निशाना
- **शरपुङ्खः** —पुं°—शर-पुङ्खः —-—बाण का पंखदार किनारा
- **शरपुङ्खा**—स्त्री°—शर- पुङ्खा—-—बाण का पंखदार किनारा
- **शरफलम्**—नपुं°—शर-फलम्—-—बाण का फल
- **शरभङ्गः**—पुं°—शर-भङ्गः—-—एक ऋषि जिसके दर्शन राम ने दण्डकारण्य में किये थे
- **शरभूः**—पुं°—शर-भूः—-—कार्तिकेय
- **शरमल्लः**—पुं°—शर-मल्लः—-—धनुर्धर, तीरंदाज़
- **शरवनम्**—नपुं°—शर-वनम्—-—नरकुलों का झुरमुट
- **शरवणम्**—नपुं°—शर-वणम्—-—नरकुलों का झुरमुट
- **शरोद्भवः**—पुं°—शर-उद्भवः—-—कार्तिकेय के विशेषण
- **शरभवः**—पुं°—शर-भवः—-—कार्तिकेय के विशेषण
- **शरवर्षः**—पुं°—शर-वर्षः—-—बाणों की वर्षा या बौछार
- **शरवाणिः**—पुं°—शर-वाणिः—-—बाण का सिरा
- **शरवाणिः**—पुं°—शर-वाणिः—-—धनुर्धर
- **शरवाणिः**—पुं°—शर-वाणिः—-—बाणनिर्माता
- **शरवाणिः**—पुं°—शर-वाणिः—-—पदाति

- **शरवृष्टिः**—स्त्री°—शर-वृष्टिः—-—बाणों की बौछार
- **शरव्रातः**—पुं°—शर-व्रातः—-—बाणों का समूह
- **शरसन्धानम्**—वि°—शर-सन्धानम्—-—बाण का निशाना लगाना
- **शरसम्बाध**—वि°—शर-सम्बाध—-—बाणों से ढका हुआ
- **शरस्तम्बः**—पुं°—शर-स्तम्बः—-—नरकुलों का गुच्छा
- **शरटः**—पुं°—-—शॄ + अटन्—गिरगिट
- **शरटः**—पुं°—-—शॄ + अटन्—कुसुम्भ
- **शरणम्**—नपुं°—-—शॄ + ल्युट्—प्ररक्षा, सहायता, साहाय्य, प्रतिरक्षा
- **शरणम्**—नपुं°—-—शॄ + ल्युट्—आसरा, आश्रयस्थान
- **शरणम्**—नपुं°—-—शॄ + ल्युट्—ओट, सहारा, विश्रामस्थल (व्यक्तियों के लिए भी प्रयुक्त)
- **शरणं गम्**—-—-—शरण में जाना, आश्रय लेना, सहारा लेना
- **शरणम् ई**—-—-—शरण में जाना, आश्रय लेना, सहारा लेना
- **शरणम् या**—-—-—शरण में जाना, आश्रय लेना, सहारा लेना
- **शरणम्**—नपुं°—-—-—देवालय, शौचागार, कक्ष
- **शरणम्**—नपुं°—-—-—आवास, घर, निवासस्थल
- **शरणम्**—नपुं°—-—-—भट, बिल, माँद
- **शरणम्**—नपुं°—-—-—क्षति, हत्या
- **शरणार्थिन्**—वि°—शरणम्-आर्थिन्—-—शरण या रक्षा ढूँढने वाला
- **शरणैषिन्**—वि°—शरणम्-एषिन्—-—शरण या रक्षा ढूँढने वाला
- **शरणागत**—वि°—शरणम्-आगत—-—प्ररक्षा या शरण में गया हुआ, आश्रय लेने वाला, आश्रयार्थी
- **शरणापन्न**—वि°—शरणम्-आपन्न—-—प्ररक्षा या शरण में गया हुआ, आश्रय लेने वाला, आश्रयार्थी
- **शरणोन्मुख**—वि°—शरणम्-उन्मुख—-—शरण या प्ररक्षा खोजने वाला
- **शरण्डः**—पुं°—-—शॄ + अंडच्—पक्षी
- **शरण्डः**—पुं°—-—शॄ + अंडच्—गिरगिट
- **शरण्डः**—पुं°—-—शॄ + अंडच्—ठग, धूर्त
- **शरण्डः**—पुं°—-—शॄ + अंडच्—लम्पट, स्वेच्छाचारी
- **शरण्डः**—पुं°—-—शॄ + अंडच्—एक प्रकार का आभूषण

- **शरण्य**—वि°——–शरणे साधुः यत्—रक्षा करने के योग्य, शरण देने वाला, प्ररक्षक, आश्रय
- **शरण्य**—वि°——–शरणे साधुः यत्—जिसे रक्षा की आवश्यकता है, दीन, दयनीय,
- **शरण्यः**—पुं°———–—शिव का विशेषण
- **शरण्यम्**—नपुं°———–—आश्रयस्थल, शरणगृह
- **शरण्यः**—पुं°———–—प्ररक्षक, जो शरणागत की रक्षा करता है
- **शरण्यम्**—नपुं°———–—प्ररक्षा, प्रतिरक्षा
- **शरण्यः**—पुं°———–—क्षति, चोट
- **शरण्युः**—पुं°——–शॄ + अन्यु—प्ररक्षक
- **शरण्युः**—पुं°——–शॄ + अन्यु—बादल
- **शरण्युः**—पुं°——–शॄ + अन्यु—हवा
- **शरद्**—स्त्री°——–शॄ + अदि—पतझड़, शरदृतु (आश्विन तथा कार्तिक मास में होने वाली ऋतु)
- **शरद्**—स्त्री°——–शॄ + अदि—वर्ष
- **शरदन्तः**—पुं°—शरद्-अन्तः——–शरद् का अन्त, सर्दी का मौसम
- **शरदम्बुधरः**—पुं°—शरद्- अम्बुधरः——–शरद ऋतु का बादल
- **शरदुदाशयः**—पुं°—शरद्- उदाशयः——–शरत्कालीन सरोवर
- **शरत्कामिन्**—पुं°—शरद्-कामिन् ——– कुत्ता
- **शरत्कालः**—पुं°—शरद्-कालः——–शरत् काल, पतझड़ का मौसम
- **शरद्घनः**—पुं°—शरद्-घनः——–शरद ऋतु का बादल
- **शरन्मेघः**—पुं°—शरद्-मेघः——–शरद ऋतु का बादल
- **शरच्चन्द्रः** —पुं°—शरद्-चन्द्रः ——–शरत्कालीन चन्द्रमा
- **शरत्त्रियामा**—स्त्री°—शरद्-त्रियामा——–शरत्कालीन रात्रि
- **शरत्पद्मः**—पुं°—शरद्-पद्मः——–श्वेत कमल
- **शरत्पद्मम्**—नपु°—शरद्-पद्मम्——–श्वेत कमल
- **शरत्पर्वन्**—नपु°—शरद्-पर्वन्——–कोजागर नाम का उत्सव
- **शरन्मुखम्**—नपु°—शरद्-मुखम्——–शरद ऋतु का आरम्भ
- **शरदा**—स्त्री°——–शरद् + टाप्—पतझड़
- **शरदा**—स्त्री°——–शरद् + टाप्—वर्ष

- **शरदिज**—वि॰—-—शरदि जायते - जन् + ड, सप्तम्या अलुक्—पतझड़ या शरद ऋतु से सम्बन्ध रखने वाला
- **शरभः**—पुं॰—-—शृ + अभच्—हाथी का बच्चा
- **शरभः**—पुं॰—-—शृ + अभच्—आख्यायिकाओं में वर्णित आठ पैर का जन्तु जो सिंह से बलबान् होता है
- **शरभः**—पुं॰—-—शृ + अभच्—ऊँट
- **शरभः**—पुं॰—-—शृ + अभच्—टिड्डा
- **शरभः**—पुं॰—-—शृ + अभच्—टिडडी
- **शरयुः**—स्त्री॰—-—शृ + अयुः—एक नदी, सरयू
- **शरयुः**—पुं॰—-—शृ + अयुः—वायु, हवा
- **शरयुः**—स्त्री॰—-—शृ + अयुः—एक नदी का नाम जिसके तट पर अयोध्यानगरी स्थित है
- **शरयूः**—स्त्री॰—-—शृ + अयुः, पक्षे ऊङ्—एक नदी का नाम जिसके तट पर अयोध्यानगरी स्थित है
- **शरयूः**—स्त्री॰—-—शृ + अयुः, पक्षे ऊङ्—एक नदी, सरयू
- **शरल**—वि॰—-—शृ + अलच्—सीधा, अवक्र
- **शरल**—वि॰—-—शृ + अलच्—ईमानदार, खरा, निष्कपट, निश्छल
- **शरल**—वि॰—-—शृ + अलच्—सीधासादा, भोलाभाला, स्वाभाविक
- **शरलः**—पुं॰—-—शृ + अलच्—चीड़ का वृक्ष
- **शरलः**—पुं॰—-—शृ + अलच्—आग
- **शरलकम्**—नपुं॰—-—शरल + कन्—पानी
- **शरव्यम्**—नपुं॰—-—शरवे शरशिक्षायै हितं-शरु + यत्—(तीर मारने का) निशाना, लक्ष्य
- **शराटिः**—पुं॰—-—शर + अट् + इन्—एक प्रकार का पक्षी
- **शरातिः**—पुं॰—-—शर + अत् + इन्—एक प्रकार का पक्षी
- **शरारु**—वि॰—-—शृ + आरुं—अहितकर, अनिष्टकर, क्षतिकारक
- **शरावः**—पुं॰—-—शरं दध्यादिसारभवति अव् + अण्—कम गहरा बर्तन, थाली, मिट्टी का तौला, कतोरा, तस्तरी
- **शरावः**—पुं॰—-—शरं दध्यादिसारभवति अव् + अण्—ढकना, ढक्कन
- **शरावः**—पुं॰—-—शरं दध्यादिसारभवति अव् + अण्—दो कुडव के बराबर नाप
- **शरावम्**—नपुं॰—-—शरं दध्यादिसारभवति अव् + अण्—कम गहरा बर्तन, थाली, मिट्टी का तौला, कतोरा, तस्तरी
- **शरावम्**—नपुं॰—-—शरं दध्यादिसारभवति अव् + अण्—ढकना, ढक्कन
- **शरावम्**—नपुं॰—-—शरं दध्यादिसारभवति अव् + अण्—दो कुडव के बराबर नाप

- **शरावती**—स्त्री°—-—शर + मतुप् + ङीप्, दीर्घ वकारस्य—वह नगर जिसका शासक राम ने लव को बनाया था
- **शरिमन्**—पुं°—-—शृणाति यौवनम् शृ + इमन्—पैदा करना, जन्म देना
- **शरीरम्**—नपुं°—-—शृ + ईरन्—(जड चेतन पदार्थों की) काया, देह
- **शरीरम्**—नपुं°—-—शृ + ईरन्—संघटक तत्त्व
- **शरीरम्**—नपुं°—-—शृ + ईरन्—दैहिक शक्ति
- **शरीरम्**—नपुं°—-—शृ + ईरन्—मृत शरीर, शव
- **शरीरान्तरम्**—नपुं°—शरीरम्-अन्तरम्—-—शरीर का आन्तरिक भाग
- **शरीरान्तरम्**—नपुं°—शरीरम्-अन्तरम्—-—दूसरा शरीर
- **शरीरावरणम्**—नपुं°—शरीरम्-आवरणम्—-—खाल, चमड़ी
- **शरीरकर्तृ**—पुं°—शरीरम्-कर्तृ—-—पिता
- **शरीरकर्षणम्**—नपुं°—शरीरम्-कर्षणम्—-—शरीर की कृशता
- **शरीरजः**—पुं°—शरीरम्-जः—-—रोग
- **शरीरजः**—पुं°—शरीरम्-जः—-—काम, प्रणयोन्माद
- **शरीरजः**—पुं°—शरीरम्-जः—-—कामदेव
- **शरीरजः**—पुं°—शरीरम्-जः—-—पुत्र, सन्तान
- **शरीरतुल्य**—वि°—शरीरम्-तुल्य—-—समान अर्थात् उतना प्रिय जितना अपना शरीर
- **शरीरदण्डः**—पुं°—शरीरम्-दण्डः—-—शारीरिक दंड
- **शरीरदण्डः**—पुं°—शरीरम्-दण्डः—-—कार्य-साधना
- **शरीरधृक्**—वि°—शरीरम्-धृक्—-—शरीरधारी
- **शरीरपतनम्**—नपुं°—शरीरम्-पतनम् पात्—-—मृत्यु, मौत
- **शरीरपातः**—पुं°—शरीरम्-पातः—-—मृत्यु, मौत
- **शरीरपाकः**—पुं°—शरीरम्-पाकः—-—(शरीर की) कृशता
- **शरीरबद्ध**—वि°—शरीरम्-बद्ध—-—शरीर से युक्त, शरीरधारी, शरीरी
- **शरीरबन्धः**—पुं°—शरीर-बन्धः—-—शारीरिक ढांचा
- **शरीरबन्धः**—पुं°—शरीर-बन्धः—-—शरीर से युक्त होना अर्थात् शरीरधारी प्राणी का जन्म
- **शरीरबन्धकः**—वि°—शरीरम्-बन्धकः—-—सशरीर प्रतिभू
- **शरीरभाज्**—वि°—शरीरम्-भाज्—-—शरीरधारी, शरीरी

- **शरीरभाज्**—पुं°—शरीरम्-भाज्—-—जन्तु, शरीरधारी प्राणी
- **शरीरभेदः**—पुं°—शरीरम्-भेदः—-—(आत्मा से) शरीर का वियोग, मृत्यु
- **शरीरयष्टिः**—स्त्री°—शरीरम्-यष्टिः—-—पतला शरीर, सुकुमार, दुबला-पतला
- **शरीरयात्रा**—स्त्री°—शरीरम्-यात्रा—-—आजीविका
- **शरीरविमोक्षणम्**—नपुं°—शरीरम्-विमोक्षणम्—-—आत्मा का शरीर से छुटकारा, मुक्ति
- **शरीरवृत्तिः**—स्त्री°—शरीरम्-वृत्तिः—-—शरीर का पालन पोषण
- **शरीरवैकल्यम्**—नपुं°—शरीरम्-वैकल्यम्—-—शारीरिक रोग, बीमारी, व्याधि
- **शरीरशुश्रूषा**—स्त्री°—शरीरम्-शुश्रूषा—-—व्यक्तिगत सेवा
- **शरीरसंस्कारः**—पुं°—शरीरम्-संस्कारः—-—व्यक्ति की सजावट
- **शरीरसंस्कारः**—पुं°—शरीरम्-संस्कारः—-—नाना प्रकार के शुद्धिसंस्कारों के अनुष्ठान द्वारा शरीर को निर्मल करना
- **शरीरसंपत्तिः**—स्त्री°—शरीरम्-संपत्तिः—-—शरीर की समृद्धि, (अच्छा) स्वास्थ्य
- **शरीरपादः**—पुं°—शरीरम्-पादः—-—शरीर की दुर्बलता, कृशता
- **शरीरस्थितिः**—स्त्री°—शरीरम्-स्थितिः—-—शरीर का पालन पोषण
- **शरीरस्थितिः**—स्त्री°—शरीरम्-स्थितिः—-—भोजन करना, खाना
- **शरीरकम्**—नपुं°—-—शरीर + कन्—देह
- **शरीरकम्**—नपुं°—-—शरीर + कन्—छोटा शरीर
- **शरीरकः**—पुं°—-—-—आत्मा
- **शरीरिन्**—वि°—-—शरीर + इनि—शरीरधारी, शरीरयुक्त, शरीर
- **शरीरिन्**—वि°—-—शरीर + इनि—जीवित
- **शरीरिन्**—पुं°—-—-—कोई भी शरीरधारी वस्तु (चाहे जड़ हो चाहे चेतन)
- **शरीरिन्**—पुं°—-—-—सजीव प्राणी
- **शरीरिन्**—पुं°—-—-—मनुष्य आत्मा (शरीर से युक्त)
- **शर्करजा**—स्त्री°—-—शृ + करन् + जन् + ड + टाप्—कंदयुक्त चीनी, मिश्री
- **शर्करा**—स्त्री°—-—शृ + करन + टाप्—कंदयुक्त चीनी
- **शर्करा**—स्त्री°—-—शृ + करन + टाप्—कंकड़ी, रोड़ी, बजरी
- **शर्करा**—स्त्री°—-—शृ + करन + टाप्—कंकरीला रूप
- **शर्करा**—स्त्री°—-—शृ + करन + टाप्—बालू से युक्त भूमि, रेत

- **शर्करा**—स्त्री॰—-—शृ + करन + टाप्—टुकड़ा, खण्ड
- **शर्करा**—स्त्री॰—-—शृ + करन + टाप्—ठींकरा
- **शर्करा**—स्त्री॰—-—शृ + करन + टाप्—कोई भी कड़ा कण
- **शर्करा**—स्त्री॰—-—शृ + करन + टाप्—पथरी का रोग
- **शर्करोदकम्**—नपुं॰—शर्करा-उदकम्—-—खांडमिश्रित जल, चीनी डाल कर मीठा किया हुआ पानी
- **शर्करासप्तमी**—स्त्री॰—शर्करा-सप्तमी—-—वैशाख शुक्ला सप्तमी के दिन मनाया जाने वाला अनुष्ठान
- **शर्करिक**—वि॰—-—शर्करा + ठक्—कंकरीला, बजरीदार, किरकिरा
- **शर्करिल**—वि॰—-—शर्करा + इलच्—कंकरीला, बजरीदार, किरकिरा
- **शर्करी**—स्त्री॰—-—-—नदी
- **शर्करी**—स्त्री॰—-—-—करघनी, मेखला
- **शर्धः**—पुं॰—-—शृध् + घञ्—अपानवायु का त्याग, अफारा
- **शर्धः**—पुं॰—-—शृध् + घञ्—दल, समूह
- **शर्धः**—पुं॰—-—शृध् + घञ्—सामर्थ्य, शक्ति
- **शर्धजह**—वि॰—-—शर्ध + हा + खश्, मुम्—अफारा उत्पन्न करने वाला
- **शर्धजहः**—पुं॰—-—शर्ध + हा + खश्, मुम्—उड़द या माष की दाल
- **शर्धनम्**—नपुं॰—-—शृध् + ल्युट्—अपानवायु को छोडने की क्रिया
- **शर्ब्**—भ्वा॰ पर॰ <शर्बति>—-—-—जाना, हिलना-डुलना
- **शर्ब्**—भ्वा॰ पर॰ <शर्बति>—-—-—क्षतिग्रस्त करना, मार डालना।
- **शर्मन्**—पुं॰—-—शृ + मनिन्—ब्राह्मण के नाम के आगे जोड़ी जाने वाली उपाधि यथा विष्णुशर्मन्
- **शर्मन्**—नपुं॰—-—शृ + मनिन्—प्रसन्नता, आनन्द, खुशी
- **शर्मन्**—नपुं॰—-—शृ + मनिन्—आशीर्वाद
- **शर्मन्**—नपुं॰—-—शृ + मनिन्—घर, आधार
- **शर्मद**—वि॰—शर्मन्-द—-—आनन्ददायक
- **शर्मदः**—पुं॰—शर्मन्-दः—-—विष्णु का विशेषण
- **शर्मरः**—पुं॰—-—शर्मन् + रा + क—एक प्रकार का परिधान, वस्त्र
- **शर्या**—स्त्री॰—-—शृ + यत् + टाप्—रात्रि
- **शर्या**—स्त्री॰—-—शृ + यत् + टाप्—अंगुली

- **शर्व्**—भ्वा॰ पर॰ <शर्वति>———–—जाना
- **शर्व्**—भ्वा॰ पर॰ <शर्वति>———–—चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, मार डालना
- **शर्वः**—पुं॰—–—शृ + व—शिव
- **शर्वः**—पुं॰—–—शृ + व—विष्णु
- **शर्वरः**—पुं॰—–—शॄ + ष्वरच्— कामदेव
- **शर्वरम्**—नपुं॰———–—अन्धकार
- **शर्वरी**—स्त्री॰—–—शॄ + वनिप्, ङीप्, वनोर च—रात
- **शर्वरी**—स्त्री॰—–—शॄ + वनिप्, ङीप्, वनोर च—हल्दी
- **शर्वरी**—स्त्री॰—–—शॄ + वनिप्, ङीप्, वनोर च—स्त्री
- **शर्वरीशः**—पुं॰—शर्वरी-ईशः—–—चन्द्रमा
- **शर्वाणी**—स्त्री॰—–—शर्व + ङीष्, <आनुक्>—शिव की पत्नी पार्वती
- **शर्शरीक**—वि॰—–—शॄ + ईकन्, द्वित्वादि—उपद्रवी, क्रूर
- **शर्शरीकः**—पुं॰———–—धूर्त, पाजी, दुर्जन
- **शल्**—भ्वा॰ आ॰< शलते>———–—हिलाना, हरकत देना, क्षुब्ध करना
- **शल्**—भ्वा॰ आ॰< शलते>———–—काँपना
- **शल्**—भ्वा॰ पर॰ <शलति>———–—जाना
- **शल्**—भ्वा॰ पर॰ <शलति>———–—तेज़ दौड़ना
- **शल्**—चुरा॰ आ॰ <शालयते>———–—प्रशंसा करना
- **शलः**—पुं॰—–—शल् + अच्— साँग, बर्छी
- **शलः**—पुं॰—–—शल् + अच्—मेख
- **शलः**—पुं॰—–—शल् + अच्—भृंगी नाम का शिव का एक गण
- **शलः**—पुं॰—–—शल् + अच्—ब्रह्मा
- **शलम्**—नपुं॰———–—साही का कांटा
- **शलकः**—पुं॰—–—शल् + कन्—मक्कड़, मकड़ा
- **शलङ्गः**—पुं॰—–—शल् + अङ्गच्—राजा, प्रभु
- **शलभः**—पुं॰—–—शल् + अभच्—टिड्डा, टिड्डी
- **शलभः**—पुं॰—–—शल् + अभच्—पतंगा

- **शललम्**—नपुं°—-—शल् + अलच्—साही का काटां
- **शलली**—स्त्री°———-—साही का काटां
- **शलली**—स्त्री°———-—छोटी साही
- **शलाका**—स्त्री°—-—शल् + आकः, टाप्—छोटी छड़ी, खूँटी, डण्डा, कील, टुकड़ा, पतला सीखचा
- **शलाका**—स्त्री°—-—शल् + आकः, टाप्—पेन्सिल (आँख में सुर्मा आंजने की) सलाई
- **शलाका**—स्त्री°—-—शल् + आकः, टाप्—बाण
- **शलाका**—स्त्री°—-—शल् + आकः, टाप्—साँग, नेज़ा
- **शलाका**—स्त्री°—-—शल् + आकः, टाप्—एक नोकदार शल्योपकरण (घाव की गहराई नापने के लिए)
- **शलाका**—स्त्री°—-—शल् + आकः, टाप्—छतरी की तीली
- **शलाका**—स्त्री°—-—शल् + आकः, टाप्—(हाथ पैर की अंगुलियों की जड़ की) हड्डी
- **शलाका**—स्त्री°—-—शल् + आकः, टाप्—अंकुर, फुनगी, कोंपल
- **शलाका**—स्त्री°—-—शल् + आकः, टाप्—रंग भरने की कूची
- **शलाका**—स्त्री°—-—शल् + आकः, टाप्—दाँत साफ करने की कूची, दाँत-कुरेदनी
- **शलाका**—स्त्री°—-—शल् + आकः, टाप्—साही
- **शलाका**—स्त्री°—-—शल् + आकः, टाप्—हाथी दाँत या हड्डी का बना जूआ खेलने का आयताकार (पासा) टुकड़ा
- **शलाकाधूर्तः**—पुं°—शलाका-धूर्तः—-—उचक्का, ठग
- **परिशलाकम्**—अव्य°—शलाका-परि—-—जूए में मनहूस पासा पड़ना
- **शलाटु**—वि°—-—शल् + आटु—अनपका
- **शलाटुः**—पुं°———-—कन्दविशेष
- **शलाभोलिः**—पुं°———-—ऊँट
- **शल्कम्**—नपुं°—-—शल् + कन—मछली का वल्कल या छिलका
- **शल्कम्**—नपुं°—-—शल् + कन—वल्कल, छाल (वृक्षों की)
- **शल्कम्**—नपुं°—-—शल् + कन—भाग, अंश, खण्ड
- **शल्कलम्**—नपुं°—-—शल् + कलच् —मछली का वल्कल या छिलका
- **शल्कलम्**—नपुं°—-—शल् + कलच् —वल्कल, छाल (वृक्षों की)
- **शल्कलम्**—नपुं°—-—शल् + कलच् —भाग, अंश, खण्ड
- **शल्कलिन्**—पुं°—-—शल्कन + इनि—मछली

- **शल्किन्**—पुं°—-—शल्क + इनि—मछली
- **शल्भ्**—भ्वा° आ°< शल्भते>—-—-—प्रशंसा करना
- **शल्मलिः**—स्त्री°—-—शल् + मलच् + इन् —रेशमी रूई का वृक्ष, सेमल
- **शल्मली**—स्त्री°—-—शल् + मलच् + इन् पक्षे ङीप्—रेशमी रूई का वृक्ष, सेमल
- **शल्यम्**—नपुं°—-—शल् + यत्—बर्छी, नेज़ा, सांग
- **शल्यम्**—नपुं°—-—शल् + यत्—बाण, तीर
- **शल्यम्**—नपुं°—-—शल् + यत्—काँटा, खपची
- **शल्यम्**—नपुं°—-—शल् + यत्—मेख, खूंटी, थूणी
- **शल्यम्**—नपुं°—-—शल् + यत्—शरीर में घुसा हुआ कोई पीड़ा कारक काँटा आदि
- **शल्यम्**—नपुं°—-—शल् + यत्—हृदयविदारक शोक या किसी तीक्ष्ण पीड़ा का कारण
- **शल्यम्**—नपुं°—-—शल् + यत्—हड्डी
- **शल्यम्**—नपुं°—-—शल् + यत्—कठिनाई, कष्ट
- **शल्यम्**—नपुं°—-—शल् + यत्—पाप, जुर्म
- **शल्यम्**—नपुं°—-—शल् + यत्—विष
- **शल्यः**—पुं°—-—-—साही, झाऊ चूहा
- **शल्यः**—पुं°—-—-—काँटेदार झाड़ी
- **शल्यः**—पुं°—-—-—शल्यचिकित्सा में खपचियों का उखेड़ना
- **शल्यः**—पुं°—-—-—बाड़, सीमा
- **शल्यः**—पुं°—-—-—एक प्रकार की मछली
- **शल्यः**—पुं°—-—-—मद्रदेश का राजा, पांडु की द्वितीय पत्नी माद्री का भाई, नकुल और सहदेव का मामा
- **शल्यारिः**—पुं°—शल्यम्-अरिः—-—युधिष्टिर का विशेषण
- **शल्याहरणम्**—नपुं°—शल्यम्-आहरणम्—-—कांटा या फांस आदि निकालना, शल्यशास्त्र का वह भाग जो शरीर से असंगत सामग्री को उखाड़ फेंकने से संबंध रखता है
- **शल्योद्धरणम्**—नपुं°—शल्यम्-उद्धरणम्—-—कांटा या फांस आदि निकालना, शल्यशास्त्र का वह भाग जो शरीर से असंगत सामग्री को उखाड़ फेंकने से संबंध रखता है
- **शल्योद्धारः**—पुं°—शल्यम्-उद्धारः—-—कांटा या फांस आदि निकालना, शल्यशास्त्र का वह भाग जो शरीर से असंगत सामग्री को उखाड़ फेंकने से संबंध रखता है

- **शल्यक्रिया**—स्त्री°—शल्यम्-क्रिया—-—कांटा या फांस आदि निकालना, शल्यशास्त्र का वह भाग जो शरीर से असंगत सामग्री को उखाड़ फेंकने से संबंध रखता है
- **शल्यशास्त्रम्**—नपुं°—शल्यम्-शास्त्रम्—-—कांटा या फांस आदि निकालना, शल्यशास्त्र का वह भाग जो शरीर से असंगत सामग्री को उखाड़ फेंकने से संबंध रखता है
- **शल्यकण्ठः**—पुं°—शल्यम्-कण्ठः—-—झाऊ चूहा
- **शल्यलोमन्**—नपुं°—शल्यम-लोमन्—-—साही का काँटा
- **शल्यहर्तृ**—पुं°—शल्यम्-हर्तृ—-—निरैया, निराने वाला
- **शल्यकः**—पुं°—-—शल्य + कन्—साँग, नेज़ा, सलाख़
- **शल्यकः**—पुं°—-—शल्य + कन्—खपची, फांस, कांटा
- **शल्यकः**—पुं°—-—शल्य + कन्—झाऊ, चूहा, साही
- **शल्लः**—पुं°—-—शल्ल् + अच्—मेंढक
- **शल्लम्**—पुं°—-—-—बक्कल, छाल
- **शल्लकः**—पुं°—-—शल्ल + कन्—वृक्ष, शोण वृक्ष
- **शल्लकम्**—नपुं°—-—-—बक्कल, छाल
- **शल्लकी**—स्त्री°—-—शल्लक + ङीष्—साही
- **शल्लकी**—स्त्री°—-—-—एक वृक्ष विशेष जो हा्थियों को बहुत प्रिय हैं
- **शल्लकीद्रवः**—पुं°—शल्लकी-द्रवः—-—धूप, लोबान
- **शल्वः**—पुं°—-—शल् + वन्—एक देश का नाम
- **शव्**—भ्वा° पर° <शवति>—-—-—जाना, पहुँचना
- **शव्**—भ्वा° पर° <शवति>—-—-—बदलना, परिवर्तन करना, रूपान्तर करना
- **शवः**—पुं°—-—शव् + अच्—लाश, मुर्दा शरीर
- **शवम्**—नपुं°—-—शव् + अच्—लाश, मुर्दा शरीर
- **शवम्**—नपुं°—-—-—जल
- **शवाच्छादनम्**—नपुं°—शव-आच्छादनम्—-—मृतक शरीर का आवरण, कफन
- **शवाश**—वि°—शव- आश—-—मुर्दा खाकर जीने वाला
- **शवकाम्यः**—पुं°—शव-काम्यः—-—कुत्ता
- **शवयानम्**—नपुं°—शव-यानम्—-—मुर्दा ढोने की गाड़ी, अरथी, एक प्रकार की पालकी जिसमें मृतक शरीर रख कर श्मशान भूमि में ले जाते हैं

- **शवरथः**—पुं°—शव-रथः—-—मुर्दा ढोने की गाड़ी, अरथी, एक प्रकार की पालकी जिसमें मृतक शरीर रख कर श्मशान भूमि में ले जाते हैं
- **शवर**—वि°—-—-—
- **शवल**—वि°—-—-—
- **शवसानः**—पुं°—-—शव + असानच्—यात्री
- **शवसानः**—पुं°—-—शव + असानच्—मार्ग, सड़क
- **शवसानम्**—नपुं°—-—-—क़बरिस्तान, शवाधिस्थान
- **शशः**—पुं°—-—शश् + अच्—ख़रगोश, खरहा
- **शशः**—पुं°—-—शश् + अच्—चन्द्रमा का कलंक (जो खरगोश की आकृति का समझा जाता है)
- **शशः**—पुं°—-—शश् + अच्—कामशास्त्र में वर्णित चार प्रकार के पुरुषों में से एक भेद
- **शशः**—पुं°—-—शश् + अच्—लोध्र वृक्ष
- **शशः**—पुं°—-—शश् + अच्—बोल नामक खुशबूदार गोंद
- **शशाङ्कः**—पुं°—शश-अङ्कः—-—चाँद
- **शशाङ्कः**—पुं°—शश-अङ्कः—-—कपूर
- **शशार्धमुख**—वि°—शश-अर्धमुख—-—अर्धचन्द्राकार सिर वाला (बाण आदि)
- **शशमूर्तिः**—पुं°—शश-मूर्तिः—-—चन्द्रमा का विशेषण
- **शशलेखा**—स्त्री°—शश-लेखा—-—चाँद की कला, चन्द्रकला
- **शशादः**—पुं°—शश-अदः—-—बाज़, श्येन
- **शशादः**—पुं°—शश-अदः—-—पुरंजय के पिता इक्ष्वाकु का एक पुत्र
- **शशादनः**—पुं°—शश-अदनः—-—बाज़, श्येन
- **शशोर्णम्**—नपुं°—शश-ऊर्णम्—-—ख़रगोश के बाल, खरहे की त्वचा
- **शशलोमम्**—नपुं°—शश-लोमम्—-—ख़रगोश के बाल, खरहे की त्वचा
- **शशधरः**—पुं°—शश-धरः—-—चन्द्रमा
- **शशधरः**—पुं°—शश-धरः—-—कपूर
- **शशमौलिः**—पुं°—शश-मौलिः—-—शिव का विशेषण
- **शशलुप्तकम्**—नपुं°—शश-लुप्तकम्—-—नखक्षत, नाखून का घाव
- **शशभृत्**—पुं°—शश-भृत्—-—चाँद
- **शशभृत्**—पुं°—शश-भृत्—-—शिव का विशेषण

- **शशलक्ष्मणः**—पुं°—शश-लक्ष्मणः——चाँद का विशेषण
- **शशलाञ्छनः**—पुं°—शश-लाञ्छनः——चन्द्रमा
- **शशलाञ्छनः**—पुं°—शश-लाञ्छनः——कपूर
- **शशबिन्दुः**—पुं°—शश-बिन्दुः——चाँद
- **शशबिन्दुः**—पुं°—शश-बिन्दुः——विष्णु का विशेषण
- **शशविन्दुः**—पुं°—शश-विन्दुः——चाँद
- **शशविन्दुः**—पुं°—शश-विन्दुः——विष्णु का विशेषण
- **शशविषाणम्**—नपुं°—शश-विषाणम्——खरगोश का सींग (असंभव बात का संकेत करने के लिए प्रयुक्त, नितान्त असंभावना)
- **शशशृङ्गम्**—नपुं°—शश-शृङ्गम्——खरगोश का सींग (असंभव बात का संकेत करने के लिए प्रयुक्त, नितान्त असंभावना)
- **शशस्थली**—स्त्री°—शश-स्थली——गंगा यमुना के बीच की भूमि, दोआबा
- **शशकः**—पुं°——शश + कन्—खरगोश, खरहा
- **शशकः**—पुं°——शश + कन्—शश
- **शशिन्**—पुं°——शशोऽस्त्यस्य इनि—चाँद
- **शशिन्**—पुं°——शशोऽस्त्यस्य इनि—कपूर
- **शशीशः**—पुं°—शशिन्-ईशः——शिव का विशेषण
- **शशिकला**—स्त्री°—शशिन्-कला——चन्द्रमा की एक लेखा
- **शशिकान्तः**—पुं°—शशिन्-कान्तः——चन्द्रकांतमणि
- **शशिकान्तम्**—नपुं°—शशिन्-कान्तम्——कमल
- **शशिकोटिः**—पुं°—शशिन्-कोटिः——चन्द्रशृङ्ग
- **शशिग्रहः**—पुं°—शशिन्-ग्रहः——चन्द्रमा का ग्रहण
- **शशिजः**—पुं°—शशिन्-जः——बुध का विशेषण (चन्द्रमा का पुत्र)
- **शशिप्रभ**—वि°—शशिन्-प्रभ——चन्द्रमा की कांति वाला, चाँद जैसा उज्ज्वल और श्वेत
- **शशिप्रभम्**—नपुं°—शशिन्-प्रभम्——कुमुदिनी
- **शशिप्रभा**—स्त्री°—शशिन्-प्रभा——चाँद का प्रकाश
- **शशिभूषणः**—पुं°—शशिन्-भूषणः——शिव के विशेषण
- **शशिभृत्**—पुं°—शशिन्-भृत्——शिव के विशेषण
- **शशिमौलिः**—पुं°—शशिन्-मौलिः——शिव के विशेषण

- **शशिशेखरः**—पुं°—शशिन्-शेखरः—-—शिव के विशेषण
- **शशिलेखा**—स्त्री°—शशिन्-लेखा—-—चन्द्रमा की कला
- **शश्वत्**—अव्य°—-—शश् + वत्, वा—लगातार, अनादि काल से, सदा के लिए
- **शश्वत्**—अव्य°—-—शश् + वत्, वा—सतत, बार-बार, सदैव, बहुशः, पुनः पुनः
- **शश्वत्**—अव्य°—-—शश् + वत्, वा—समास में प्रयुक्त होने पर 'शश्वत्' का अर्थ है 'टिकाऊ, नित्य' यथा शश्वच्छान्ति अर्थात् नित्य शान्ति
- **शष्कुली**—स्त्री°—-—शष् + कुलच् + ङीष्—कान का विवर, श्रवण-मार्ग
- **शष्कुली**—स्त्री°—-—शष् + कुलच् + ङीष्—एक प्रकार की पकी हुई रोटी
- **शष्कुली**—स्त्री°—-—शष् + कुलच् + ङीष्—चावल की कांजी
- **शष्कुली**—स्त्री°—-—शष् + कुलच् + ङीष्—कान का एक रोग
- **शस्कुली**—स्त्री°—-—शस् + कुलच् + ङीष्—कान का विवर, श्रवण-मार्ग
- **शस्कुली**—स्त्री°—-—शस् + कुलच् + ङीष्—एक प्रकार की पकी हुई रोटी
- **शस्कुली**—स्त्री°—-—शस् + कुलच् + ङीष्—चावल की कांजी
- **शस्कुली**—स्त्री°—-—शस् + कुलच् + ङीष्—कान का एक रोग
- **शष्पः**—पुं°—-—शष् + पक्—प्रतिभाक्षय, औसान का अभाव
- **शस्पा**—स्त्री°—-—-—प्रतिभाक्षय, औसान का अभाव
- **शष्पम्**—स्त्री°—-—-—नया घास
- **शस्**—भ्वा° पर° <शसति>—-—-—काटना, मार डालना, नष्ट करना
- **विशस्**—भ्वा° पर°—वि-शस्—-—काट डालना, मार डालना
- **शस्**—अदा° पर° <शस्ति>—-—-—सोना
- **शसनम्**—नपुं°—-—शस् + ल्युट्—घायल करना, मार डालना
- **शसनम्**—नपुं°—-—शस् + ल्युट्—बलि, मेध, (यज्ञ में पशु का) ।
- **शस्त**—भू° क° कृ°—-—शंस् + क्त—प्रशंसा किया गया, स्तुति किया गया
- **शस्त**—भू° क° कृ°—-—शंस् + क्त—शुभ आनन्द प्रद
- **शस्त**—भू° क° कृ°—-—शंस् + क्त—यथार्थ, सर्वोत्तम
- **शस्त**—भू° क° कृ°—-—शंस् + क्त—क्षतिग्रस्त, घायल
- **शस्त**—भू° क° कृ°—-—शंस् + क्त—वध किया हुआ
- **शस्तम्**—नपुं°—-—-—आनन्द, कल्याण

- **शस्तम्**—नपुं°———-—श्रेष्ठता, मांगलिकता
- **शस्तम्**—नपुं°———-—शरीर
- **शस्तम्**—नपुं°———-—अंगुलित्राण
- **शस्तिः**—स्त्री°—-—शंस् + क्तिन्—प्रशंसा, स्तुति
- **शस्त्रम्**—नपुं°—-—शस् + ष्ट्रन्—हथियार, आयुध
- **शस्त्रम्**—नपुं°—-—शस् + ष्ट्रन्—उपकरण, औज़ार
- **शस्त्रम्**—नपुं°—-—शस् + ष्ट्रन्—लोहा
- **शस्त्रम्**—नपुं°—-—शस् + ष्ट्रन्—इस्पात
- **शस्त्रम्**—नपुं°—-—शस् + ष्ट्रन्—स्तोत्र
- **शस्त्राभ्यासः**— पुं°—शस्त्रम्-अभ्यासः—-—शस्त्रास्त्रों के चलाने का अभ्यास, सैनिक व्यायाम
- **शस्त्रायसम्**—नपुं°—शस्त्रम्-अयसम्—-—इस्पात
- **शस्त्रायसम्**—नपुं°—शस्त्रम्-अयसम्—-—लोहा
- **शस्त्रास्त्रम्**—नपुं°—शस्त्रम्-अस्त्रम्—-—प्रहार करने और फेंक कर मारने वाले हथियार, आयुध और अस्त्र
- **शस्त्रास्त्रम्**—नपुं°—शस्त्रम्-अस्त्रम्—-—आयुध या शस्त्र
- **शस्त्राजीवः**— पुं°—शस्त्रम्-आजीवः—-—पेशेवर सिपाही
- **शस्त्रोपजीविन्**— पुं°—शस्त्रम्-उपजीविन्—-—पेशेवर सिपाही
- **शस्त्रोद्यमः**— पुं°—शस्त्रम्-उद्यमः—-—(प्रहार करने के लिए) शस्त्र उठाना
- **शस्त्रोपकरणम्**—नपुं°—शस्त्रम्-उपकरणम्—-—युद्ध के उपकरण या शस्त्रास्त्र, सैनिक सामग्री
- **शस्त्रकारः**— पुं°—शस्त्रम्-कारः—-—शस्त्रनिर्माता
- **शस्त्रकोषः**— पुं°—शस्त्रम्-कोषः—-—किसी हथियार का म्यान, आवरण
- **शस्त्रग्राहिन्**—वि°—शस्त्रम्-ग्राहिन्—-—(युद्ध के लिए) शस्त्रास्त्र धारण करने वाला
- **शस्त्रजीविन्**—पुं°—शस्त्रम्-जीविन्—-—शस्त्र प्रयोग के द्वारा जीवन यापन करने वाला, व्यावसायिक सैनिक
- **शस्त्रवृत्ति**—पुं°—शस्त्रम्-वृत्ति—-—शस्त्र प्रयोग के द्वारा जीवन यापन करने वाला, व्यावसायिक सैनिक
- **शस्त्रदेवता**—स्त्री°—शस्त्रम्-देवता—-—आयुधों की अधिष्ठात्री देवता
- **शस्त्रदेवता**—स्त्री°—शस्त्रम्-देवता—-—देवरूपकृत हथियार
- **शस्त्रधरः**—पुं°—शस्त्रम्-धरः—-—शस्त्रभृत्
- **शस्त्रन्यासः**—पुं°—शस्त्रम्-न्यासः—-—हथियार डाल देना

- **शस्त्रपाणि**—वि°—शस्त्रम्-पाणि—-—शस्त्र धारण करने वाला, शस्त्रों से सुसज्जित
- **शस्त्रपाणि**—पुं°—शस्त्रम्-पाणि—-—सशस्त्र योद्धा
- **शस्त्रपूत**—वि°—शस्त्रम्-पूत—-—`शस्त्रों द्वारा पवित्रीकृत' युद्धक्षेत्र में मारे जाने से मुक्त
- **शस्त्रप्रहारः**—पुं°—शस्त्रम्-प्रहारः—-—हथियार से किया गया आघात
- **शस्त्रभृत्**—पुं°—शस्त्रम्-भृत्—-—सैनिक, योद्धा
- **शस्त्रमार्जः**—पुं°—शस्त्रम्-मार्जः—-—हथियार साफ़ करने वाला, शस्त्रनिर्माता, सिकलीगर
- **शस्त्रविद्या**—स्त्री°—शस्त्रम्-विद्या—-—शस्त्र विज्ञान
- **शस्त्रशास्त्रम्**—नपुं°—शस्त्रम्-शास्त्रम्—-—शस्त्र विज्ञान
- **शस्त्रसंहतिः**—स्त्री°—शस्त्रम्-संहतिः—-—शस्त्रसंग्रह
- **शस्त्रसंहतिः**—पुं°—शस्त्रम्-संहतिः—-—आयुधागार
- **शस्त्रसंपातः**—पुं°—शस्त्रम्-संपातः—-—हथियारों का अकस्मात् गिरना
- **शस्त्रहत**—वि°—शस्त्रम्-हत—-—हथियार से मारा गया
- **शस्त्रहस्त**—वि°—शस्त्रम्-हस्त—-—शस्त्रधर
- **शस्त्रहस्तः**—पुं°—शस्त्रम्-हस्तः—-—शस्त्रधारी मनुष्य।
- **शस्त्रकम्**—नपुं°—-—शस्त्र + कन्—इस्पात
- **शस्त्रकम्**—नपुं°—-—शस्त्र + कन्—लोहा
- **शस्त्रिका**—स्त्री°—-—शस्त्रक + टाप्, इत्वम्—चाकू
- **शस्त्रिन्**—वि°—-—शस्त्र + इनि—शस्त्रधारी, हथियारबंद, शस्त्रास्त्र से सुसज्जित
- **शस्त्री**—स्त्री°—-—शस्त्र + ङीष्—चाकू
- **शस्यम्**—नपुं°—-—शस् + यत्—अन्न, धान्य
- **शस्यम्**—नपुं°—-—शस् + यत्—किसी वृक्ष या पौधे का फल या उपज
- **शस्यम्**—नपुं°—-—शस् + यत्—गुण
- **शस्यक्षेत्रम्**—नपुं°—शस्यम्-क्षेत्रम्—-—अन्न का खेत
- **शस्यभक्षक**—वि°—शस्यम्-भक्षक—-—अन्नहारी, अनाज खाने वाला
- **शस्यमञ्जरी**—स्त्री°—शस्यम्-मञ्जरी—-—अनाज की बाल
- **शस्यमालिन्**—वि°—शस्यम्-मालिन्—-—जिसका खेत हरा भरा खड़ा हो
- **शस्यशालिन्**—वि°—शस्यम्-शालिन्—-—अन्न या धान्य से परिपूर्ण

- **शस्यसम्पन्न**—वि°—शस्यम्-सम्पन्न—-—अन्न या धान्य से परिपूर्ण
- **शस्यशूकम्**—नपुं°—शस्यम्-शूकम्—-—अनाज का सिर्टा
- **शस्यसम्पद्**—स्त्री°—शस्यम्-सम्पद्—-—अन्न या धान्य से अनाज की बहुतायत
- **शस्यसम्बरः**—पुं°—शस्यम्-सम्बरः—-—शाल का वृक्ष, साल का पेड़
- **शस्यसम्वरः**—पुं°—शस्यम्-सम्वरः—-—शाल का वृक्ष, साल का पेड़
